- रेल किराए की गणना का तरीका हमारा व्यापारिक रहस्य, नहीं कर सकते आम
- 12

- ट्रंप की नई धमकी से भारतीय निर्यातक चिंतित
- 12

- रूस का यूक्रेन के विद्युत ग्रिड पर बड़ा हमला, चार लोगों की मौत
- 13

- न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे ही मैच में सीरीज को जीतना चाहेगी भारतीय टीम
- 14

आज का मौसम

16.0° अधिकतम तापमान

5.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 07.09

सूर्यास्त 05.39

अमृत विचार

कानपुर

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

माघ कृष्ण पक्ष एकादशी 05:53 उपरांत द्वादशी विक्रम संवत 2082

बुधवार, 14 जनवरी 2026, वर्ष 4, अंक 145, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 5 रुपये

लोकसेवकों पर मुकदमा... भ्रष्टाचार कानून पर सुप्रीम कोर्ट के जज बंटे, सुनाया खंडित आदेश

भ्रष्टाचार के मामलों की जांच शुरू करने से पहले अनुमति लेने के मामले में हुई सुप्रीम सुनवाई

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने लोकसेवकों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों की जांच शुरू करने से पहले अनुमति लेने से संबंधित, भ्रष्टाचार रोधी कानून की 2018 की धारा की संवैधानिक वैधता पर मंगलवार को खंडित निर्णय सुनाया। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना ने कहा कि भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17ए असंवैधानिक है और इसे रद्द किया जाना चाहिए जबकि न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन ने धारा को संवैधानिक मानते हुए ईमानदार अधिकारियों की सुरक्षा की जरूरत पर जोर दिया।

साल 2018 में जोड़ी गई भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 17ए के तहत सक्षम प्राधिकारी की अनुमति के बिना किसी लोकसेवक पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। कोर्ट ने गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) 'सेंटर फॉर पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन' की जनहित याचिका (पीआईएल) पर यह निर्णय सुनाया है, जिसमें धारा 17ए की वैधता को चुनौती दी गई थी। न्यायमूर्ति नागरत्ना ने कहा कि पूर्वानुमति की आवश्यकता भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के विरुद्ध है इससे जांच में रुकावट आती है और भ्रष्ट अधिकारियों को बचने का मौका मिल जाता है। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना ने कहा, धारा 17ए असंवैधानिक है और इसे रद्द किया जाना चाहिए। जांच शुरू करने से पहले किसी तरह की पूर्व अनुमति लेने की जरूरत नहीं है। पूर्व मंजूरी की शर्त अधिनियम के उद्देश्य के खिलाफ है। इससे जांच में रुकावट आ सकती है और ईमानदार अधिकारियों के बजाय भ्रष्ट लोकसेवकों को संरक्षण मिलता है। वहीं, न्यायमूर्ति विश्वनाथन ने कहा, धारा 17ए संवैधानिक रूप से वैध है, बशर्ते मंजूरी देने का फैसला लोकपाल या राज्य का लोकायुक्त करे।

- जस्टिस नागरत्ना बोलीं- धारा 17ए असंवैधानिक इसलिए इसे रद्द किया जाना चाहिए
- जस्टिस विश्वनाथन ने धारा को संवैधानिक मानते हुए ईमानदार अधिकारियों की सुरक्षा पर दिया जोर

प्रधान न्यायाधीश के समक्ष रखा जाएगा मामला

अब यह मामला भारत के प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत के समक्ष रखा जाएगा, ताकि एक बड़ी पीठ का गठन कर इस पर अंतिम निर्णय लिया जा सके। पीठ ने कहा, हमारे अलग-अलग मतों को देखते हुए रजिस्ट्री को निर्देश दिया जाता है कि इस मामले को प्रधान न्यायाधीश के समक्ष रखा जाए, ताकि उपयुक्त पीठ का गठन करके इससे जुड़े मुद्दों पर नए सिरे से विचार किया जा सके। एनजीओ की ओर से पेश हुए अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने दलील दी कि यह प्रावधान भ्रष्टाचार विरोधी कानून को कमजोर करता है, क्योंकि सरकार से अक्सर मंजूरी नहीं मिलती, जबकि वही इस कानून के तहत सक्षम प्राधिकारी है।

कुत्ते के काटने पर भारी मुआवजा होगा तय

- शीर्ष कोर्ट ने कहा- राज्यों को देंगे निर्देश, जो आवारा कुत्तों को लेकर चिंतित, वे अपने घर ले जाएं

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने पिछले पांच वर्षों में आवारा पशुओं से संबंधित नियमों के क्रियान्वयन के लिए कोई कदम नहीं उठाए जाने पर चिंता व्यक्त की और मंगलवार को कहा कि वह कुत्ते के काटने की घटनाओं के लिए राज्यों को भारी मुआवजा देने का आदेश देगा। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, न्यायमूर्ति संदीप मेहता और न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया की पीठ ने कहा कि कुत्ते के काटने की घटनाओं के लिए कुत्ता प्रेमियों और उन्हें खाना खिलाने वालों को भी जिम्मेदार और जवाबदेह ठहराया जाएगा। न्यायमूर्ति नाथ ने कहा, कुत्तों के काटने से बच्चों या बुजुर्गों की मृत्यु या चोट के हर मामले के लिए हम राज्य सरकारों से भारी मुआवजा देने की मांग करेंगे क्योंकि उन्होंने पिछले पांच वर्षों में नियमों के कार्यान्वयन के संबंध में कुछ नहीं किया है। साथ ही, इन आवारा कुत्तों को खाना खिलाने वालों की भी जिम्मेदारी और जवाबदेही तय की जाएगी। अगर आपको इन जानवरों से इतना प्यार है तो आप उन्हें अपने घर क्यों नहीं ले जाते? ये कुत्ते इधर-उधर क्यों घूमते हैं, लोगों को काटते हैं और डराते हैं? न्यायमूर्ति मेहता ने न्यायमूर्ति नाथ के विचारों से सहमति जताते हुए कहा, जब कुत्ते नौ साल के बच्चे पर हमला करते हैं तो किसे जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए? वह संगठन जो उन्हें खाना खिला रहा है, उसे? आप चाहते हैं कि हम इस समस्या से आंखें मूंद लें। उच्चतम न्यालय सात नवंबर, 2025 के अपने उस आदेश में संशोधन के अनुरोध वाली कई याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा था, जिसमें अधिकारियों को सार्वजनिक स्थानों और सड़कों से इन आवारा जानवरों को हटाने का निर्देश दिया गया था। न्यायालय ने कहा कि सबसे अजीब बात यह है कि गुजरात के एक वकील को एक पार्क में कुत्ते ने काट लिया और जब नगर निगम के अधिकारी उस जानवर को पकड़ने गए, तो खुद को कुत्ता प्रेमी बताने वाले वकीलों ने नगर निगम के अधिकारियों पर हमला कर दिया। शीर्ष अदालत ने यह भी खेद जताया कि पिछले चार दिनों से वह इस मुद्दे पर दलीलें सुन रही है, लेकिन एनजीओ के हस्तक्षेप के कारण वह मामलों में आगे नहीं बढ़ पाई और केंद्र तथा राज्य सरकारों के पक्ष को भी नहीं सुन सकी।

ईरान से व्यापार करने वालों पर ट्रंप ने थोपा 25% टैरिफ

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन, एजेंसी

- भारत पर पड़ सकता है असर, चाबहार बंदरगाह पर है हिस्सेदारी

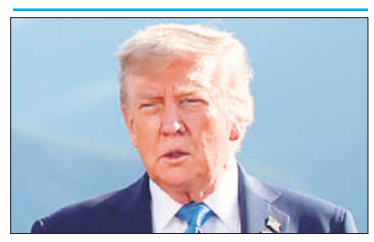

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने घोषणा की है कि ईरान के साथ व्यापार करने वाले किसी भी देश को अमेरिका के साथ अपने व्यापार पर 25 प्रतिशत शुल्क का भुगतान करना होगा। इस कदम का भारत, चीन और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) जैसे ईरान के प्रमुख व्यापारिक भागीदारों पर असर पड़ सकता है। चाबहार पोर्ट को लेकर भी असर देखने को मिल सकता है। ट्रंप ने सोमवार को ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट में यह घोषणा की।

ट्रंप ने कहा है कि ईरान अब सीमाएं लांघ रहा है और इसी वजह से उन्हें और उनकी राष्ट्रीय सुरक्षा टीम को कठोर विकल्पों पर विचार करना पड़ रहा है। ट्रंप की इस घोषणा का असर भारत पर पड़ सकता है जो हाल के वर्षों में ईरान के पांच सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक रहा है। अमेरिका ने पहले ही भारत पर 50 प्रतिशत शुल्क लगा दिया है, जो दुनिया के किसी भी देश पर लगाए गए सबसे अधिक शुल्क में से एक है। इसमें भारत द्वारा रूसी तेल की खरीद पर 25 प्रतिशत शुल्क भी शामिल है। तेहरान स्थित भारतीय दूतावास के अनुसार, ईरान को भारत के प्रमुख निर्यातों में चावल, चाय, चीनी, दवाइयां, कृत्रिम फाइबर, विद्युत मशीनरी और कृत्रिम आभूषण शामिल हैं जबकि ईरान से भारत के प्रमुख आयातों में सूखे मेवे, अकार्बनिक/कार्बनिक रसायन और कांच के बर्तन शामिल हैं। ऑनलाइन डेटा विजुअलाइजेशन और वितरण मंच 'ऑब्जर्वेटरी ऑफ इकोनॉमिक कॉम्प्लेक्सिटी' (ओईसी) के अनुसार, 2023 में भारत से ईरान को निर्यात कुल 1.19 अरब डॉलर था जबकि भारत में आयात कुल 1.02 अरब डॉलर का हुआ था। तेहरान स्थित भारतीय दूतावास ने कहा, भारत और ईरान के बीच सदियों पुराना संबंध है। समकालीन संबंध इन ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंधों की मजबूती पर आधारित हैं और उच्च स्तरीय आदान-प्रदान, वाणिज्यिक एवं संपर्क सहयोग, सांस्कृतिक और मजबूत जन-संबंधों के माध्यम से लगातार मजबूत हो रहे हैं। भारत-ईरान संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू चाबहार बंदरगाह का संयुक्त विकास है।

ग्रीनलैंड पर कब्जे का बिल पेश 51वें राज्य का अधिकार मिलेगा

वाशिंगटन। ग्रीनलैंड को अमेरिका का 51वां राज्य बनाने के लिए अमरीकी कांग्रेस में एक विधेयक अमेरिकी संसद में पेश किया है। विधेयक के बताए गए लक्ष्यों में ग्रीनलैंड के विलय और उसके बाद उसे राज्य का दर्जा देना शामिल है।

ब्रीफ न्यूज

महादेव एप : रवि उप्पल की दुबई स्थित संपत्ति समेत नई संपत्तियां कुर्क

नई दिल्ली। ईडी ने कहा कि उसने अवैध महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी एप मामले में फरार प्रमुख प्रवर्तकों में से एक रवि उप्पल सहित विभिन्न आरोपियों की लगभग 21 करोड़ की नई संपत्ति कुर्क की है। इस मामले में छत्तीसगढ़ के कई बड़े राजनीतिक नेताओं और नौकरशाहों की कथित संलिप्तता बताई जाती है। पीएमएलए के तहत 10 जनवरी को एक अंतरिम आदेश जारी किया गया। पिछले हफ्ते, ईडी ने इसी तरह का एक आदेश जारी कर महादेव ऑनलाइन बुक नामक एप के एक अन्य मुख्य प्रवर्तक सौरभ चंद्राकर तथा अन्य लोगों की संपत्तियों को कुर्क करने का आदेश दिया था।

देश में डिजिटल भुगतान के विस्तार की बहुत अधिक गुंजाइश : शंकर

नई दिल्ली। आरबीआई के डिप्टी गवर्नर टी रबी शंकर ने मंगलवार को कहा कि देश में डिजिटल भुगतान के विस्तार की बहुत अधिक गुंजाइश हैं। यूपीआई में अपने मौजूदा 40 करोड़ के आधार से दोगुने से अधिक होकर 100 करोड़ उपयोगकर्ताओं तक पहुंचने की क्षमता है। दुनिया के कुल खुदरा भुगतान लेनदेन का लगभग 50 प्रतिशत भारत में होता है, लेकिन इसके बावजूद प्रति व्यक्ति डिजिटल लेनदेन की संख्या के मामले में भारत को अभी कई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की बराबरी करनी है।

पाकिस्तान के हर दुस्साहस का देंगे जवाब: सेना प्रमुख

नई दिल्ली, एजेंसी

- कहा- ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है, एलओसी पर हालात स्थिर

सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने मंगलवार को पाकिस्तान को कड़ा संदेश देते हुए कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अब भी जारी है और दुश्मन के किसी भी दुस्साहस से माकूल तरीके से निपटा जाएगा। सेना प्रमुख ने कहा कि चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर हालात स्थिर हैं, लेकिन इस पर लगातार नजर रखने की जरूरत है।

ऑपरेशन सिंदूर के अलग-अलग पहलुओं के बारे में विस्तार से बात करते हुए जनरल द्विवेदी ने कहा कि इससे रणनीतिक सोच को फिर से तैयार करने में मदद मिली, क्योंकि भारतीय सेना ने आतंकी ढांचे को खत्म करने और इस्लामाबाद की 'लंबे समय से चली आ रही परमाणु बयानबाजी' को धता बताने के लिए अंदर तक हमला किया। उन्होंने कहा, जैसा कि आप जानते होंगे, ऑपरेशन सिंदूर अब भी जारी है, और भविष्य में किसी भी दुस्साहस का दृढ़ता से जवाब दिया जाएगा। जनरल द्विवेदी ने कहा कि तीनों सेनाओं के तालमेल को दिखाने वाला यह अभियान सीमापार आतंकवाद के लिए भारत का सोचा-समझा और मजबूत जवाब था, जो तैयारी, सटीकता और रणनीतिक स्पष्टता दिखाता है। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय सेना ने अपने सैनिकों को इकट्ठा कर लिया था और वह जमीनी हमलों के लिए तैयार थी। जनरल द्विवेदी ने कहा, उत्तरी मोर्चे पर हालात स्थिर हैं, लेकिन लगातार नजर रखने की जरूरत है।

चीन सीमा पर सतर्कता जरूरी, शक्सगाम घाटी में निर्माण कार्य अवैध

नई दिल्ली। सेना प्रमुख ने कहा है कि उत्तरी सीमा से लगती वास्तविक नियंत्रण रेखा पर स्थिति स्थिर बनी हुई है लेकिन निरंतर सतर्कता बनाए रखने की जरूरत है और वहां तैनात सैनिकों की संख्या में कमी विशेषज्ञ तथा कार्य समूहों के निर्देश के आधार पर लिया जाएगा। उन्होंने पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में शक्सगाम घाटी में चीन के निर्माण पर विरोध जताते हुए कहा कि चीन और पाकिस्तान के बीच 1963 के समझौते को भारत ने कभी नहीं माना और यह गैर कानूनी है।

रुद्राक्ष से बनाया शिवलिंग

प्रयागराज : माघ मेले में शिवयोगी मौनी महाराज द्वारा 5 करोड़ 51 लाख रुद्राक्षों से 11 फीट ऊंचे भव्य शिवलिंग का निर्माण किया गया है। मकर संक्रांति से शुरू होने वाले विशेष अनुष्ठान में राष्ट्र रक्षा, आतंकवाद विनाश और काशी-मथुरा में भव्य मंदिर निर्माण का संकल्प लिया जाएगा। ● एजेंसी

वंदे भारत स्लीपर में नहीं होगी आरएसी, न्यूनतम किराया 400

नई दिल्ली, एजेंसी

- रेलवे बोर्ड ने एक परिपत्र में दी यह जानकारी

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन में आरएसी या आंशिक रूप से कन्फर्म टिकटों का कोई प्रावधान नहीं होगा और न्यूनतम 400 किलोमीटर की दूरी के लिए शुल्क लगेगा। रेलवे बोर्ड ने एक परिपत्र में यह जानकारी दी।

वंदे भारत ट्रेन के पहले शयनयान संस्करण को प्रधानमंत्री मोदी द्वारा 17 जनवरी को गुवाहाटी-कोलकाता मार्ग पर हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जाना है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने एक जनवरी, 2026 को दोनों स्टेशनों के बीच एसी 1, एसी 2 और एसी 3 - तीनों श्रेणियों के लिए संभावित किरायों की घोषणा की थी। एक यात्री को एसी 1, एसी 2 और एसी 3 श्रेणियों में क्रमशः 1,520 रुपये, 1,240 रुपये और 960 रुपये का भुगतान करना होगा, चाहे यात्रा की दूरी एक किमी से 400 किमी के बीच कितनी भी हो। परिपत्र के अनुसार, 400 किलोमीटर से अधिक दूरी के लिए, शुल्क की गणना प्रति किलोमीटर के आधार पर की जाएगी, जिसमें एसी 1 के लिए 3.20 रुपये, एसी 2 के लिए 3.10 रुपये और एसी 3 के लिए 2.40 रुपये होंगे। बोर्ड के परिपत्र में कहा गया, लागू होने पर माल एवं सेवा कर अलग से लगाया जाएगा।

एएसपी अनुज चौधरी सहित 20 कर्मियों पर एफआईआर के आदेश

कार्यालय संवाददाता,संभल

अमृत विचार : संभल में जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान 24 नवंबर 2024 को हुई हिंसा में गोली लगने से घायल एक युवक के मामले में अदालत ने तत्कालीन सीओ अनुज चौधरी व कोतवाल सहित 15-20 पुलिसकर्मियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने के आदेश दिए हैं।

एसपी केके विश्नोई ने कहा है कि पुलिस मुकदमा दर्ज नहीं करेगी बल्कि कोर्ट में अपील करेगी। चौधरी वर्तमान में फिरोजाबाद में अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण हैं। नखासा थाना क्षेत्र के मोहल्ला खग्गू सराय निवासी यामीन ने 6 फरवरी 2025 को सीजेएम की कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया था कि उसका बेटा आलम 24 नवंबर को सुबह 8:45 बजे जामा मस्जिद के नजदीक पहुंचा तो वहां भीड़ जमा थी। पुलिस क्षेत्राधिकारी संभल अनुज चौधरी और इंस्पेक्टर अनुज तोमर व अन्य कर्मियों ने अचानक भीड़ पर गोलियां चला दी शुरू कर दीं। आलम जान बचाने के लिए भागा तो दो गोली पीठ में व एक हाथ में लगी। संभल में डॉक्टरों ने मना कर दिया तो मुरादाबाद व अलीगढ़ लेकर गया। वहां भी भर्ती नहीं किया तब मेरठ में इलाज कराया। पुलिस ने कोर्ट को सौंपी अपनी जांच रिपोर्ट में कहा था कि इस मामले में थाने पर कोई मुकदमा दर्ज नहीं हुआ है। साथ ही आलम का इलाज करने वाले डॉक्टर के बयान व अन्य तथ्य भी कोर्ट में रखे थे। बहरहाल कोर्ट ने आदेश दिया कि प्रार्थना पत्र अंतर्गत धारा 1734 बीएस से स्वीकार किया जाता है। थाना अध्यक्ष संभल को आदेशित किया कि मामला पंजीकृत कर विवेचना कराई जाए। सूचना 7 दिनों के भीतर प्रस्तुत करें।

संभल हिंसा मामला

- हिंसा के दौरान घायल युवक के पिता के प्रार्थना पत्र पर कोर्ट ने जारी किया आदेश
- एसपी ने कहा पुलिस मुकदमा दर्ज नहीं करेगी बल्कि कोर्ट में करेगी अपील

> संभल हिंसा के मामले में न्यायिक जांच पहले ही हो चुकी है। जिन पुलिसकर्मियों के खिलाफ कोर्ट ने आदेश किया है उनकी जांच पूरी हो चुकी है। इसलिए हम इस मामले में मुकदमा दर्ज नहीं करेंगे और इस आदेश के खिलाफ कोर्ट में अपील करेंगे।
> -कृष्ण कुमार विश्नोई, पुलिस अधीक्षक संभल

ब्लिंकिट ने 10 मिनट में डिलीवरी का दावा हटाया

नई दिल्ली, एजेंसी

- स्विगी और जेप्टो भी कर सकते हैं अनुसरण हड़ताल और सरकार की दखल के बाद फैसला

इटर्नल के स्वामित्व वाली इकाई ब्लिंकिट ने डिलीवरी कर्मियों के कल्याण से जुड़ी बढ़ती चिंताओं के बीच सभी मंच से अपना '10 मिनट में' डिलीवरी का दावा हटा लिया है। स्विगी और जेप्टो जैसे अन्य 'क्विक कॉमर्स' मंच भी इस कदम का अनुसरण कर सकते हैं।

यह बदलाव केंद्रीय श्रम मंत्रालय के हस्तक्षेप के बाद देखा जा रहा है, जो इतनी कठिन समय सीमा को पूरा करने की कोशिश करने वाले डिलीवरी कर्मियों के कल्याण को लेकर चिंतित था। श्रम मंत्रालय ने इस संबंध में क्विक कॉमर्स मंचों के साथ चर्चा की, ताकि गिग कर्मियों के लिए बेहतर सुरक्षा और कामकाजी परिस्थितियां सुनिश्चित की जा सकें। दस मिनट में डिलीवरी के वादे के कारण वर्ष 2025 की पूर्व संध्या पर गिग कर्मियों ने देशव्यापी हड़ताल की थी, जिसने कर्मचारियों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और आय की ओर ध्यान आकर्षित किया। जेप्टो, इंस्टामार्ट और बिगबास्केट के लिए 10 मिनट में डिलीवरी की ब्रांडिंग अभी भी गूगल प्ले स्टोर और आईओएस ऐप स्टोर पर दिखाई दे रही है, लेकिन ब्लिंकिट के लिए ऐसी कोई ब्रांडिंग अब वहां मौजूद नहीं है।

समीक्षा मुख्यमंत्री ने कहा- इंटेंट, टेक्नोलॉजी और अकाउंटेबिलिटी के समन्वय से मिले ठोस नतीजे

प्रगति नए भारत की कार्यसंस्कृति का सशक्त उदाहरण : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- योगी बोले-मोदी के प्रगति मॉडल से यूपी बना देश का इंफ्रास्ट्रक्चर ग्रोथ इंजन

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रो-एक्टिव गवर्नेंस एंड टाइमली इम्प्लीमेंटेशन (प्रगति) केवल बड़ी इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं की समीक्षा का मंच नहीं, बल्कि नए भारत की नई कार्य संस्कृति का सशक्त उदाहरण है। उन्होंने कहा कि यह मॉडल उस प्रशासनिक सोच को दर्शाता है, जिसकी नींव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रखी। जिसे वर्ष 2014 के बाद राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती मिली और भाजपा सरकार आने के बाद देश में यूपी इंफ्रास्ट्रक्चर ग्रोथ का इंजन बना।

योगी ने मंगलवार को गोरखपुर रवाना होने से पहले पत्रकारों से खास बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 'प्रगति' ने यह सिद्ध किया है कि जब इंटेंट, टेक्नोलॉजी और अकाउंटेबिलिटी एक साथ आती हैं, तो आउटकम स्वतः सुनिश्चित हो जाते हैं। डिजिटल गवर्नेंस और कोऑपरेटिव फेडरलिज्म को मजबूती देते हुए प्रगति एक ऐसा प्लेटफॉर्म बना है, जहां अंतर-मंत्रालयीय और अंतर-विभागीय समन्वय से जटिल समस्याओं का समयबद्ध समाधान संभव हुआ है। प्रगति मॉडल की अवधारणा वर्ष 2003 में गुजरात में 'स्वागत' (स्टेट वाइड अटेंशन ऑन ग्रीवांसेज बाई एप्लिकेशन ऑफ टेक्नोलॉजी) के रूप में शुरू हुई थी। उन्होंने कहा कि प्रगति केवल एक रिव्यू मैकेनिज्म नहीं, बल्कि गवर्नेंस रिफॉर्म है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रगति के प्रभाव का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने बताया कि इसके माध्यम से 86 लाख करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं को गति मिली है। प्रधानमंत्री द्वारा 377 प्रमुख परियोजनाओं की प्रत्यक्ष समीक्षा की जाती है, जबकि 3162 में से 2958 मुद्दों का समाधान हो चुका है, जो शासन की विश्वसनीयता को दर्शाता है। योगी ने कहा कि प्रगति के माध्यम से इंटर-एजेंसी बाधाएं समाप्त हुई हैं। राजस्व, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, वन, नगर विकास और पंचायती राज जैसे विभाग एक ही मंच पर समाधान कर रहे हैं। इससे उत्तर प्रदेश 'बॉटलनेक स्टेट' से 'ब्रेकथ्रू स्टेट' बन चुका है।

विपक्ष पर सीधा वार

- **योगी आदित्यनाथ का तंज :** विकास पर बोलने से पहले विपक्ष आंकड़े देखे
- **'जुमला' नैरेटिव खारिज :** घोषणाएं नहीं, पूरा हुआ काम बोलेगा
- **प्रोजेक्ट बनाम प्रचार :** 330 में 128 परियोजनाएं पूरी, जवाब खुद मौजूद
- **देरी की राजनीति पर चोट :** प्रगति ने फाइलों को मैदान में उतारा
- **अनुमतियों की रफ्तार :** इंटर-एजेंसी बाधाएं खत्म, बहाने बंद
- **राजनीतिक संदेश :** जो कर दिखाया, वही भरोसे का आधार
- **असर :** विपक्ष की सरकार-विफलता की लाइन कमजोर

यूपी में गेम-चेंजर सिद्ध हुआ प्रगति मॉडल

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रगति मॉडल राज्य के लिए गेम-चेंजर सिद्ध हुआ है। एक्सप्रेस-वे नेटवर्क, देश का सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क, सर्वाधिक शहरों में मेट्रो, एयर कनेक्टिविटी, देश की पहली रैपिड रेल, अंतर्देशीय जलमार्ग और रोपवे जैसे प्रोजेक्ट समयबद्ध ढंग से आगे बढ़े हैं। वर्तमान में यूपी के पास 10.48 लाख करोड़ रुपये की 330 परियोजनाओं के साथ देश का सबसे बड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर पोर्टफोलियो है। इनमें से 2.37 लाख करोड़ रुपये की 128 परियोजनाएं (39 प्रतिशत) पूरी हो चुकी हैं, जबकि 8.11 लाख करोड़ की 202 परियोजनाएं निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रगति पर हैं।

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार, 14 जनवरी 2026

न्यूज ब्रीफ

समाज कल्याण विभाग और मदद फाउंडेशन के बीच एमओयू

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश में बालिकाओं के समावेशी विकास, डिजिटल साक्षरता और तकनीकी सशक्तिकरण को मजबूती देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। समाज कल्याण विभाग और मदद फाउंडेशन के बीच मंगलवार को समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इसके साथ ही पायलट प्रोजेक्ट के तहत दो सर्वोदय बालिका विद्यालयों को 40 टैबलेट वितरित किए गए। गोमती नगर स्थित भागीदारी भवन में आयोजित समन्वय बैठक एवं टैबलेट वितरण कार्यक्रम में समाज कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) असीम अरुण ने कहा कि डिजिटल शिक्षा आज समय की अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है। कार्यक्रम में पायलट प्रोजेक्ट के तहत चयन किए गए जयप्रकाश नारायण सर्वोदय बालिका विद्यालय, गोरखपुर और महाराजगंज को कुल 40 टैबलेट प्रदान किए गए।

संयुक्त परिषद 20 को करेगी विधानसभा का घेराव

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश के करीब 40 लाख कार्मिकों की लंबित समस्याओं के समाधान की मांग को लेकर राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद ने 20 जनवरी को विधान सभा घेराव का ऐलान किया है। परिषद का कहना है कि क्षेत्रीय, मंडलीय और प्रांतीय स्तर पर कई चरणों में आंदोलन और सम्मेलन किए गए, लेकिन शासन–सरकार की ओर से कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई, जिससे कर्मचारियों में आक्रोश है। इसी क्रम में आलमबाग बस स्टेशन पर परिवहन निगम से जुड़े विभिन्न संगठनों की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता परिषद के प्रदेश अध्यक्ष जेएन तिवारी ने की।

डिप्लोमा फार्मेसी संस्थानों की संबद्धता प्रक्रिया शुरू

अमृत विचार, लखनऊ : सत्र 2026–27 के लिए डिप्लोमा स्तरीय फार्मेसी संस्थानों को संबद्धता दिए जाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। प्राविधिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश ने इसके लिए यू-राइज पोर्टल को सक्रिय कर दिया है। शासनादेश के अनुपालन में अब नई फार्मेसी संस्था की स्थापना, नया पाठ्यक्रम शुरू करने, प्रवेश क्षमता बढ़ाने या घटाने तथा संस्था क्लोजर से जुड़े सभी आवेदन केवल यू-राइज पोर्टल के माध्यम से ही स्वीकार किए जाएंगे। परिषद के अनुसार, नव-आवेदित और पूर्व से परिषद से संबद्ध सभी डिप्लोमा स्तरीय फार्मेसी संस्थान 30 अप्रैल तक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। निर्धारित तिथि और समय के बाद किसी भी प्रकार का आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा। परिषद ने स्पष्ट किया है कि ऑफलाइन या किसी अन्य ऑनलाइन माध्यम से भेजे गए आवेदन मान्य नहीं होंगे।

विवादमुक्त संपत्ति व्यवस्था पर सरकार का फोकस

अमृत विचार, लखनऊ : विधान भवन स्थित कक्ष में आयोजित प्रेस वार्ता में स्टांप एवं पंजीयन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रवींद्र जायसवाल ने कहा कि अब पारिवारिक अचल संपत्ति के बंटवारे के लिए स्टांप शुल्क मात्र 5000 रुपये और पंजीयन शुल्क अधिकतम 5000 रुपये तय किया गया है। यानी प्रदेश के नागरिक अब 10 हजार के भीतर वैध रूप से संपत्ति का पारिवारिक विभाजन करा सकेंगे। इससे पारिवारिक विवाद, कोर्ट-कचहरी और वर्षों तक चलने वाले मुकदमों में कमी आएगी। मंगलवार को विधान भवन स्थित कक्ष में आयोजित प्रेस वार्ता में स्टांप एवं पंजीयन राज्य मंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ने आम नागरिकों, महिलाओं और परिवारों को बड़ी राहत देते हुए स्टांप एवं पंजीयन शुल्क में ऐतिहासिक रियायतों का फैसला किया है।

वीबी–जीरामजी से बदलेगी ग्रामीण अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार पर लगेगा डिजिटल ब्रेक

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

किरण रिजिजू का आरोप

- **मनरेगा में 11 लाख करोड़ खर्च के बाद भी गांवों का विकास नहीं**

अमृत विचार: केंद्रीय संसदीय कार्य एवं अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री किरण रिजिजू ने मनरेगा को लेकर तीखा राजनीतिक हमला बोलते हुए कहा कि इस योजना में 11 लाख करोड़ रुपये खर्च होने के बावजूद ग्रामीण भारत में अपेक्षित विकास नहीं हुआ। उन्होंने आरोप लगाया कि जहां रोजगार की जरूरत नहीं थी, वहां पैसा बहाया गया और जहां काम चाहिए था, वहां लोगों को रोजगार नहीं मिला। रिजिजू ने कहा कि मनरेगा रोजगार की नहीं, बल्कि लूट की गारंटी बन गई थी, इसलिए केंद्र सरकार वीबी–जीरामजी (विकसित भारत–गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन ग्रामीण) लेकर आई है।

वीबी–जीरामजी योजना को लेकर इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित भाजपा की वर्कशॉप और बाद में प्रेस वार्ता में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संकल्प गांवों का समग्र और टिकाऊ विकास है। नई योजना के जरिए रोजगार, आजीविका और ग्रामीण इंफ्रास्ट्रक्चर को एक साथ मजबूत किया जाएगा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य है और यहां होने वाला बदलाव पूरे देश के लिए मॉडल बनेगा।

किरण रिजिजू ने बताया कि वीबी–जीरामजी के तहत हर परियोजना की डिजिटल मॉनिटरिंग होगी, जिससे भ्रष्टाचार और दुरुपयोग की कोई गुंजाइश नहीं बचेगी। 100 दिन की जगह अब 125 दिन रोजगार की गारंटी दी जाएगी। कृषि सीजन के अनुसार योजना में लचीलापन रखा गया है, ताकि किसानों को सीधा लाभ मिले। जल संरक्षण, स्वास्थ्य सुविधाएं, बेसिक शिक्षा और ग्रामीण जलापूर्ति के लिए मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया जाएगा। उन्होंने दावा किया कि इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बड़ा उछाल आएगा।

केंद्रीय मंत्री ने विपक्ष पर दुष्प्रचार फैलाने का आरोप लगाते हुए कहा कि जैसे सीएए के समय नागरिकता छीनने का झूठा भ्रम फैलाया गया था, वैसे ही अब नए कानून को लेकर डर पैदा किया जा रहा है। उन्होंने सवाल किया कि क्या किसी की नागरिकता गई? वीबी–जीरामजी में हर ग्राम सभा से प्रस्ताव लेकर जनता की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। पुराने कानून में भ्रष्टाचार रोकना संभव नहीं था, इसलिए नया कानून लाना जरूरी हो गया।

इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित वर्कशॉप में बाएं से उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक और भाजपा के संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह। अमृत विचार

गरीबों को जीरामजी के फायदे गिनाएं कार्यकर्ता

- कार्यशाला में मंत्रियों और भाजपा नेता ने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि नया कानून पारदर्शिता और जवाबदेही की गारंटी देता है। संगठन स्तर पर कार्यकर्ता इसे जन-जन तक पहुंचाएं। गांवों की भागीदारी से ही विकसित भारत का सपना साकार होगा। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि वीबी–जीरामजी से गांवों में वास्तविक विकास होगा। यह योजना गरीब, किसान और मजदूर की जिंदगी बदलेगी। बृजेश पाठक ने कहा कि डिजिटल निगरानी से भ्रष्टाचार खत्म होगा। यह योजना भरोसे और पारदर्शिता की गारंटी है। पंचायती राज मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि ग्राम पंचायतें इस योजना की रीढ़ होंगी। गांव से ही विकसित भारत का रास्ता निकलेगा। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता वीबी–जीरामजी को गांव-गांव तक पहुंचाएंगे। यह ऐतिहासिक सुधार है। संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि संगठन स्तर पर हर कार्यकर्ता इस योजना को जन-आंदोलन बनाएगा। कहा कि प्रदेश की कार्यशाला के पश्चात वीबी-जी राम जी की जिला कार्यशालाओं में भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पार्टी जिला सम्मेलनों के माध्यम से वीबी-जी राम जी पर श्रमिकों, गामीणों, ग्राम प्रधानों, बीडीसी सदस्यों तथा किसानों के साथ संवाद करेगी। जिला सम्मेलनों में सांसद, विधायक सहित सभी जनप्रतिनिधि तथा अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति मोर्चा के पदाधिकारी सम्मिलित रहेंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा मंडल स्तर पर भी सम्मेलन आयोजित करेगी। प्रदेश उपाध्यक्ष संतोष सिंह, प्रदेश मीडिया प्रभारी मनीष दीक्षित, शहर मीडिया प्रभारी हिमांशु दुबे, राष्ट्रीय मंत्री ओम प्रकाश धनखड़, राष्ट्रीय मंत्री सुरेन्द्र नागर, कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, स्वतंत्र देव सिंह, भूपेन्द्र सिंह चौधरी उपस्थित रहे। संचालन प्रदेश उपाध्यक्ष संतोष सिंह ने किया।

5 लाख युवाओं को मिलेगा हाई-स्किल रोजगार

प्रदेश में 1000 से अधिक जीसीसी स्थापित करने का लक्ष्य

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

एक नज़र में यूपी का जीसीसी रोडमैप

- **लक्ष्य :** 1000 ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स
- **संभावित रोजगार :** 5 लाख युवा
- **वर्तमान जीसीसी :** लगभग 90
- **नीति :** उत्तर प्रदेश जीसीसी नीति-2024
- **फोकस सेक्टर :** आईटी, डेटा, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट
- **मुख्य लाभ :** हाई-स्किल जॉब्स, प्रतिभा पलायन पर नियंत्रण

रफ्तार पकड़ रही मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना

- **अमृत विचार, लखनऊ :** मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना वित्तीय वर्ष 2025–26 में 94 इकाइयां स्थापित की गई हैं, जिसके तहत 648 .63 लाख रुपये का पूंजी निवेश संभव हुआ है। इसके माध्यम से 2,586 युवाओं को रोजगार दिलाने में सफलता मिली है। योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित एवं तकनीकी योग्य बेरोजगार युवक-युवतियों को 10 लाख रुपये तक का बैंक ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। योगी सरकार ने उद्यमियों के लिए ब्याज सब्सिडी की बड़ी सुविधा दी है, जिसमें सामान्य वर्ग के उद्यमियों के लिए 4 प्रतिशत से ऊपर का ब्याज सरकार देती है, जबकि आरक्षित वर्ग के उद्यमियों का पूरा ब्याज सरकार वहन करती है। योजना में 18 से 50 वर्ष आयु वर्ग के पुरुष एवं महिला उद्यमी पात्र हैं। चयन प्रक्रिया जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित जिला स्तरीय टास्क फोर्स के माध्यम से की जाती है। सामान्य वर्ग को परियोजना लागत का 10 प्रतिशत, जबकि आरक्षित वर्ग को 5 प्रतिशत स्वयं का अंशदान देना होता है।

अमृत विचार: तेजी से विकसित होती अवसंरचना, स्पष्ट नीतियों और स्थिर शासन के चलते उत्तर प्रदेश अब ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (जीसीसी) के लिए देश का उभरता हुआ हॉटस्पॉट बनता जा रहा है। बीते नौ वर्षों में योगी सरकार में प्रदेश ने न केवल मैन्युफैक्चरिंग बल्कि नॉलेज और सर्विस आधारित अर्थव्यवस्था की दिशा में भी ठोस कदम बढ़ाए हैं। उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले वर्षों में उत्तर प्रदेश वैश्विक कंपनियों का एक बड़ा ऑपरेशन हब बन सकता है।

प्रदेश सरकार ने उत्तर प्रदेश जीसीसी नीति-2024 के तहत 1000 से अधिक जीसीसी स्थापित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया है। इसके माध्यम से पांच लाख से अधिक युवाओं को प्रत्यक्ष रोजगार मिलने की संभावना है। वर्तमान में प्रदेश में लगभग 90 जीसीसी सक्रिय हैं, जो आईटी, इंजीनियरिंग, डेटा एनालिटिक्स, फाइनेंस और मैनेजमेंट जैसे क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। नीति की सबसे बड़ी ताकत इसकी स्पष्टता और दीर्घकालिक दृष्टिकोण है। निवेशकों की सबसे बड़ी चिंता-नियमों की अनिश्चितता और प्रक्रियागत देरी—को दूर करने के लिए सरकार ने एक स्पष्ट और पारदर्शी ढांचा तैयार किया है। इससे निवेशकों को शुरुआती चरण में ही नियम, शर्तें और जिम्मेदारियां स्पष्ट हो जाती हैं, जिससे निर्णय लेने की गति तेज हुई है और भरोसा मजबूत हुआ है। भूमि आधारित प्रोत्साहन और संरचनात्मक सहयोग से निवेश की शुरुआती लागत घटाने पर विशेष जोर दिया गया है। प्रदेश सरकार का मानना है कि यदि निवेशक को आरंभिक स्तर पर ठोस आधार मिलेगा, तो वह लंबे समय तक राज्य से जुड़ा रहेगा। इसी कारण अस्थायी कार्यालयों के बजाय स्थायी औद्योगिक और आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके साथ ही समयबद्ध क्रियान्वयन और जवाबदेही तय कर यह सुनिश्चित किया गया है कि परियोजनाएं तय समय में धरातल पर उतरें।जीसीसी के माध्यम से प्रदेश में हाई-वैल्यू और हाई-स्किल रोजगार के अवसर तेजी से बढ़ रहे हैं। स्थानीय युवाओं को अंतरराष्ट्रीय कार्य संस्कृति और तकनीकी अनुभव मिल रहा है, जिससे प्रतिभा पलायन पर अंकुश लगने की उम्मीद है। साथ ही कम विकसित क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहित कर सरकार क्षेत्रीय संतुलन साधने की दिशा में भी आगे बढ़ रही है।

गोरखपुर महोत्सव में बच्चों से बात करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। अमृत विचार

विकास की नई ऊंचाइयों पर उत्तर प्रदेश : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/गोरखपुर

- **मुख्यमंत्री ने किया गोरखपुर महोत्सव का समापन, छह विभूतियां 'गोरखपुर रत्न' से सम्मानित**

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश में अब केवल संभावनाओं की चर्चा नहीं होती, बल्कि मजबूत इच्छाशक्ति के साथ परिणाम धरातल पर दिखाई देते हैं। सरकार की दृढ़ नीति और संकल्प का ही परिणाम है कि आज उत्तर प्रदेश माफियामुक्त, दंगामुक्त होकर विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री मंगलवार अपराह्न रामगढ़ताल के सामने चंपा देवी पार्क में आयोजित गोरखपुर महोत्सव के औपचारिक समापन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने स्थानीय छह विभूतियों को 'गोरखपुर रत्न' से सम्मानित किया और महोत्सव की स्मारिका 'अभ्युदय' का विमोचन किया। योगी ने कहा कि सरकार की स्पष्ट इच्छाशक्ति से प्रदेश में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। आज नौजवानों को रोजगार मिल रहा है, किसानों की आय में वृद्धि हो रही है और व्यापारी भयमुक्त वातावरण में अपना कारोबार बढ़ा रहे हैं। बहन-बेटियां सुरक्षित माहौल में स्कूल और बाजार जा पा रही हैं। उन्होंने सख्त शब्दों में कहा कि यदि कोई बहन-बेटियों की सुरक्षा से खिलवाड़ करने का दुस्साहस करता है, तो उसे कानून का कठोर सामना करना पड़ेगा। यह परिवर्तन तभी संभव हुआ है, जब सरकार में जनसेवा की सच्ची भावना और निर्णय लेने का साहस हो।

2017 से पहले और बाद जमीन-आसमान का फर्क

- योगी ने कहा कि 2017 से पहले गोरखपुर और प्रदेश की स्थिति बदहाल थी। सड़कें जर्जर थीं, बिजली संकट था, गुंडा टैक्स वसूला जाता था और बीमारियों का प्रकोप था। आज गोरखपुर और उत्तर प्रदेश विकास की नई बुलंदियों पर हैं। उन्होंने कहा कि मच्छर और माफिया एक-दूसरे के पूरक होते हैं, एक शरीर को बीमार करता है, दूसरा समाज को। स्वच्छता और कानून व्यवस्था के जरिए दोनों पर नियंत्रण किया गया है। मुख्यमंत्री ने बताया कि आज गोरखपुर में शानदार सड़क, रेल और हवाई कनेक्टिविटी है। हजारों करोड़ रुपये का निवेश हुआ है, जिससे करीब 50 हजार युवाओं को रोजगार मिला है।

माघ मेले में मकर संक्रांति स्नान पर्व के लिए तैयारी पूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/प्रयागराज

- **एक करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के आगमन का अनुमान**

मेला प्रशासन की तैयारी

- **अनुमानित श्रद्धालु :** 1 करोड़ से अधिक
- **स्नान घाट :** 12,100 फीट लंबाई
- **पार्किंग स्थल :** 42 (1 लाख वाहन क्षमता)
- **स्वच्छता कर्मी :** 3,300
- **टॉयलेट :** 25,880
- **सुरक्षा :** 400 एआई व सीसीटीवी कैमरे
- **विशेष सुविधा :** गोल्फ कार्ट व बाइक टैक्सी सेवा

अमृत विचार: संगम नगरी प्रयागराज में आयोजित माघ मेले का दूसरा और महत्वपूर्ण स्नान पर्व मकर संक्रांति 15 जनवरी को होगा। पौष पूर्णिमा स्नान पर्व पर 31 लाख से अधिक श्रद्धालुओं को सकुशल स्नान कराने के बाद अब मेला प्रशासन मकर संक्रांति के लिए पूरी तरह मुस्तैद है। प्रशासन का अनुमान है कि इस पर्व पर एक करोड़ से अधिक श्रद्धालु संगम तट पर आस्था की डुबकी लगाएंगे।

श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मेला क्षेत्र में 12,100 फीट लंबाई में स्नान घाटों का निर्माण किया गया है। भीड़ के दबाव को कम करने के लिए घाटों के समीप ही पार्किंग विकसित की गई है, जिससे श्रद्धालुओं को कम से कम पैदल चलना पड़े। इस बार 42 अस्थायी पार्किंग स्थल बनाए गए हैं, जिनमें एक लाख से अधिक वाहनों की क्षमता है। सुगम आवागमन के लिए गोल्फ कार्ट और बाइक टैक्सी सेवा भी उपलब्ध रहेगी। भीड़ माघ मेला अधिकारी ऋषिराज के अनुसार, पिछले वर्ष मकर संक्रांति पर करीब 29 लाख श्रद्धालु आए थे, जबकि इस बार अनुमान लगभग तीन गुना है। इसी को देखते हुए यातायात और प्रवेश-निकास मार्गों को विशेष रूप से सुव्यवस्थित किया गया है। गंगा में पर्याप्त जल उपलब्धता के लिए कानपुर स्थित बैराज से प्रतिदिन 8000 क्यूसेक जल छोड़ा जा रहा है और सभी 81 नालों की टैपिंग पूरी कर ली गई है। स्वच्छता और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। मेला क्षेत्र को ओडीएफ, दुर्गंध मुक्त और जीरो डिस्चार्ज बनाए रखने के लिए 25,880 टॉयलेट, 11 हजार डस्टबिन, 10 लाख लाइनर बैग और 3,300 स्वच्छता कर्मियों की तैनाती की गई है। सुरक्षा व्यवस्था के तहत मेला क्षेत्र में 17 थाने, 42 पुलिस चौकियां, जल पुलिस, अग्निशमन स्टेशन और पैरामिलिट्री फोर्स तैनात की गई है। एआई आधारित 400 से अधिक कैमरों से क्राउड मॉनिटरिंग और भीड़ घनत्व का विश्लेषण किया जाएगा।

शॉर्ट सर्किट से लगी आग, दो छोलदारियां जलीं

- **अमृत विचार, लखनऊ :** माघ मेला–2026 के दौरान प्रयागराज में फायर सर्विस की सतर्कता और त्वरित कार्रवाई से एक संभावित बड़ा हादसा टल गया। मंगलवार को मेला क्षेत्र अंतर्गत थाना झूंसी, सेक्टर–05 में श्री राम नाम एवं मानव प्रचार संघ के संस्था परिसर में विद्युत आपूर्ति के दौरान लाइट फ्लक्चुएशन के कारण शॉर्ट सर्किट से आग लग गई। घटना की सूचना मिलते ही मौके के पास ड्यूटी पर तैनात दो-पहिया फायर वाहन ने तुरंत घटनास्थल पर पहुंचकर अग्निशमन कार्य शुरू किया। इसके बाद मात्र दो मिनट के भीतर फायर सर्विस के कुल छह वाहन मौके पर पहुंच गए और संगठित तरीके से आग बुझाने की कार्रवाई की गई।

एसआईआर के लंबित मामलों पर जवाब तलब

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- **सीईओ नवदीप रिणवा ने वीडियोकॉन्फ्रेंसिंग से डीईओ–ईआरओ को दिए सख्त निर्देश**
- **18 को मिशन मोड में पढ़ी जाएगी मतदाता सूची, सोशल मीडिया पर त्वरित समाधान के आदेश**

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने मंगलवार को प्रदेश के सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों, उप जिला निर्वाचन अधिकारियों और निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों (ईआरओ) के साथ वीडियोकॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) से जुड़े कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि मतदाता सूची को त्रुटिरहित, पारदर्शी और भरोसेमंद बनाने में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने निर्देशित किया कि 18 जनवरी 2026 को प्रदेश के सभी बूथों पर बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) मिशन मोड में आलेख्य मतदाता सूची को पुनः पढ़कर मतदाताओं को सुनाएंगे। इस अभियान में राजनीतिक दलों द्वारा नियुक्त बूथ लेवल एजेंट, संबंधित क्षेत्र के पार्षद और ग्राम प्रधान का सहयोग लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए व्यापक मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि बीएलओ के पास फॉर्म-6 (घोषणा पत्र सहित), फॉर्म-7 और फॉर्म-8 पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हों। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को निर्देश दिए कि सोशल मीडिया के माध्यम से प्राप्त मतदाताओं की जिज्ञासाओं और शिकायतों का समयबद्ध, तथ्यपरक और स्पष्ट उत्तर दिया जाए, ताकि मतदाताओं के बीच किसी भी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न हो।

नाम–पते की त्रुटियों पर सख्ती

- सीईओ ने निर्देश दिए कि फॉर्म-6 ऑफलाइन भरवाते समय मतदाता का नाम, पता और अन्य विवरण हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मतदाता के सामने भरवाया जाए, ताकि वर्तनी की किसी भी प्रकार की गलती की संभावना न रहे। इसी प्रकार, ऑनलाइन फॉर्म-6 के मामलों में सत्यापन के दौरान बीएलओ मतदाता से उसका नाम हिंदी में भी भरवाएं, जिससे मतदाता सूची पूरी तरह शुद्ध और अद्यतन हो सके।

'बुक ए कॉल विद बीएलओ' की समीक्षा

- बैठक में 'बुक ए कॉल विद बीएलओ' सुविधा के अंतर्गत 48 घंटे से अधिक समय तक लंबित प्रकरणों की विधानसभा वार समीक्षा की गई। जिन आठ विधानसभा क्षेत्रों मुरादाबाद ग्रामीण, शिकोहाबाद, गढ़मुक्तेश्वर, चायल, मधुबन, कुंदरकी, मनकापुर और मुरादाबाद नगर में 10 से अधिक प्रकरण 48 घंटे से ज्यादा लंबित पाए गए, वहां के ईआरओ से स्पष्टीकरण तलब करने के निर्देश दिए गए। साथ ही सभी ईआरओ को नियमित बूथ वार समीक्षा करने और यह सुनिश्चित करने को कहा गया कि कोई भी प्रकरण 48 घंटे से अधिक लंबित न रहे।

राजनीति

मछुआ समाज अब सिर्फ वोट बैंक नहीं, सत्ता का भागीदार : डॉ. संजय निषाद

निषाद पार्टी के संकल्प दिवस पर एनडीए ने किया ताकत का प्रदर्शन

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: निर्बल इंडियन शोषित हमारा आम दल (निषाद पार्टी) के 13वें संकल्प दिवस पर मंगलवार को राजधानी लखनऊ में एनडीए के सहयोगी दलों की एकजुटता और राजनीतिक ताकत का जोरदार प्रदर्शन देखने को मिला। 2027 के विधानसभा चुनाव में एनडीए की प्रचंड जीत का दावा करते हुए विपक्ष को हाशिये पर पहुंचाने का संकल्प लिया गया।

डॉ. बीआर आंबेडकर सभागार, राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय और राज्य सरकार के कई वरिष्ठ मंत्री, सहयोगी दलों के नेता तथा हजारों कार्यकर्ता मौजूद रहे। निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री डॉ. संजय निषाद ने कहा कि 13 साल पहले श्रृंगवेरधाम में संकल्प लिया था कि मछुआ समाज का शोषण करने वाली सरकारों का अंत करेंगे। उन्होंने कहा कि निषाद समाज अब केवल नदी–तालाब तक सीमित नहीं है, बल्कि सरकार बनाना और गिराना भी जानता है। उन्होंने फूलन देवी और स्व. जमुना निषाद की हत्या की सीबीआई जांच की मांग दोहराई और संतकबीरनगर लोकसभा चुनाव में साजिश का आरोप लगाया।

डॉ. संजय निषाद ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मछुआ समाज के लिए अभूतपूर्व कार्य हुए हैं। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत बीते 11 वर्षों में 41.5 हजार करोड़ रुपये मछुआरों को दिए गए, जबकि पूर्ववर्ती सरकारें दशकों में यह नहीं कर पाईं। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने निषाद पार्टी के नाम को सबसे सुंदर बताते हुए कहा कि भाजपा और निषाद पार्टी का रिश्ता राजनीतिक नहीं, बल्कि पारिवारिक गठबंधन है।

सुभासपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि यदि निषाद पार्टी और सुभासपा एकजुट रहती हैं, तो बिना उनके सहयोग के कोई भी सरकार नहीं बन सकती।

उन्होंने समाजवादी पार्टी पर तीखा हमला करते हुए कहा कि 2027 में सपा सत्ता से पूरी तरह बाहर हो जाएगी। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने निषाद समाज को भरोसा दिलाया कि आरक्षण का मुद्दा एनडीए सरकार में ही हल होगा। कार्यक्रम में परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह, शिवसेना (शिंदे) के समन्वयक अभिषेक वर्मा सहित एनडीए के कई नेता उपस्थित रहे। संकल्प दिवस ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि 2027 के चुनाव की तैयारी में एनडीए पूरी तरह संगठित और आक्रामक मोड में है।

केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू, उप मुख्यमंत्री द्वय केशव प्रसाद मौर्य, ब्रजेश पाठक और संजय निषाद का स्वागत करते कार्यकर्ता।

अनुराग हेल्थ केयर प्रा.लि.
•ICU •NICU DIALYSIS
• MODULAR OT
दूरबीन विधि से आपरेशन अब कम खर्च में
सीजीएचएस, मेडीक्लेम व आयुष्मान कार्ड मान्य
117/क्यू/702,
शारदा नगर, कानपुर
9889538233, 7880306999

हैंडओवर स्टेडियम का कराया लोकार्पण

अजय मिश्र, कन्नौज

- छिबरामऊ इलाके की ग्राम पंचायत मिघौली में 5.39 करोड़ से बना है खेल स्टेडियम
- 41 महीने बाद सीएम योगी आदित्यनाथ से इसका लोकार्पण करा दिया

मिघौली खेल स्टेडियम परिसर में बना हाल। अमृत विचार

अमृत विचार। कन्सट्रक्शन एंड डिजाइन सर्विसेज (सीएनडीएस) जल निगम ने खेलो इंडिया योजना के तहत मिघौली में 07 एकड़ जमीन पर 05 करोड़ 39 लाख रुपये से खेल स्टेडियम का निर्माण कराया था। अगस्त 2022 में यह जिला युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल को हैंडओवर (हस्तांतरित) हो गया। अब 41 महीने बाद सीएम योगी आदित्यनाथ से इसका लोकार्पण करा दिया गया है।

तहसील छिबरामऊ इलाके की ग्राम पंचायत मिघौली में खेल मैदान (स्टेडियम) का निर्माण कार्य कराने के लिए कार्यदायी संस्था सीएनडीएस जल निगम व जिला युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल विभाग के बीच 28 फरवरी 2019 को अनुबंध हुआ था। इसमें कहा गया कि हस्तांतरण के एक साल बाद तक रखरखाव की जिम्मेदारी कार्यदायी संस्था की होगी।

बताया जा रहा है कि 18 अगस्त 2022 को कार्यदायी संस्था ने विभाग को स्टेडियम हस्तांतरित कर दिया। पीआरडी के 06 जवान भी सुरक्षा के लिए तैनात हैं। स्टेडियम में मल्टीपरपज हाल, 400 मीटर का ट्रैक, डारमेंट्री यानि शयनकक्ष व शौचालय की सुविधा है। स्वामी विवेकानंद जयंती पर लखनऊ से मुख्यमंत्री ने प्रदेश के पांच मल्टीपरपज हाल का लोकार्पण किया जिसमें कन्नौज का भी मिघौली शामिल है।

कई बार हो चुके हैं खेलकूद व कार्यक्रम

बताया जा रहा है कि मिघौली स्टेडियम में कुछ वर्षों से आयोजन होते आ रहे हैं। विभागीय खेलकूद प्रतियोगिताएं भी होती हैं। परेड व स्वामी विवेकानंद जयंती भी मनाई जाती रही है। करीब साढ़े तीन साल बाद स्टेडियम का लोकार्पण हुआ है।

स्टेडियम या किसी भवन के पूर्ण हो जाने के बाद लोकार्पण होना जरूरी होता है इसलिए किया गया है। हालांकि यह कार्यक्रम लखनऊ में हुआ है। इसकी जानकारी मुझे या विभाग को नहीं दी गई है।

–आरती जायसवाल, जिला युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल अधिकारी

खंडहर की मिट्टी उठाते निकले चांदी के सिक्के

कन्नौज। आंटी गांव में पुराने गिरे मकान की मिट्टी उठाने के दौरान चांदी के सिक्कों से भरा घड़ा मिला। गिनती के दौरान 45 सिक्के निकले। इसमें 41 सिक्के मकान मालिक के सुपुर्द किये गये।

आंटी निवासी अवधेश तिवारी का पुराना मकान खंडहर हो गया था। इसका मलवा पडा था। रंजीत कुशवाहा के मांगने पर उन्होंने मिट्टी उठवा लेने को कहा। मंगलवार को रंजीत मजदूर मिट्टी भरवा रहा था। इसी दौरान मलबे में दवा हुआ घड़ा निकला। मजदूरों ने खोला तो उसमें चांदी के सिक्के निकले। इस पर मजदूर घडा लेकर भाग गया। अवधेश ने मजदूर का पीछा कर पकड़ लिया। घड़े में 45 चांदी के सिक्के निकले। 41 सिक्के मकान मालिक को दिये गये। कुछ लोगों का कहना है कि यह अफवाह हैं।

पांच दुकानों से लिए सात नमूने, दो से जवाब-तलब

कार्यालय संवाददाता, कन्नौज

- शासन से आया फरमान और प्रभारी जिला कृषि रक्षा अधिकारी ने की कार्रवाई

कृषि बीज व पेस्टीसाइड दुकान पर जांच करते प्रभारी जिला कृषि रक्षा अधिकारी।

अमृत विचार। प्रभारी जिला कृषि रक्षा अधिकारी ने जिले की पांच दुकानों से पेस्टीसाइड के सात नमूने लिए। लाइसेंस नवीनीकरण न कराने पर दो दुकानदारों से जवाब-तलब किया।

जिला कृषि अधिकारी/ प्रभारी जिला कृषि रक्षा अधिकारी संतलाल गुप्ता ने बताया कि छापेमारी के दौरान तहसील सदर क्षेत्र के गांव टिड़ियापुर स्थित आरएस जंक्शन व फगुहा गांव की मिश्रा बीज भंडार (पेस्टीसाइड) के लाइसेंस नवीनीकरण नहीं मिले। इस वजह से इनको नोटिस जारी किया गया है। इन दो दुकानों के अलावा तीन अन्य प्रतिष्ठानों से कुल सात कीटनाशक के नमूने लिए गए हैं। इनको जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जाएगा। परिणाम आने के बाद आगे की कार्रवाई होगी। प्रभारी जिला कृषि रक्षा अधिकारी का कहना है कि मंगलवार को सुबह ही शासन से निर्देश आए उसी के तहत कार्रवाई की गई है। सरकार का मकसद है कि किसानों को निर्धारित रेट में बेहतर बीज, उर्वरक व पेस्टीसाइड उपलब्ध हो सके।

न्यूज ब्रीफ

कृष्ण जन्म, सीता स्वयंवर की कथा सुन भक्त भाव विभोर

छिबरामऊ। शनि मंदिर अस्पताल रोड के पास चल रही सात दिवसीय श्रीमद् भागवत में आचार्य पंडित हरिओम दास ने कृष्ण जन्म, सीता स्वयंवर और राम वनवास की भावपूर्ण कथाओं के माध्यम से सभी को भावविभोर कर दिया। आचार्य ने संतों की महिमा का बखान करते हुए कहा, संत ही समाज का उद्धार कर सकते हैं। वे अंधकारमय जीवन में प्रकाश की किरण बनकर भटके हुए जीवों को सत्य का मार्ग दिखाते हैं। संतों की संगति से ही मनुष्य मोह-माया के बंधनों से मुक्त होकर परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है। कथा में परीक्षित का दायित्व एडवोकेट डॉ. मयंक सक्सेना एवं उनकी पत्नी गीता सक्सेना ने निभाया। समापन पर नगर पालिका अध्यक्ष मनोज दुबे ने आचार्य को माल्यार्पण एवं अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया।

ऋषि भूमि इंटर कॉलेज में शोकसभा आज

कन्नौज। माध्यमिक शिक्षक संघ शर्मा गुट के जिलाध्यक्ष केपी सिंह राठौर का दो जनवरी को निधन हो गया था। उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा जाएगा। सौरिख स्थित ऋषि भूमि इंटर कॉलेज में 14 जनवरी यानि आज दोपहर 01:30 बजे शोकसभा होगी। इसमें शिक्षक व कर्मचारी शामिल होंगे। यह जानकारी उत्तर प्रदेश अवकाश प्राप्त माध्यमिक शिक्षक कल्याण एसोसिएशन जिलाध्यक्ष सुभाष चंद्र ने दी।

नहीं रहे चेयरमैन आसमा बेगम के पति अखलाख

गुरसहायगंज। लंबी बीमारी के बाद चेयरमैन के पति की इलाज के दौरान कानपुर के अस्पताल में मौत हो गई। शोक संवेदना व्यक्त करने के लिये उनके आवास पर लोगों की भीड़ रही। मंगलवार को लंबे समय से बीमार नगर पंचायत समधन चेयरमैन आसमा बेगम के पति अखलाख हुसैन सिद्दीकी (60) का इलाज के दौरान निधन हो गया। शोक संवेदना व्यक्त करने के लिए उनके आवास पर लोगों की भीड उमड़ पड़ी। उनकी पत्नी पहली बार समधन नगर पंचायत की अध्यक्ष चुनी गईं।

अखलाक हुसैन।

टीचर्स सेल्फ केयर टीम ने शिक्षिका को दी श्रद्धांजलि

गुरसहायगंज, कन्नौज। टीचर सेल्फ केयर के अध्यक्ष विवेकानंद के निर्देश पर जिला संयोजक अंकित कटियार के नेतृत्व में विकास खण्ड उर्मदा के प्राथमिक विद्यालय इनायतपुर की शिक्षिका नीतू सिंह पाल निवासी आवास विकास -3 पनकी कल्याणपुर का 14 फरवरी 2025 को निधन हो गया था। उनके आवास पर पहुंचकर पति अशोक कुमार, पुत्री एन्द्री पाल, पुत्र अक्षत पाल, भाई मुकेश से मिलकर पारिवारिक जनों को शोक संवेदना व्यक्त की। चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

हादसे में युवक की मौत जाम लगाने का प्रयास

अज्ञात वाहन ने सोमवार देर रात बाइक सवार को मारी टक्कर

संवाददाता तिर्वा

घटनास्थल पर जाम लगाने का प्रयास करते ग्रामीणों को समझाती पुलिस।

- तिर्वा विधायक ने पहुंचकर परिजनों को समझाकर किया शांत

अमृत विचार। देर रात अज्ञात वाहन की टक्कर से युवक की मौत हो गई। पहचान होने के बाद परिजनों ने शव मेडिकल कॉलेज के सामने सड़क पर रखकर जाम लगाने का प्रयास किया। वे दुर्घटना करने वाले वाहन के चालक की गिरफ्तार की मांग कर रहे थे।

सोमवार को थाना तालग्राम के भवनियांपुर निवासी अविनाश राजपूत (28) पुत्र रामनरायण अपनी बाइक का इंजन बनवाने के लिए अपने बहनोई विनोद के घर तिर्वा कोतवाली के ग्राम सखौली सरैया आया था। मेडिकल कॉलेज गेट न. एक के सामने विनोद की बाइक रिपेयरिंग की दुकान है। अविनाश की बाइक का इंजन खुलने के कारण वह रात में बहनोई की बाइक को लेकर किसी काम से फगुहा भट्ठा की तरफ गया था। ईशन नदी के पुल के उत्तर में भुड़िया गांव के सामने किसी वाहन ने बाइक के पीछे से टक्कर मार दी जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को लावारिस हालत में राजकीय मेडिकल कॉलेज की मोर्चरी में सुरक्षित रखवा दिया तथा शिनाख्त के प्रयास शुरू कर दिए। कुछ देर बाद विनोद के भाई चंदगी राम ने मोर्चरी पहुंचकर शव की शिनाख्त की। इसके बाद परिजनों की भीड़ लग गई। उन्होंने मोर्चरी से शव को निकाल कर मेडिकल कॉलेज गेट के सामने रोड पर रखकर जाम लगाने तथा हंगामा करने का प्रयास किया। आक्रोशित ग्रामीण वाहन और चालक की गिरफ्तारी की मांग करने लगे। कुछ समय बाद तिर्वा के विधायक कैलाश राजपूत ने पहुंचकर आक्रोशित ग्रामीणों एवं परिजनों को शांत किया तथा शव को उठवाकर दुबारा मोर्चरी में रखवा दिया। सुबह शव का पंचनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार शुक्ला ने बताया की तहरीर मिलने के बाद रिपोर्ट दर्ज कर ली जाएगी। उधर पुलिस भी अपने स्तर से वाहन की पहचान के लिए आसपास सड़क किनारे लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाल रही है।

डॉक्टर ने मरीज को निजी क्लीनिक पर बुलाया

कन्नौज। तिर्वा सीएचसी पर पहुंचे मरीज को डॉक्टर ने निजी क्लीनिक पर बुलाया। तीन बजे के बाद आने को कहा। मामले की शिकायत पीड़ित ने सीएमओ से की है।

तिर्वा क्षेत्र के गांव छदामीपुर्वा निवासी मनीष कुमार ने बताया कि वह 10 जनवरी को तिर्वा कस्बे की सीएचसी में दवा लेने पहुंचा। पर्चा बनवाने के बाद ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर को पर्चा देते हुए अच्छी दवा लिखने को कहा। आरोप है कि इस बात पर डॉक्टर ने मरीज से कहा कि अच्छा उपचार कराने के लिये उसे तीन बजे उसकी क्लीनिक पर आना होगा। यह कह कर दवा भी नहीं लिखी और पर्चा लौटा दिया। दवा न मिलने से नाराज मरीज ने मामले की वीडियो बना कर वायरल किया। साथ ही वह मंगलवार को सीएमओ कार्यालय पहुंचा जहां उसने सीएमओ से इस मामले की शिकायत की। इस संबंध में जब सीएमओ से जानकारी ली गई तो उन्होंने कहा कि मामले की जांच कराई जायेगी। वायरल वीडियो की अमृत विचार पुष्टि नहीं करता है।

पीड़ित मनीष कुमार।

सीएमओ कार्यालय के बाहर धरना दे रही आशा से ज्ञापन लेतीं छिबरामऊ विधायक अर्चना पाण्डेय। अमृत विचार

विधायक ने आशा को मनाया आज होगा टीकाकरण

कार्यालय संवाददाता कन्नौज

- कोल्ड चेन का ताला खोला लेकिन जारी रहेगा धरना
- बीते बुधवार से रुका था वैक्सीनेशन, मांगों को लेकर हैं आंदोलित

अमृत विचार। आशा कार्यकर्ता के एक माह से चल रहे धरने को समाप्त कराने के लिए छिबरामऊ विधायक पहुंचीं। उनके समझाने से कोल्ड चेन का ताला तो खोल दिया लेकिन धरना प्रदेश नेतृत्व से पूछने के बाद समाप्त करने को कहा। अब आज यानी बुधवार को टीकाकरण होगा जो पिछले हफ्ते से रुका था।

सीएमओ कार्यालय के सामने व जिले की सभी सीएचसी पर आशा कार्यकर्ता महीने भर से धरना दे रहीं हैं। वे राज्य कर्मचारी का दर्जा, मानदेय 25000 रुपये, बीमा, ईपीएफ के अलावा स्थानीय स्तर प प्रसव केंद्रों पर आशा रुकने के लिये कक्ष के अलावा रुकी हुई धनराशि दिये जाने की मांग कर रही हैं। सुनवाई न होने पर करीब हफ्ते भर से कोल्ड चेन में ताला लगा कर 24 घंटे रखवाली भी करने लगीं। बुधवार को टीकाकरण भी नहीं किया जा सका।

धरने को समाप्त कराने के लिये सीएमओ के कहने पर छिबरामऊ विधायक अर्चना पाण्डेय को मंगलवार की शाम धरना स्थल पर पहुंचीं। उन्होंने आशा की बात सुनी और मांग पत्र लिया। सीएमओ ने स्थानीय स्तर की मांगों का निस्तारण कराने की जानकारी दी। इसके बाद विधायक ने आशा को मांगों के संबंध में मुख्यमंत्री से चर्चा करने तथा लिखित में भी देने का भरोसा दिलाया। इस पर आशा एसोसिएशन की जिलाध्यक्ष रानी व महासचिव ने कोल्ड चेन का ताला खोल देने लेकिन अभी धरना समाप्त नहीं करने की बात कही। इस मौके पर सीएमओ के अलावा अपर सीएमओ डा. केपी त्रिपाठी, अपर शोध अधिकारी वाई के मंजुल, डा. रवि प्रताप सिंह, के अलावा कई अन्य लोग मौजूद रहे।

सपा कार्यकर्ताओं ने वोट बनाने को लेकर लगाया कैंप। अमृत विचार

समाजवादी पार्टी ने लगाया मतदाता पंजीकरण कैंप

संवाददाता,छिबरामऊ

अमृत विचार। मंगलवार को नगर के मोहल्ला कस्साबान स्थित मन्ने के हाते में समाजवादी पार्टी की ओर से चार बूथों का एक विशेष कैंप आयोजित किया गया।

इस कैंप में नए मतदाताओं के फॉर्म नंबर 6 भरवाए गए। समाजवादी पार्टी के नगर जोन प्रभारी राशिद फारूकी ने बताया कि पार्टी का लक्ष्य अधिक से अधिक पात्र मतदाताओं को मतदाता सूची में शामिल करना है। उन्होंने कहा कि यह लोकतंत्र को मजबूत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

बेहोश कर नकदी मोबाइल, सामान लूटा

गुरसहायगंज, कन्नौज। रोडवेज बस से उतरने के बाद युवक ई-रिक्शा पर सवार होकर घर जा रहा था। तभी रास्ते में उसे नशीला पदार्थ सुंघा कर युवकों ने नगदी, मोबाइल व सामान लूट लिया ।अनौगी के विष्णु ने बताया कि वह मंगलवार की सुबह वह रोडवेज बस से दिल्ली से लौटा। ई-रिक्शा पर सवार होकर पछायेपुर्वा जा रहा था। रास्ते में दो युवकों ने उसके साथ मारपीट की और नशीला पदार्थ सुंघाकर उसे बेहोश कर दिया। इसके बाद उसके पास रखे लगभग 65 हजार रुपये, मोबाइल फोन व सामान लूट लिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बताए जीएसटी में पंजीकरण के लाभ

संवाददाता छिबरामऊ

जीएसटी के बारे में व्यापारियों को जानकारी देते अधिकारी। अमृत विचार

अमृत विचार। वाणिज्य कर अधिकारी ने जीएसटी जागरूकता को लेकर पुरानी गल्ला मंडी स्थित उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के नगर अध्यक्ष शैलेंद्र गुप्ता लालू के प्रतिष्ठान पर व्यापारियों के साथ बैठक कर जीएसटी पंजीकरण के लाभ बताए।

जीएसटी के एसटीओ अशोक कुमार मिश्रा ने बताया कि राज्य में पंजीकृत व्यापारियों के लिए 10 लाख की मुख्यमंत्री व्यापारी दुर्घटना बीमा योजना के लिए कोई प्रीमियम देय नहीं है। प्रधान मंत्री लघु व्यापारी मानधन योजना के अन्तर्गत पंजीकृत व्यापारियों को पेंशन की व्यवस्था है। जीएसटी से सम्बन्धित किसी भी कार्य हेतु सरकारी कार्यालय आने की आवश्यकता नहीं है। पंजीयन हेतु कोई शुल्क देय नहीं है। व्यापारी स्वयं ऑनलाइन पंजीयन प्राप्त कर सकते हैं। जीएसटी कर प्रणाली में समस्त कार्य घर बैठे ऑनलाइन कर सकते हैं। 1.5 करोड़ वार्षिक कारोबार सीमा तक के छोटे एवं मझोले व्यापारियों के लिए समाधान योजना है। 0 से 5 करोड़ तक की वार्षिक कारोबार सीमा तक के व्यापारियों के लिए तिमाही रिटर्न है। इसी तरह की और जानकारियां दीं। इस दौरान कई व्यापारी मौजूद रहे।

कार-बाइक की भीषण टक्कर में तीन लोग घायल

छिबरामऊ। सिकंदरपुर चौकी क्षेत्र के सादरी नगला गांव के सामने नेशनल हाईवे पर कानपुर से मेरठ जा रही कार और बाइक में आमने-सामने टक्कर हो गई। घटना में तीन लोग घायल हो गए।

फर्रुखाबाद निवासी विनय शाक्य अपनी बाइक करमुल्लापुर की ओर मोड़ रहे थे, तभी तेज रफ्तार कार से भिड़ंत हो गई। इस हादसे में बाइक सवार विनय गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि कार में सवार चालक अनुज और उनकी मां भी बुरी तरह चोटिल हो गईं। तीनों घायलों को छिबरामऊ के सौ शैया अस्पताल में भर्ती कराया गया।

कामयाबी किडनी के कैंसर से थे ग्रस्त, मेडिकल कॉलेज की टीम ने किया ऑपरेशन

लेप्रोस्कोपिक रेडिकल नेफरेक्टॉमी से दो को नया जीवन

संवाददाता तिर्वा

कैंसर ग्रस्त किडनी का ऑपरेशन करने वाले डॉक्टरों की टीम। अमृत विचार

अमृत विचार। बाबा साहेब भीमराव रामजी अंबेडकर राजकीय मेडिकल कॉलेज कन्नौज के लिए वर्ष 2026 की शुरुआत ऐतिहासिक उपलब्धि से हुई। यहां के सर्जनों की टीम ने किडनी कैंसर से जूझ रहे दो मरीजों का दूरबीन विधि से ऑपरेशन कर नया जीवन दिया है।

ऑपरेशन करने वाले असिस्टेंट प्रोफेसर और यूरोलॉजिस्ट डॉ. निखिल कुमार गुप्ता ने बताया कि सर्जरी विभाग के अध्यक्ष डॉ मो. अतहर के नेतृत्व में सर्जरी विभाग ने बड़ी उपलब्धि प्राप्त की है। उन्होंने बताया कि नए साल की की शुरुआत में दो मरीज संदीप कुमार (32) और शिवराम (40) आए थे। दोनों की किडनी कैंसर ग्रस्त थीं। जांच में कि दोनों की ही किडनी में 8 सेमी. की बड़ी और खतरनाक गांठे थीं। शिवराम के केस में ट्यूमर किडनी की मुख्य नस तक फैल गया था। जिसकी सर्जरी बहुत चुनौती पूर्ण थी। इसके चलते ऑपरेशन के लिए टीम ने लेप्रोस्कोपिक रेडिकल नेफरेक्टॉमी तकनीकी का चुनाव किया। ऑपरेशन पूरी तरह से सफल रहा और दोनों मरीज ठीक हैं जिससे उनको अस्पताल से छुट्टी दी जा रही है। उनके नेतृत्व में डॉ निशांत रंजन ने ऑपरेशन किया। डॉ. सलमान, श्रेया, डॉ. काजल, डॉ. प्रशांत, सिस्टर इंचार्ज नफीस, साधना, कांति के अलावा एनेस्थीसिया विभाग के डॉ. प्रशांत व डॉ. सुनील ने सहयोग किया। प्रधानाचार्य डॉ. सीपी पाल और सर्जरी के हेड डॉक्टर अतहर ने इस उपलब्धि पर पूरी टीम को बधाई दी है।

क्या है लेप्रोस्कोपिक रेडिकल नेफरेक्टॉमी

- तिर्वा। इस उन्नत तकनीक में पेट में बड़े चीरे लगाने के बजाय दूरबीन के जरिए किडनी और ट्यूमर को जड़ से निकाला जाता है। इसमें मरीज का खून कम निकलता है और रिकवरी बहुत तेजी से होती है। दोनों मरीजों में ब्लड लॉस बहुत कम हुआ और पोस्ट ऑपरेटिव रिकवरी अच्छी रही। इस प्रकार के ऑपरेशन के लिए पहले मरीज को लाखों रुपए खर्च करने पड़ते थे। अब यह सुविधा जिले में ही उपलब्ध है।

सीएमओ कार्यालय में कंबल व पोषण पोटली पाने वाले टीबी मरीज, साथ में अधिकारी और संस्था के पदाधिकारी। अमृत विचार

संस्था ने टीबी मरीजों को कंबल, पोषण पोटली बांटीं

कन्नौज। इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी की ओर से मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय सभागार में टीबी मरीजों को कंबल एवं पोषण पोटली का वितरण किया गया। मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सीएमओ डॉ.स्वदेश गुप्ता की उपस्थिति में अतिथियों ने टीबी मरीजों को कंबल एवं पोषण पोटली वितरित की। इस मौके पर मरीजों को समय पर दवा लेने एवं संतुलित आहार के महत्व के बारे में जानकारी दी गई। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने रेड क्रॉस सोसाइटी के इस मानवीय प्रयास की सराहना की। इस कार्यक्रम में समाजसेवी मनोज सविता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इसके अलावा जिला क्षय रोग अधिकारी (डीटीओ) डॉ. के.पी. त्रिपाठी, वाई.के. मंजुल, डॉ. रवि सिंह सहित सोसाइटी से डॉ. सरित द्विवेदी एवं पूनम द्विवेदी भी उपस्थित रहे।

अमृत विचार
कानपुर, बुधवार, 14 जनवरी 2026
कन्नौज-फर्रुखाबाद

न्यूज ब्रीफ

ट्रेन की चपेट में आए युवक का पैर कटा

फर्रुखाबाद। जिले के हरसिंहपुर गोवा रेलवे स्टेशन के पास एक युवक ट्रेन की चपेट में आ गया। इस हादसे में उसका एक पैर कट गया। गंभीर रूप से घायल युवक को लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उसकी हालत नाजुक बनी हुई है। अभी तक उसकी पहचान नहीं हो पाई है। यह घटना सोमवार देर रात की है। युवक हरसिंहपुर गोवा रेलवे स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक पर पड़ा मिला था। सूचना मिलने पर मऊ दरवाजा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घायल युवक को लोहिया अस्पताल की इमरजेंसी में लेकर आई। युवक की उम्र करीब 28 वर्ष बताई जा रही है। पुलिस युवक की पहचान सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

श्री मंगला गौरी सेवा समिति का सामूहिक विवाह समारोह आज

फर्रुखाबाद। श्री मंगला गौरी सेवा समिति के तत्वावधान में छठवां सामूहिक विवाह समारोह बुधवार 14 जनवरी को होगा। समारोह की तैयारी को अंतिम रूप दे दिया गया है जिसके लिए गुरगांव देवी मंदिर प्रांगण को भव्य रूप से सजाया गया है। विगत लगातार 6 वर्षों से समिति के जरिए से जरूरतमंद कन्याओं का सामूहिक विवाह सफलता पूर्वक कराया जाता रहा है। जिसमें दर्जनों पाणिग्रहण हो चुके हैं। इसी क्रम में बुधवार को सुबह से ही आयोजन शुरू होगा। पूरे दिन कार्यक्रम चलने के बाद में शाम को 6.00 बजे विदाई होगी। यह जानकारी देते हुए समिति के पदाधिकारी ने बताया की तैयारी पूरी कर ली गई हैं उन्होंने सभी से पहुंचने की अपील की है और कहा है कि जो भी कन्यादान करना चाहे कर सकता है।

स्वामी विवेकानंद के जीवन पर निबंध प्रतियोगिता

छिबरामऊ। महोत्सव समिति के तत्वावधान में चल रहे युवा चेतना सप्ताह के अंतर्गत दूसरे दिन स्वामी विवेकानंद के जीवन और उनके आदर्शों पर आधारित निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महोत्सव संस्थापक गौरव त्रिपाठी अमर ने बताया कि निर्णायक मंडल ने विषयवस्तु, भाषा शैली और मौलिकता के आधार पर निबंधों का मूल्यांकन करते हुए परिणाम को सुरक्षित रख लिया है जिसकी घोषणा 18 जनवरी को होगी। इस दौरान रिंकू, सचिन, सुबोध, राजीव, सुधीर ने पर्यवेक्षकों की भूमिका निभाई। इस मौके पर कई लोग मौजूद रहे।

धार्मिक कार्यों से समाज में बढ़ती है एकजुटता : छोटू पांडे

गुरसहायगंज। ग्राम मधवापुर खेल मैदान में श्रीराम व श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया। इसमें पहुंच कर विधायक पुत्र ने अन्य भाजपा नेताओं के साथ कथा वाचक नितिन पाठक को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार धार्मिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देकर धार्मिक समितियों को लाभान्वित कर रही है।मंगलवार को भागवत कथा कार्यक्रम में भाजपा नेता राजीव ठाकुर ने कहा कि श्रीराम का जीवन मर्यादा का प्रतीक है। हमें उनके पद चिन्ह पर चलते हुए आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए। मुख्य रूप से महात्मा करुणा शंकर शुक्ला, उमेश चंद्र त्रिपाठी, सोनू दुबे, अजय दुबे, आलोक त्रिपाठी, मुन्नू बाबू त्रिपाठी, अनुज त्रिपाठी, पप्पू दुबे, सर्वेश पाल, सर्वेश दुबे, देवेंद्र सिंह ठाकुर, राजेंद्र त्रिपाठी, प्रमोद त्रिपाठी, बबलू, पप्पू श्रीवास्तव, संत कुमार दुबे, अनुराग दुबे, अटलू आदि मौजूद रहे।

भूमि संरक्षण कार्यालय के बाबू की मौत

कन्नौज। विकास भवन स्थित भूमि संरक्षण कार्यालय में तैनात वरिष्ठ सहायक (बाबू) की हार्ट अटैक से मौत हो गई है। इससे ऑफिस में शोक रहा। थाना ठठिया इलाके के गांव रंगीयनपुर्वा निवासी 52 वर्षीय अनिल कुमार वरिष्ठ सहायक थे। उनके पिता राज कुमार की इटावा में तैनाती के दौरान 2003 में मृत्यु हो गई थी। अनिल को मृतक आश्रित में नौकरी मिली थी। बताया गया है कि 09 जनवरी को अनिल के सीने में दर्द हुआ था। राजकीय मेडिकल कॉलेज से कानपुर के एक निजी हॉस्पिटल और वहां से एम्स दिल्ली के लिए रेफर कर दिया गया। जहां इलाज के दौरान अनिल की मौत हो गई। परिवार में पत्नी सीमा देवी, बेटा अंकित और लविश है।

स्मार्ट मीटर के विरोध में भाकियू टिकैत का प्रदर्शन

प्रदेश उपाध्यक्ष के नेतृत्व में किसानों ने की नारेबाजी

संवाददाता गुरसहायगंज

अमृत विचार। ग्राम पंचायत सौसरापुर में बिजली विभाग द्वारा जबरन स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे थे। इसकी सूचना पर भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारियों ने धरना देकर जोरदार नारेबाजी की।

भाकियू टिकैत के प्रदेश उपाध्यक्ष शमीम सिद्दीकी, जिला अध्यक्ष ठाकुर महेंद्र प्रताप सिंह व महिला प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष कुसुम चौहान के नेतृत्व में भारी संख्या में पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने मंगलवार को सौसरापुर पहुंचकर विरोध प्रदर्शन किया। सूचना पर ग्राम सौंसरापुर पहुंचे एसडीओ पंकज चौधरी ने प्रदेश उपाध्यक्ष से मामले की जानकारी ली। कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश देते हुए कहा कि बिना किसी किसान व ग्रामीण की मर्जी के स्मार्ट मीटर नहीं लगाए जाएंगे। कहा कि जब तक किसान स्वयं नहीं चाहेगा तब तक स्मार्ट मीटर नहीं लगाया जाएगा। प्रदेश उपाध्यक्ष ने कहा कि यह संघर्ष किसानों के अधिकारों की रक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। किसानों के हित में संघर्ष जारी रहेगा। इस मौके पर कोषाध्यक्ष साजिद हुसैन, प्रमोद तिवारी, राहुल कुमार, सत्यम प्रजापति, नफीस सिद्दीकी, डब्लू ठाकुर, अनवर खान आदि मौजूद रहे।

धरने पर बैठे किसान नेता व एसडीओ से वार्ता करते शमीम सिद्दीकी। अमृत विचार

- ग्राम पंचायत सौसरापुर में जबरन लगा रहे स्मार्ट मीटर
- भाकियू टिकैत के पदाधिकारी भारी संख्या में सौसरापुर पहुंचे

ग्राम समाज की भूमि पर अवैध कब्ज़े का आरोप

सौरिख। ग्राम समाज की जमीन पर अवैध कब्जे की शिकायत मुख्यमंत्री से कर इसे कब्जा मुक्त कराए जाने की मांग की गई है।

पूर्व सैनिक जयपाल सिंह निवासी ग्राम नगला बिहारी ने गांव की ग्राम समाज की परती भूमि पर कब्जे का आरोप लगाया है। कहा कि ग्राम समाज की गाटा संख्या 1339 (35 डिसमिल) आबादी परती भूमि के रूप में दर्ज है। साथ लगी गाटा संख्या 1347 (53 डिसमिल) का बैनामा हो चुका है। आरोप है कि इन्हीं बैनामा धारकों द्वारा गाटा संख्या 1339 की लगभग 30 से 32 डिसमिल ग्राम समाज की भूमि पर भी अवैध कब्जा किया जा रहा है। पूर्व सैनिक का कहना है कि उनके सहित कई ग्रामीण जगह की समस्या से वर्षों से जूझ रहे हैं। कई बार अनुरोध करने के बावजूद ग्राम प्रधान द्वारा कोई आवासीय या उपयोगी भूमि आवंटित नहीं की गईग्रामीणों ने मुख्यमंत्री से मांग की है कि ग्राम समाज की परती भूमि को अवैध कब्ज़े से मुक्त कराया जाए।

गोवंशों को मिलेगा साइलेज तेलंगाना की कंपनी को टेंडर

कार्यालय संवाददाता, कन्नौज

- मक्का के दूधिया दाने से बनता है पशुओं का हरा चारा

अमृत विचार। जिलेभर के गो-आश्रय स्थलों में रहने वाले गोवंशों को साइजेल मुहैया कराया जाएगा। यह सूखे चारे यानि भूसा से काफी बेहतर माना जाता है। साइलेज उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी तेलंगाना की एक कंपनी को मिली है।

जनपद में करीब 168 गोशालाएं हैं। तकरीबन 9 हजार निराश्रित पशुओं की व्यवस्था गो-आश्रय स्थल आदि में की गई है। इनके भरण-पोषण के लिए बजट पशु पालन विभाग जारी करता है। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी (सीवीओ) डॉक्टर सरदूल सिंह ने बताया कि साइलेज को मक्का के दूधिया दाना से बनाया जाता है। 2550 क्विंटल चारे का टेंडर 738 रुपये प्रति क्विंटल की दर से तेलंगाना की एक संस्था को हुआ है। करीब 400 क्विंटल की सप्लाई भी हो चुकी है। इसे गोशालाओं में दिया जाएगा।

बताया कि भूसा या सूखे चारे की अपेक्षा साइलेज पशुओं के लिए अच्छा है। स्वास्थ्य के साथ दूध का उत्पादन भी ठीक रहता है।

बताया गया है कि वर्तमान में भूसे का रेट 1300 रुपये प्रति क्विंटल के आसपास है। हालांकि विभाग ने अप्रैल से जून के बीच जब गेहूं की कटाई होती है उस समय 795 रुपये प्रति क्विंटल में भूसा का टेंडर दे दिया था। इसी रेट में गो-आश्रय स्थलों को भेजा जा रहा है। उन्होंने बताया कि साइलेज का रेट कम है और वह गोवंशों के लिए अच्छा भी माना गया है।

सरदूल सिंह, सीवीओ।

जानिए साइलेज के बारे में

- यह संरक्षित, रसीला हरा पौष्टिक चारा है। हवा रहित स्थिति में इसे तैयार किया जाता है। सूखे चारे की तुलना में अधिक पोषक तत्व व ऊर्जा देता है। चारे की कमी के दौरान पशुओं को खिलाया जाता है। यह चारा लंबे समय तक संरक्षित रहता है। मक्का, ज्वार, बाजारा व हरी घास जैसी फसलों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर या पीसकर बनाया जाता है। इससे दूध का उत्पादन बढ़ता है। पशुओं को ऊर्जा मिलती है। इसमें प्रोटीन, खनिज व ऊर्जा होती है। ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में प्राकृतिक बैक्टीरिया शर्करा को लैक्टिक एसिड में बदल देते हैं जो चारे को संरक्षित करता है।

जिले को विकास में 11वां राजस्व में 32वां स्थान

कार्यालय संवाददाता, कन्नौज

- कन्नौज की संयुक्त रूप से प्रदेश में 18वीं रैंक आई है

अमृत विचार। सीएम डैशबोर्ड यानि दर्पण पोर्टल पर जनपद ने विकास कार्यों में 11 वां, राजस्व में 32वां स्थान पाया है। संयुक्त रूप से प्रदेश में रैंकिंग 18वीं आई है।

कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी आशुतोष मोहन अग्निहोत्री ने बैठक में स्पष्ट किया कि निरंतर निगरानी, समीक्षा और विभागीय समन्वय से आगामी रैंकिंग में और बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। आगे कहा कि सभी अधिकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में शिथिलता न बरतें और लक्ष्य के अनुरूप कार्य करें। कुछ योजनाओं में बेहतर प्रदर्शन होता तो जनपद की स्थिति और सुदृढ़ हो सकती थी। समाज कल्याण विभाग, पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, उद्योग विभाग एवं राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की योजनाओं में पिछड़ी रैंकिंग पर उन्होंने चिंता जताई और इनमें शीघ्र सुधार लाने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने कहा कि गोवंश सड़कों पर किसी भी दशा में दिखाई नहीं देना चाहिए। इसके लिए प्रभावी कार्रवाई करें। अंडा उत्पादन को बढ़ावा देने पर भी फोकस किया जाए।

डीएम ने कहा कि छात्रवृत्ति योजना, ओडीओपी, मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास योजना, विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना, पंचायती राज 15वें वित्त आयोग तथा आजीविका मिशन जैसी योजनाओं में अपेक्षित प्रगति न होने से जनपद की रैंकिंग प्रभावित हुई है।

हॉर्टीनेट पोर्टल पर पंजीकरण के महत्व व उसकी प्रक्रिया बताई

कार्यालय संवाददाता, कन्नौज

अमृत विचार। कृषि एवं औद्यानिक फसलों के निर्यात को प्रोत्साहित करने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला हुई। विकास खंड सदर क्षेत्र की ग्राम पंचायत नजरापुर में भारत सरकार की संस्था कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) की ओर से कई जानकारियां दी गईं।

जिला उद्यान अधिकारी सीपी अवस्थी ने बताया कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य जनपद में कृषि एवं औद्यानिक उत्पादों विशेष रूप से आलू के निर्यात की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा करना रहा। किसानों एवं संबंधित हितधारकों को जागरूक किया गया है। इस अवसर पर एपीडा के प्रतिनिधि आलोक मिश्र ने एपीडा की योजनाओं, कार्यों, पंजीकरण प्रक्रिया, कृषि एवं औद्यानिक उत्पादों के निर्यात की जानकारी दी। जिला उद्यान अधिकारी ने उद्यान विभाग की योजनाओं के साथ ही हॉर्टीनेट पोर्टल पर पंजीकरण के महत्व व उसकी प्रक्रिया पर बात रखी। जिससे किसान एवं उद्यमी विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम में कई लोग मौजूद रहे।

नजरापुर में किसानों के बीच अपनी बात रखते डीएचओ सीपी अवस्थी।

- नजरापुर में कार्यशाला में एपीडा के प्रतिनिधि पहुंचे

प्रलोभन देकर धर्मांतरण कराने वाले तीन आरोपी गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता कन्नौज

अमृत विचार। थाना ठठिया पुलिस ने प्रलोभन देकर धर्मांतरण कराने वाले 03 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनको न्यायालय में पेश कर जेल भेजा गया।

सीओ सदर अभिषेक प्रताप अजेय ने बताया कि 8 दिसंबर 2025 को तिर्वा कोतवाली क्षेत्र के गांव लोहामढ़ निवासी अन्नू बाबू पुत्र शिवमंगल सिंह ने गांव करसाह थाना ठठिया जनपद कन्नौज निवासी पन्नालाल, विद्यासागर, उमाशंकर दोहरे पुत्र रामस्वरूप दोहरे निवासीगण करसाह थाना ठठिया जनपद कन्नौज के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि गांव करसाह में बिना अनुमति के चर्च का निर्माण किया गया। महिला, पुरुष एवं बच्चों को बहला फुसलाकर एवं प्रलोभन देकर हिन्दू से ईसाई धर्म में परिवर्तित कराने का काम किया जा रहा है। विवेचना के क्रम में थाना ठठिया पुलिस ने उक्त मुकदमें से संबंधित आरोपियों को खास सूचना पर नहर पुल खैरनगर थाना ठठिया से गिरफ्तार किया। इनके कब्जे से ईसाई धर्म के प्रचार प्रसार से सम्बंधित भारी मात्रा में सामग्री बरामद की गई है।

खुलासा करते सीओ। अमृत विचार

नि:शुल्क नेत्र शिविर में 159 नेत्र रोगियों का हुआ परीक्षण

संवाददाता फर्रुखाबाद

अमृत विचार। शहर के रेलवे रोड स्थित मॉडर्न पब्लिक स्कूल परिसर में लॉयंस क्लब फर्रुखाबाद सिटी की ओर से नि:शुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया गया जिसमें करीब 159 नेत्र रोगियों का नि:शुल्क परीक्षण किया गया,जिनमें से करीब 54 मरीजों का मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए चुना गया।

इस शिविर में ''शंकरा आई हॉस्पिटल'' कानपुर (मंधना रोड) से प्रशिक्षित डॉक्टर्स की पूरी टीम ने मरीजों का परीक्षण किया। जो मरीज मोतियाबिंद से पीड़ित थे उन्हे ऑपरेशन के लिये बस द्वारा हॉस्पिटल ले जाया गया। इसके पश्चात उन्हे खाना, चश्मा, साप्ताहिक चेकअप लॉयंस क्लब की ओर से नि:शुल्क उपलब्ध कराया गया। मॉडर्न पब्लिक स्कूल की डॉ. अम्बिका शर्मा, अरुण शाक्य, निर्दोष शुक्ला, श्रवण शुक्ला आदि टीम ने सहयोग प्रदान किया।

इसके साथ ही लॉयंस क्लब की टीम ने कड़ाके की ठंड के बीच राहगीरों और मुसाफिरों को राहत देने के लिए चाय-बिस्कुट वितरण कार्यक्रम शुरू किया गया।

इस सेवा कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सर्द मौसम में यात्रा कर रहे लोगों को गर्म चाय और बिस्कुट उपलब्ध कराकर उन्हें ठंड से कुछ राहत प्रदान करना है।

लायंस क्लब के शिविर में नेत्र परीक्षण करते चिकित्सक। अमृत विचार

- लॉयंस क्लब फर्रुखाबाद सिटी के तत्वावधान में हुआ आयोजन

कार की टक्कर से जोमैटो डिलीवरी ब्वॉय घायल

फर्रुखाबाद। फतेहगढ़ थाना क्षेत्र अंतर्गत भोलेपुर चौकी के पास सोमवार की देर रात सड़क हादसा हो गया। कार ने जोमैटो डिलीवरी बॉय को जोरदार टक्कर मार दी, वह गंभीर रूप से घायल हो गया।

कार फतेहगढ़ चौराहे की ओर से तेज गति में आ रही थी, जबकि जोमैटो डिलीवरी बॉय नेकपुर चौरासी की दिशा से अपनी बाइक से जा रहा था। जैसे ही दोनों वाहन भोलेपुर चौकी से कुछ कदम दूर ट्रांसफार्मर के पास पहुंचे, तभी कार ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। जिससे डिलीवरी बॉय की बाइक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और युवक सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल जोमैटो डिलीवरी बॉय को एंबुलेंस की मदद से लोहिया अस्पताल रेफर किया गया, जहां उसकी हालत गंभीर बताई जा रही है।

श्री रामनगरिया मेला में ब्रह्माकुमारी प्रदर्शनी पंडाल का हुआ शुभारंभ

संवाददाता फर्रुखाबाद

अमृत विचार। श्रीरामनगरिया पांचालघाट में ब्रह्माकुमारी प्रदर्शनी पंडाल का विधि-विधान से शुभारंभ किया गया। उद्घाटन श्री श्री 108 स्वामी ईश्वरदास जी महाराज (पीठाधीश्वर), श्री श्री सुरेशानंद महाराज (नैमिषारण्य धाम, सीतापुर), श्री त्यागी जी महाराज (नीम करोली धाम) और मयंक महाराज (मानस मधुकर, कानपुर) ने फीता काटकर किया।

जगद्गुरु महाराज कानपुर ने अपने वक्तव्य में कहा कि रामचरित मानस के अनुसार माताओं की महिमा बहुत है। जिन लोगों ने अपना जीवन स्वयं ही राम स्वरूप परमात्मा को सेवार्थ अर्पण कर दिया हो उनका क्या ही कहना। सत्यनारायण मिश्र 'मधुप' ने कहा कि हमारी ही ऐसी संस्कृति है जिसमें पशु, नदी, पौधा एवं भारत भूमि को माता का दर्जा दिया गया हो। हमारी ही संस्कृति में माता का स्थान सर्वोपरि है।अनंत श्री विभूषित 1008 सुरेशानंद जी महाराज नैमिषारण्य धाम सीतापुर ने कहा कि हमारे पूर्वजों के समय की नारी को देखें तो आज की नारी की मनोस्थिति के साथ उनकी अवस्था विचारणीय है। समाज के बदलाव के लिए सभी महिलाओं को सशक्त होने की बहुत आवश्यकता है। त्यागी जी महाराज (नीमकरोरी धाम) ने कहा कि संसार की संस्कृति में तीन मुख्य बिंदु ज्ञान, भक्ति और वैराग्य हैं। भक्ति से कोई भी संपूर्ण नहीं बन सकेगा। उसे ज्ञान की दीक्षा लेनी ही होगी।

ब्रह्माकुमारी प्रदर्शनी पंडाल में मौजूद संत। अमृत विचार

- केंद्र संचालिका ने किया संतों व कल्पवासियों का अभिनंदन

शोभायात्रा निकाली | महिलाओं एवं पुरुषों ने भव्य शोभा यात्रा निकालकर शांति और मानवता का संदेश जन-जन तक पहुंचाया

मेला श्रीरामनगरिया में शांति महोत्सव का भव्य आयोजन

संवाददाता फर्रुखाबाद

अमृत विचार। मेला रामनगरीय में आयोजित शांति महोत्सव ने पूरे क्षेत्र को मानवता, प्रेम और सद्भाव के रंग में रंग दिया। इस अवसर पर विश्व विख्यात शांति संदेशवाहक डॉ. प्रेम रावत के विचारों से प्रेरित होकर सैकड़ों की संख्या में महिलाओं एवं पुरुषों ने भव्य शोभा यात्रा निकालकर शांति और मानवता का संदेश जन-जन तक पहुंचाया।

शोभा यात्रा मेला परिसर के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरी, जहां हाथों में तख्तियां, बैनर और शांति के संदेश लिए श्रद्धालु अनुशासन और उत्साह के साथ चलते नजर आए। विश्व शांति, मानवता सर्वोपरि, प्रेम और सद्भाव जैसे नारों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। शांति महोत्सव के दौरान वक्ताओं ने कहा कि डॉ. प्रेम रावत का संदेश व्यक्ति के भीतर शांति खोजने और उसे समाज में फैलाने की प्रेरणा देता है। कार्यक्रम में महिलाओं, युवाओं और बुजुर्गों की समान भागीदारी ने आयोजन को और भी विशेष बना दिया। शांति महोत्सव के माध्यम से यह संदेश स्पष्ट रूप से दिया गया कि धर्म, जाति और वर्ग से ऊपर उठकर मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कार्यालय का शुभारंभ: मेला रामनगरिया में श्रद्धालुओं, कल्पवासियों एवं आमजन को त्वरित न्यायिक सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मंगलवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कार्यालय का शुभारंभ किया गया। कार्यालय का उद्घाटन अपर जिला जज (षष्ठम) संजय कुमार द्वारा विधिवत रूप से किया गया।

इस अवसर पर अपर जिला जज संजय कुमार ने कहा कि मेला रामनगरिया में लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। ऐसे में किसी भी प्रकार की कानूनी समस्या, विवाद या मार्गदर्शन की आवश्यकता होने पर यह कार्यालय आमजन के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होगा। उन्होंने बताया कि विधिक सेवा प्राधिकरण के माध्यम से जरूरतमंदों को निःशुल्क कानूनी सहायता, की जानकारी दी जाएगी।

शोभायात्रा में शामिल श्रद्धालु महिलाएं। अमृत विचार

कुलपति का विदाई समारोह आज

फर्रुखाबाद। मेजर एसडी सिंह विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति डॉ रंगनाथ मिश्र के कार्यकाल की पूर्णता के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के सभागार में बुधवार 14 जनवरी को अपराह्न एक बजे विदाई समारोह का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए कुलसचिव रणजीत यादव ने बताया कि समारोह में विश्वविद्यालय के संरक्षक डॉ बाबू सिंह यादव, कुलाधिपति डॉ अनार सिंह चेयरपर्सन डॉ अनीता यादव सहित समस्त विश्वविद्यालय परिवार, शिक्षकों एवं गणमान्य अतिथि भी उपस्थित रहेंगे।

कार्यालय नगर पालिका परिषद गुरसहायगंज, जनपद-कन्नौज

संख्या: 943 न0पा0प0, गुर0गंज (2025-26) दिनांक: 13.01.2026

सार्वजनिक सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका परिषद गुरसहायगंज, स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत नागरिकों को कूड़ा के स्रोत पर पृथक्कीकरण के सम्बन्ध में जागरूक करने, स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समिति के सदस्यों की क्षमता संवर्धन एवं निदेशालय, नगरीय निकाय उ0प्र0 द्वारा निर्धारित एस0ओ0पी0 के तहत विभिन्न आई0ई0सी0 गतिविधियां किये जाने हेतु एन0जी0ओ को नियुक्त करना चाहती है।

अतः जो भी एन0जी0ओ0 उपरोक्त कार्य में रूचि एवं पर्याप्त अनुभव रखते हों वह अपना प्रस्ताव मय दस्तावेज नगर पालिका कार्यालय में दिनांक 20.01.2026 तक प्रस्तुत कर सकते हैं।

एन0जी0ओ0 का नियुक्त करने का अंतिम निर्णय पालिका सक्षम अधिकारी में निहित होगा, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति मान्य नहीं होगी।

(अनिल कुमार) अधिशासी अधिकारी

(मुन्नी देवी) अध्यक्ष

न्यूज ब्रीफ

कचहरी में खिचड़ी वितरण कार्यक्रम कल

इटावा। चौधरी शंकर दयाल दीक्षित स्मारक संस्थान द्वारा संचालित श्री शंकर धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय राहतपुर एवं भारत विकास परिषद धर्मार्थ सेवा शाखा के संयुक्त तत्वावधान में मकर संक्रांति पर्व के उपलक्ष्य में 15 जनवरी को गत वर्षों की भांति कचहरी परिसर में खिचड़ी का वितरण किया जाएगा। उन्होंने संस्था से जुड़े सभी सम्मानित सदस्यों से खिचड़ी वितरण कार्यक्रम में भाग लेने का अनुरोध किया है।

न्यायालयों में कल रहेगा अवकाश

इटावा। उच्च न्यायालय इलाहाबाद के निर्देश पर न्यायालयों में मकर संक्रांति का अवकाश 15 जनवरी को किया गया। जजशिप इटावा के समस्त न्यायालय व कार्यालय तथा ग्राम न्यायालय सैफई व चकरनगर के समस्त न्यायालय व कार्यालय बंद रहेंगे। यह जानकारी जिला जज रजत सिंह जैन ने दी।

छात्रवृत्ति के लिए आज करें आवेदन

इटावा। जिला समाज कल्याण अधिकारी संध्या रानी बघेल ने बताया कि शैक्षिक सत्र 2025-26 में सामान्य वर्ग, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक वर्ग हेतु दशमोत्तर छात्रवृत्ति व शुल्क प्रतिपूर्ति योजनान्तर्गत छात्र/छात्राओं द्वारा ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करने की अंतिम तिथि 14 जनवरी एवं ऑनलाइन आवेदन पत्र फाइनल सबमिशन करने की अंतिम तिथि 17 जनवरी है।

भरथना के युवक की संदिग्ध हालात में आगरा में मौत

भरथना। कस्बे के एक मोहल्ले के युवक का शव आगरा में संदिग्ध हालात में कमरे में फांसी के फंदे पर लटका मिला। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और साक्ष्य जुटाकर मामले की जांच पड़ताल में जुट गयी। जैसे ही युवक का शव भरथना थाना क्षेत्र अंतर्गत पैतृक गांव पहुंचा परिजनों में चीख पुकार के साथ कोहराम मच गया। मोहल्ला आदर्श नगर निवासी राजू यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि मेरा छोटा बेटा अनूप उम्र करीब 26 वर्ष करीब तीन वर्ष से आगरा में होटल मैनेजमेंट का कोर्स कर रहा था। बीते दो माह पूर्व आगरा के ही एक होटल में होटल मैनेजर के पद पर कार्य कर रहा था। सोमवार की देर रात करीब आठ बजे बेटे के रूम पार्टनर द्वारा फोन पर बताया कि मेरे बेटे ने फांसी लगा ली है। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम हेतु भेजा। मामले की जांच की जा रही है।

छात्र की गोली मारकर हत्या करने में दो आरोपी मुठभेड़ में दबोचे

पुलिस द्वारा की गई जवाबी कार्रवाई में एक आरोपी के पैर में लगी गोली

कार्यालय संवाददाता इटावा

अमृत विचार। अपने दोस्त की जन्म दिन पार्टी में एक किशोर की गोली मारकर हत्या करने वाले दो आरोपियों को एसओजी टीम व बसरेहर थाना पुलिस ने संयुक्त कार्यवाही करते हुए मात्र 14 घण्टे के अन्दर मुठभेड में गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के द्वारा की गई जवाबी कार्रवाई में एक आरोपी के पैर में गोली लगी जिससे वह घायल हो गया। आरोपियों के पास से तमंचा कारतूस व बाइक भी बरामद हुई है। पुलिस ने दोनों को आवश्यक कार्रवाई के बाद जेल भेज दिया।

भरथना थाना क्षेत्र के गांव झिंदुआ निवासी रविन्द्र कुमार पुत्र स्व. नाहर सिंह यादव ने थाना बसरेहर पर दर्ज कराई रिपोर्ट में आरोप लगाया कि 12 जनवरी को उसका पुत्र एलिस यादव उर्फ कृष्णा अपने दोस्त अंकित निवासी ग्राम नगला बल्लभ के यहां बर्थडे पार्टी

हत्यारोपियों को ले जाती पुलिस। अमृत विचार

- **हत्या में प्रयुक्त तमंचा कारतूस व बाइक भी हुई बरामद**

में गया था जहां अतुल निवासी ग्राम संतोषपुर घाट से पार्टी के दौरान किसी बात को लेकर मेरे पुत्र कृष्णा यादव उर्फ एलिस से कहासुनी हो गई। इसी दौरान अतुल ने मेरे पुत्र को जान से मारने की धमकी दी। विवाद होने के बाद उसका पुत्र वापस अपने घर आ रहा था तभी अतुल ने अपने दोस्त के साथ मोटर साइकिल पर आकर सिरसा रोड चम्पानेर तिराहे के पास मेरे पुत्र की गोली मारकर हत्या कर दी। मामला दर्ज होने के बाद एसओजी टीम एवं थानाध्यक्ष बसरेहर सौरभ सिंह टीम के साथ आरोपियों की तलाश में ग्राम पत्तापुरा नहर पटरी के पास चेकिंग कर रहे थे। इसी दौरान मोटर साइकिल सवार दो लोग आते हुए दिखाई दिये जिन्हें पुलिस टीम द्वारा रुकने का इशारा किया गया तो उनके द्वारा पुलिस टीम पर जान से मारने की नीयत से फायर किया गया जिस पर पुलिस टीम द्वारा आत्मरक्षार्थ जवाबी फायरिंग की गयी तो एक गोली आरोपी अतुल पुत्र महेन्द्र पाल निवासी संतोषपुर घाट बसरेहर के बायें पैर में लगी। उसे पुलिस ने घायल अवस्था में उसके साथी पंकज पुत्र शिवनाथ निवासी संतोषपुर घाट बसरेहर सहित गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से एक तंमचा, दो खोखा कारतूस, दो जिन्दा कारतूस, घटना में प्रयुक्त मोटर साइकिल बरामद की। पूछताछ करने पर उनके द्वारा बताया गया कि थाना बसरेहर क्षेत्रान्तर्गत ग्राम किल्ली रोड चम्पानेर मोड़ के पास एलिस यादव उर्फ़ कृष्णा पुत्र रविन्द्र सिंह निवासी ग्राम झिंदुआ भरथना की विवाद होने के बाद गोली मारकर हत्या की है। पुलिस ने दोनों को जेल भेज दिया।

हादसे में घायल युवक की इलाज के दौरान मौत

जसवंतनगर। थाना क्षेत्र के अंतर्गत रविवार की शाम को राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक होटल के सामने सड़क पार करते समय अज्ञात वाहन की चपेट में आ जाने से गंभीर घायल हुए क्षेत्र के मलाजनी निवासी 35 वर्षीय युवक राजू पुत्र गौरी शंकर का सोमवार को देर रात इलाज के दौरान मौत हो गई।

रविवार देर शाम को घटना के दिन हादसे में घायल राजू की खबर सुनकर परिवारीजन तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे थे और उसे गंभीर अवस्था में जिला अस्पताल में भर्ती कराया था। जहां डॉक्टरों ने गंभीर घायल राजू की चिंताजनक हालत को देखते हुए उसी दिन सैफई पीजीआई के लिए रेफर कर दिया था। सोमवार देर रात इलाज के दौरान घायल राजू की मौत हो गई। सूचना पर पहुंचे उप निरीक्षक शिव शंकर सिंह ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। बताया गया है कि मृतक शादीशुदा था और शादी के बाद से ही पत्नी से अनबन के कारण पत्नी मृतक राजू को छोड़कर चली गई थी। वह मेहनत मजदूरी करके जीवन यापन करता था।

सिंचाई संघ नलकूप खंड प्रथम की बैठक आयोजित

संवाददाता चकरनगर

- **द्विवार्षिक अधिवेशन व चुनाव को लेकर सदस्यों से सक्रियता की अपील**

अमृत विचार । मंगलवार को कस्बा हनुमंतपुरा में सिंचाई संघ स्थानीय शाखा नलकूप खंड प्रथम इटावा की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में सिंचाई संघ नलकूप खंड इटावा के जिला संयोजक रामतेज सिंह एवं वेदप्रकाश मिश्रा मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित रहे। बैठक में मौजूद संघ सदस्यों को अवगत कराया कि प्रांतीय सिंचाई संघ द्वारा पत्र जारी कर नलकूप खंड इटावा में संघ का द्विवार्षिक अधिवेशन एवं चुनाव कराए जाने को अति आवश्यक बताया है।

जिला संयोजक रामतेज यादव ने बताया कि द्विवार्षिक अधिवेशन व चुनाव प्रक्रिया संपन्न कराने के लिए नलकूप खण्ड प्रथम शाखा के सभी सदस्यों, विशेषकर नलकूप चालकों का सिंचाई संघ उत्तर प्रदेश का पंजीकृत सदस्य होना अनिवार्य है। इसके लिए नलकूप चालक जिला संयोजक नलकूप खंड इटावा से संपर्क कर संघ की सदस्यता ग्रहण करें, ताकि समय रहते अधिवेशन एवं चुनाव की प्रक्रिया पूरी की जा सके। बैठक में उपस्थित सदस्यों ने इस प्रस्ताव पर सहमति जताते हुए संघ को मजबूत बनाने और संगठनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाने का संकल्प लिया। सदस्यों ने कहा कि अधिवेशन व चुनाव से संगठन को नई दिशा मिलेगी तथा नलकूप चालकों की समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठाया जा सकेगा। इस अवसर पर धीरेन्द्र त्रिपाठी, अशोक कुमार, सिचाई पर्यवेक्षक प्रताप सिंह, उदयबीर सिंह, दिनेश चंद्र, अनुज कुमार राजोरिया, महावीर प्रसाद, लालजीत सिंह, उदयवीर सिंह सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

बैठक में बोलते जिला संयोजक रामतेज।

भरथना में दो बाइकों की भिडंत में पांच घायल

संवाददाता भरथना

अमृत विचार। कस्बा के भरथना बकेवर मार्ग पर तेज रफ़्तार के चलते दो बाइकों की भिडंत में स्कूली छात्र समेत कुल पांच लोग घायल हो गये।

गांव बिरौधी निवासी सत्यम पुत्र श्यामलाल तथा योगेश पुत्र रामलाल अपने साथी आर्यन के साथ बाइक पर सवार होकर भरथना से गांव की ओर जा रहे थे तभी पाली बम्बा के समीप भरथना बकेवर मार्ग पर खड़े राजागंज निवासी 15 वर्षीय छात्र प्रान्जुल पुत्र ब्रजेश कुमार ने स्कूल तक लिफ्ट देने की बात कही जिस पर बाइक सवारों ने छात्र को अपने साथ बाइक पर बैठा लिया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार बाइक सवार तेज रफ्तार से बकेवर की ओर जा रहे थे तभी गांव कुंवरा में बकेवर की ओर से आ रहे बाइक सवार विकास यादव पुत्र सर्वेश यादव निवासी लखना की बाइक से जोरदार भिडंत हो गयी। हस हादसे में दोनों बाइकों पर सवार लोग घायल हो गए। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से दो महिलाएं घायल

- **जसवंत नगर।** राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित एक स्कूल के सामने सोमवार देर शाम सुंदरपुर गांव निवासी 80 वर्षीय अवनीश कुमारी पत्नी रमेश चंद्र और 40 वर्षीय ललिता देवी पत्नी संदीप राजमार्ग पार कर रही थीं। इसी दौरान तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने दोनों को टक्कर मार दी। गईं। तत्काल एंबुलेंस की मदद से दोनों घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। चिकित्सकों ने हालत गंभीर देखते हुए दोनों को सैफई मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया।

ज्ञानस्थली स्कूल में धूमधाम से मनाई विवेकानंद जयंती

कार्यालय संवाददाता इटावा

अमृत विचार। ज्ञानस्थली विद्यालय करवा खेड़ा में राष्ट्रीय युवा दिवस हर्ष के साथ मनाया गया। विद्यालय की प्रार्थना सभा के पश्चात ज्ञानस्थली विद्यालय समिति के चेयरमैन शिवप्रसाद यादव ने स्वामी विवेकानंद की मूर्ति के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर पुष्प चढ़ाया।

चेयरमैन शिवप्रसाद यादव ने शीतकालीन अवकाश के चलते विद्यालय के सभी युवा छात्र-छात्राओं को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राष्ट्रीय युवा दिवस की बधाई दी और राष्ट्र के सभी युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि युवा किसी भी राष्ट्र की 'नींव' होते हैं। इसी युवा शक्ति को समर्पित राष्ट्रीय युवा दिवस या नेशनल यूथ डे स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में हर साल मनाया जाता है। यह दिन भारत की युवा शक्ति को समर्पित है। यह दिन युवाओं को उनके विचारों और ऊर्जा को देश के विकास में लगाने के लिए

कार्यक्रम में बच्चों के साथ मौजूद शिव प्रसाद यादव। अमृत विचार

- **राष्ट्रीय युवा दिवस सशक्त भारत की पहचान : शिवप्रसाद यादव**
- **एबीवीपी ने किया संत विवेकानंद में विचार गोष्ठी का आयोजन**

प्रेरित करता है। स्वामी विवेकानंद की जयंती पर हम संकल्प लें कि हम अपने जीवन को एक उद्देश्य के साथ जीएंगे, अपने भीतर छिपी शक्ति और विवेक को पहचानेंगे, अपने सपनों को हकीकत में बदलने के लिए मेहनत करेंगे तथा अपनी ऊर्जा से समाज और देश की उन्नति को संभव बनायेंगे। कार्यक्रम में विद्यालय प्रबंधन समिति प्रमुख शिवमंगल, खेल विभाग प्रमुख वासिफ खान, वित्त विभाग प्रमुख नीरज त्रिपाठी व विद्यालय परिवार के सभी शिक्षकगण उपस्थित रहे।

नगर संवाददाता के अनुसार राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर एबीवीपी नगर इकाई द्वारा संत विवेकानंद सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल में संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कानपुर के प्रांतीय मंत्री दिनेश यादव ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। संस्था के प्रधानाचार्य/निदेशक डॉक्टर आनन्द ने मुख्य अतिथि दिनेश यादव एवं सोमू जिला संगठन मंत्री को प्रतीक चिन्ह देकर स्वागत किया। संगोष्ठी में एबीवीपी के नगर मंत्री संस्कार गुप्ता, प्रांत कार्यकारणी सदस्य राहुल राजपूत, कार्यकर्ता पवन दुबे, ओम कुशवाह भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन चित्रा परिहार ने किया।इसके अलावा पानकुंवर इंटरनेशनल स्कूल में स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर युवा दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों द्वारा स्वामी विवेकानंद जी के जीवन, विचारों एवं आदर्शों पर आधारित भाषण, निबंध और प्रेरणादायक प्रस्तुतियां दी गईं। विद्यार्थियों ने अपने विचारों के माध्यम से युवाओं को आत्मनिर्भर, अनुशासित और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का संदेश दिया।

स्वामी विवेकानन्द के चित्र पर माल्यार्पण करते डॉ. आनन्द। अमृत विचार

किसान सभा ने आंदोलन तेज करने के लिए फैसले

कार्यालय संवाददाता इटावा

अमृत विचार। सरकार खेती को पूरी तरह कारपोरेट के हवाले करने पर आमादा है और जनता के ध्यान भटकाने के लिए साम्प्रदायिक नफरत फैला रही है। मनरेगा का खात्मा, बिजली का निजीकरण, स्मार्ट मीटर, बीज विधेयक तथा कृषि और दुग्ध उत्पादों आदि के लिए विदेशी मगरमच्छ कम्पनियों के लिए दरवाजे खोलने से भारत का किसान बर्बाद हो जायेगा। किसानो-मजदूरों को मिलकर इसका मुकाबला करना होगा।

मां लक्ष्मी देवी के स्मृति दिवस पर नगला बरी में किसान सभा की जिला काउंसिल की बैठक का उदघाटन करते हुए किसान सभा के राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री एवं प्रांतीय महामंत्री मुकुट सिंह ने उक्त अपील करते हुए कहा कि 16 जनवरी को देशव्यापी प्रतिरोध और 12 फरवरी को देशव्यापी आम हडताल का आयोजन संयुक्त किसान मोर्चा एवं केन्द्रीय ट्रेड यूनियनो द्वारा किया जा रहा है। गांव-गांव तक प्रचार कर इसे सफल बनाना होगा। उन्होने कहा कि 16 जनवरी को इटावा कचहरी और ताखा तहसील पर प्रतिरोध, 26 जनवरी को जिले में ट्रैक्टर परेड, 4

जिला काउंसिल बैठक को सम्बोधित करते कामरेड मुकुट सिंह। अमृत विचार

16 जनवरी को इटावा कचहरी पर होगा प्रदर्शन

फरवरी को सरसईनावर के कामरेड शमशेर खां एवं मास्टर रघुनाथ सिंह की स्मृति में आम सभा तथा 11 मार्च को नगला ढकाऊ, ताखा में शहीदों के सम्मान में आम सभा का आयोजन किया जायेगा। अध्यक्षता रामबृजेश यादव जिलाध्यक्ष ने तथा संचालन जिलामंत्री मंत्री संतोष शाक्य ने किया। उपाध्यक्ष रामवरन सिंह, शिवराम सिंह, पूर्व जिलाध्यक्ष विश्राम सिंह यादव, संयुक्त मंत्री संतोष राजपूत, विवेक यादव, काउंसिल सदस्य राजेश्वरी यादव, वर्षा कठेरिया, दर्शना देवी ने भी विचार व्यक्त किए। श्रद्धांजली के साथ बैठक का समापन किया गया।

फैमिली आईडी बनाने पर जोर

महेवा। स्थानीय ब्लॉक सभागार में सहायक विकास अधिकारी पंचायत इंद्रपाल सिंह की अध्यक्षता में ब्लॉक क्षेत्र के सभी पंचायत सहायकों एवं सफाई कर्मियों की एक बैठक हुई। जिसमें भारत सरकार के कर्मयोगी पोर्टल यानी आईजीओटी पर प्रत्येक कर्मी को अलग अलग कोर्स में कम से कम पांच सर्टिफिकेट जारी करने का निर्देश दिया गया । सहायक विकास अधिकारी पंचायत इंद्रपाल सिंह भदौरिया ने सभी पंचायत सहायकों से फैमिली आईडी बनाने तथा सभी से सुबह समयानुसार अपनी ग्राम पंचायत में पहुंचकर ऑनलाइन उपस्थिति देने का भी निर्देश दिया। इस मौके पर कई लोग मौजूद रहे।

शादी का झांसा देकर शोषण का आरोप

संवाददाता इटावा

अमृत विचार। थाना फ्रेंड्स कॉलोनी क्षेत्र में यूपी पुलिस में तैनात एक दरोगा के छोटे भाई पर दरोगा की साली को शादी का झांसा देकर करीब पांच साल तक शारीरिक शोषण करने का आरोप लगाया गया है। आरोपी युवक ने शादी से इनकार कर दिया तब पीड़िता ने थाने पहुंचकर न्याय की गुहार लगाई।

पीड़िता की तहरीर मिलने के बाद थाना फ्रेंड्स कॉलोनी पुलिस ने मामले को संज्ञान में लेते हुए मुकदमा दर्ज किया। इसके बाद पुलिस ने कार्यवाही करते हुए आरोपी अभिषेक पुत्र रामनरेश निवासी ग्राम इटगांव को फ्रेंड्स कॉलोनी क्षेत्र की रेलवे कॉलोनी से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद आरोपी का मेडिकल परीक्षण कराया गया और फिर उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। क्षेत्राधिकारी नगर अभय नारायण राय ने जानकारी देते हुए बताया कि पीड़िता द्वारा दर्ज कराए गए मुकदमे के आधार पर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की गई है। उन्होंने बताया कि आरोपी का बड़ा भाई यूपी पुलिस में दरोगा के पद पर तैनात है और पीड़िता उसकी साली है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जनपद में 28 फरवरी तक निषेधाज्ञा लागू

इटावा। जिले में आगामी त्योहारों, राष्ट्रीय कार्यक्रमों और जनवरी-फरवरी माह में होने वाली विभिन्न परीक्षाओं के मद्देनजर निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है।

अपर जिला मजिस्ट्रेट अभिनव रंजन श्रीवास्तव ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत आदेश जारी किया है। यह निषेधाज्ञा 12 जनवरी से 28 फरवरी तक प्रभावी रहेगी। एडीएम ने बताया कि 14-15 जनवरी को मकर संक्रांति, 23 जनवरी को बसंत पंचमी और नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती हैं। इसके अलावा कई महत्वपूर्ण परीक्षाएं भी आयोजित होनी हैं। शांति व्यवस्था भंग होने की आशंका के मद्देनजर यह निर्णय लिया गया है।

खेल प्रतियोगिता | युवा कार्य व खेल मंत्रालय भारत सरकार के मेरा युवा भारत की ओर से हुआ आयोजन

रोशन, कविता, आशीष व कीर्ति को मिला प्रथम स्थान

कार्यालय संवाददाता इटावा

अमृत विचार । युवा कार्य व खेल मंत्रालय भारत सरकार के मेरा युवा भारत की ओर से जिला स्तरीय खेल कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न खेलों में युवाओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कबड्डी प्रतियोगिता महिला वर्ग में चौधरी सुघर सिंह जसवंतनगर ने हिंदू विद्यालय जसवंतनगर की टीम को 12-09 से हराकर विजय हासिल की।

यहां ज्योतिबाफुले स्टेडियम में आयोजित खेलकूद में युवक वर्ग की वॉलीबॉल प्रतियोगिता में सैफई और पाली भरथना के रोमांचक मुकाबले में 27-25 से सैफ़ई ने जीत हासिल की। महिला वर्ग के वॉलीबॉल में एसपीएस जसवंतनगर विजेता रहा। सुघर सिंह जसवंतनगर उपविजेता रहा। युवक वर्ग की 400 मीटर दौड़ में रोशन प्रथम, आकाश द्वितीय, नारायण तृतीय स्थान पर रहे। युवती वर्ग की 200 मीटर दौड़ में कविता प्रथम, संध्या द्वितीय, ख़ुशी तृतीय स्थान पर रही । लंबी कूद युवक वर्ग में आशीष प्रथम, सुमित द्वितीय, ऋषभ तृतीय स्थान पर रहे । लंबी कूद युवती वर्ग में कीर्ति प्रथम, प्रतिज्ञा द्वितीय व साक्षी तृतीय स्थान पर रही । बैडमिंटन युवक वर्ग में अभिनव प्रथम, राम द्वितीय स्थान पर रहे। युवती वर्ग में रिया प्रथम व धानी द्वितीय स्थान पर रही ।

इससे पहले प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य विकास अधिकारी इटावा अजय कुमार गौतम ने स्वामी विवेकानंद के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन कर किया गया। समापन पर सदर विधायक सदर सरिता भदौरिया ने विजेताओं को ट्राफी प्रदान की।

उन्होने सभी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार दिए और राष्ट्रीय युवा दिवस की शुभकामनाएं भी दीं। जिला युवा अधिकारी सोनिका चंद्रा ने बताया कि स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को राष्ट्र की ऊर्जा और अमूल्य धरोहर बताया था। खेल इस ऊर्जा को सही दिशा देने के लिए जरूरी है पूर्व जिला युवा कल्याण अधिकारी हरीश चंद्र तिवारी , मेरा युवा भारत के लेखाकार श्रवण कुमार बाथम , पीटीआई अजय पाल सिंह यादव, वेद प्रकाश, नृपेंद्र चतुर्वेदी, प्रदीप कुमार यादव, अमित यादव आदि लोग मौजूद रहे।

विजेता टीम को ट्राफी देतीं सदर विधायक, साथ में हैं जिला युवा अधिकारी। अमृत विचार

दरगाहों से इंसानियत, मोहब्बत का पैगाम दिया जाता है: सूफी कमरुद्दीन

संवाददाता इटावा

अमृत विचार। हर साल की तरह इस साल भी गंगा जमुनी तहजीब की प्रतीक दरगाह हज़रत अरशद अली उर्फ माशूक अली वाईस ख्वाजगान का तीन दिवसीय सालाना उर्स सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर हज़रत सूफ़ी कमरूद्दीन लियाकती ने कहा कि दरगाहों से इंसानियत, मोहब्बत का पैगाम दिया जाता है। उर्स संयोजक एवं वरिष्ठ पत्रकार मसूद तैमूरी ने बताया कि पहले दिन उर्स शरीफ़ का शुभारंभ बाद नमाज़ फजिर कुरान ख्वानी से हुआ, चादर पोशी की गई। उसके बाद हल्का ए जिक्र किया गया। बाद नमाज़ असर मीलाद शरीफ का आयोजन किया गया जिसमें मौलानाओं, उलेमाओं एवं हाफिजों की मौजूदगी रही। उर्स के दूसरे दिन बाद नमाज़ फजिर कुरान ख्वानी हुई, चादरें एवं गागरे पेश की गई जिसमें जनपद इटावा के अलावा मैनपुरी, औरैया, भिण्ड, मुरैना, जालौन, झांसी, हमीरपुर, उरई, ग्वालिय, श्योपुर सहित विभिन्न जनपदों से आये श्रद्धालुओं ने चादरें एवं गागरे पेश कर शान्ति अमनचैन की दुआ मांगी।

तैमूरी ने बताया कि उर्स के तीसरे व अन्तिम दिन बाद नमाज़ फजिर कुरान ख्वानी हुई, गुसल शरीफ हज़रत अरशद अली उर्फ माशूक अली वाईस खवाजगान हुआ और अंत मे कुल शरीफ का आयोजन किया गया। उर्स में सांसद जितेंद्र दोहरे, श्रीकृष्ण यादव, अतुल वीएन चतुर्वेदी ने चादर पोशी की ।

उर्स में श्रद्धालुओं को आशीर्वाद देते हज़रत सूफ़ी कमरूद्दीन लियाकती। अमृत विचार

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार, 14 जनवरी 2026

न्यूज ब्रीफ

वाहन की टक्कर से हाइट गेज तिरछा हुआ

कंचौसी। भारी वाहनों के आवागमन को रोक लगाने को कंचौसी औरैया रोड पर जमौली गांव के पास लोक निर्माण विभाग द्वारा लगाया गया हाइट गेज रात को किसी वाहन के टक्कर मारने से झुक गया है। जिससे कभी भी गिरने से हादसा का खतरा बढ़ गया गया है। लोगों ने अधिकारियों से हाइट गेज को सही किए जाने की मांग की है। हाल ही में मुख्य मार्ग कंचौसी औरैया रसूलाबाद पर बाबा ब्रह्मदेव मंदिर के पास लोक निर्माण विभाग ने हाइट गेज लगा कर भारी वाहनों के आवागमन पर रोक लगा रखी है जिससे कंचौसी रेलवे फाटक और नहर पुल पर अक्सर लगने वाले जाम से काफी राहत मिली हैं। कस्बे में जाम लगने की वजह से कस्बे के लोगों ने भी भारी वाहनों के कस्बा में प्रवेश पर अंकुश लगाने की मांग की गई थी। जिस पर लोक निर्माण विभाग ने हाइट गेज लगा दिया और ओवर लोड भारी वाहनों का यहां से होकर आना जाना बंद हैं, जिससे मालवाहक भारी वाहन चालकों और गिट्टी मोरंग कारोबारियों में बेचैनी हैं। बताया जाता हैं कि जानबूझ कर किसी वाहन चालक ने है हाइट गेज तोड़ने का असफल प्रयास किया। हाइट गेज बूम तिरछा हो गया, जो कभी गिर सकता हैं।जिससे हादसा के भी खतरा है।

हिंदू सम्मेलन से दिया समरसता का संदेश

दिबियापुर, औरैया। मंगलवार को स्थानीय बस स्टेशन के सामने हिन्दू सम्मेलन का आयोजन हुआ। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष डा. अजब सिंह यादव की अध्यक्षता में आयोजित सम्मेलन के मुख्य अतिथि सेहुद मंदिर के महंत रामप्रिय दास सहित वक्ताओं ने हिन्दू धर्म की एकजुटता पर जोर दिया। दुर्गा वाहिनी की क्षेत्रीय संयोजिका कल्पना चौहान ने बंग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार को निंदनीय बताते हुये कहा कि ऐसी घटनायें मानवता को शर्मसार करने वाली हैं। आचार्य पं. राघवेन्द्र शुक्ला ने हिन्दू एकता पर चर्चा करते हुये कहा कि वर्तमान समय में सभी को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। साहित्यकार मुनीश त्रिपाठी ने हिन्दू धर्म की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुये कहा कि आदिकाल से ही हिन्दू धर्म ने समाज को जोड़ने का काम किया है। सम्मेलन को कवि गोपाल पाण्डेय एवं सुमन आदि कई वक्ताओं ने संबोधित किया। कार्यक्रम के दौरान सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज के छात्र छात्राओं ने सांस्कृतिक झांकिया भी प्रस्तुत कर लोगों की वाहवाही बटोरी। आयोजक अभय दुवे ने अतिथियों का स्वागत करते हुये आभार जताया। कार्यक्रम में नगर पंचायत अध्यक्ष राघव मिश्रा समेत कई लोग रहे।

अवैध संबंधों में युवक की हत्या पत्नी समेत 3 को किया गिरफ्तार

मफलर से गला घोंटकर की गई थी वारदात, घटना में प्रयुक्त बाइक बरामद

कार्यालय संवाददाता, औरैया

अमृत विचार। थाना बेला क्षेत्र में हुई युवक की हत्या का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। थाना बेला व एसओजी/सर्विलांस की संयुक्त टीम ने इस मामले में दो पुरुष और एक महिला समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त मफलर और घटना में इस्तेमाल की गई मोटरसाइकिल भी बरामद की है।

पुलिस के अनुसार 11 जनवरी 2026 को ग्राम कुर्सी और बूंचपुर के बीच नहर की पटरी के पास एक युवक का शव मिलने की सूचना मिली थी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव की पहचान शैलेन्द्र सिंह पाल पुत्र स्व. औसान सिंह पाल निवासी ग्राम कुर्सी थाना बेला के रूप में की। फॉरेंसिक टीम द्वारा साक्ष्य संकलन के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। मृतक के ताऊ मानसिंह पाल की तहरीर पर थाना बेला में मुकदमा दर्ज किया गया।

पुलिस अधीक्षक अभिषेक भारती के निर्देशन में गठित टीमों ने मुखबिर की सूचना पर 13 जनवरी को बेला-तिर्वा रोड बॉर्डर बैरियर पर चेकिंग के दौरान आरोपी अवनीश पाल और रिंकू कठेरिया को गिरफ्तार किया। दोनों के कब्जे से घटना में प्रयुक्त हीरो स्पलेंडर प्लस मोटरसाइकिल बरामद की गई। आरोपियों की निशानदेही पर झाड़ियों से हत्या में इस्तेमाल किया गया मफलर भी बरामद हुआ। पूछताछ में प्रकाश में आई आरोपी अर्चना (पत्नी शैलेंद्र पाल) को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

घटना का खुलासा करते एसपी अभिषेक भारती। अमृत विचार

पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि अवनीश पाल के मृतक की पत्नी अर्चना से अवैध संबंध थे, जिसका शैलेन्द्र विरोध करता था। इसी रंजिश के चलते तीनों ने मिलकर हत्या की योजना बनाई। 10 जनवरी को शराब पिलाने के बाद मफलर से गला घोंटकर शैलेन्द्र की हत्या कर दी गई और शव को नहर पटरी के पास छोड़कर फरार हो गए। गिरफ्तार आरोपियों में अवनीश पाल (26 वर्ष) निवासी थाना तिर्वा जनपद कन्नौज, रिंकू कठेरिया (21 वर्ष) निवासी थाना तिर्वा जनपद कन्नौज और अर्चना (26 वर्ष) पत्नी स्व. शैलेन्द्र सिंह पाल निवासी ग्राम कुर्सी थाना बेला जनपद औरैया शामिल हैं। पुलिस अरोपियों के आपराधिक इतिहास की जानकारी जुटा रही है।

पुलिस टीम में थानाध्यक्ष बेला गंगादास गौतम व प्रभारी सर्विलांस सेल/एसओजी उपनिरीक्षक समित चौधरी सहित अन्य पुलिसकर्मी शामिल रहे।

• 11 जनवरी को ग्राम नहर की पटरी के पास मिला था शव

हत्या में प्रयुक्त बाइक बरामद।

खलरा गांव से 16 केवी की डीपी ले गए चोर

अछल्दा (औरैया)। कस्बे के विद्युत उपकेंद्र के अंतर्गत आने वाले ग्वारी फीडर के खलरा गांव में सोमवार देर रात चोरों ने विद्युत पोल से 16 केवी की डीपी (डिस्ट्रिब्यूशन ट्रांसफार्मर) चोरी कर ली। इस चोरी के कारण पूरे ग्वारी फीडर की विद्युत आपूर्ति बाधित हो गई, जिससे ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

मंगलवार को जब उपकेंद्र के कर्मचारियों ने ग्वारी फीडर की बिजली आपूर्ति बहाल करने का प्रयास किया, तो कई स्थानों पर लाइन में खराबी आने लगी। बार-बार फाल्ट आने पर मामले की गंभीरता को देखते हुए, जूनियर इंजीनियर (जेई) धीरेंद्र कुमार स्वयं लाइन की जांच के लिए मौके पर पहुंचे। खलरा गांव पहुंचने पर उन्होंने पाया कि विद्युत पोल से डीपी गायब थी। जेई धीरेंद्र कुमार ने ग्रामीणों से डीपी चोरी के संबंध में जानकारी लेने का प्रयास किया, लेकिन ग्रामीणों ने किसी भी जानकारी से इनकार किया। डीपी चोरी होने के कारण गांव सहित आसपास के क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति पूरी तरह ठप है। जेई धीरेंद्र कुमार ने बताया कि अज्ञात चोरों ने पोल से डीपी चोरी की है।

विरोध प्रदर्शन करते ग्रामीण। अमृत विचार

गौशाला निर्माण के कारण बंद हो रहा मंदिर का रास्ता

संवाददाता, बेला

अमृत विचार। विकासखंड बिधूना की ग्राम पंचायत रामनगर में स्थित प्राचीन फटे महादेव मंदिर तक पहुंचने वाले मार्ग को गौशाला निर्माण के कारण बंद करने के प्रयासों को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश है।

ग्रामीणों का आरोप है कि प्रशासन द्वारा गौशाला निर्माण से मंदिर का रास्ता बंद किया जा रहा है, जिला पंचायत अध्यक्ष कमल दोहरे द्वारा पहले ही इस मार्ग पर खड़ंजे का निर्माण कराया जा चुका था। ग्रामीणों का कहना है कि गौशाला के कारण रास्ता बंद होने से भक्तों का आना-जाना प्रभावित होगा। पुजारी अमित, कुलकांत तिवारी, कमलेश तिवारी, राजू जाटव, संदीप जाटव, लज्जा राम जाटव, सत्य राम कठेरिया और सतीश चंद्र दुबे सहित अन्य ग्रामीणों ने बताया कि फटे महादेव मंदिर प्राचीन है। लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना है।

प्रदेश और अन्य राज्यों के भक्तों की असीम आस्था है। शिवरात्रि और सावन माह में दूर-दूर से श्रद्धालु कांवर चढ़ाने आते हैं। मनोकामना पूरी होने पर यहां भागवत कथा और विशाल भंडारे का आयोजन किया जाता है। ग्रामीणों के सहयोग से हर शिवरात्रि पर भागवत महापुराण का पाठ और भंडारा होता है। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि मंदिर मार्ग को यथावत रखा जाए और गौशाला का निर्माण रास्ता छोड़कर कराया जाए।

धूमधाम से मनाई गई लोहड़ी, बांटी खुशियां

फफूंद (औरैया)। कस्बा स्थित एक्सेस पब्लिक स्कूल में लोहड़ी पर्व धूम-धाम से मनाया गया। लोहड़ी पर्व का विद्यालय के छात्र-छात्राओं, शिक्षक शिक्षिकाओं व सम्मानित अभिभावकों ने सामूहिक रूप से आनंद उठाया। विद्यालय निदेशक दीपक ने सभी को लोहड़ी के त्यौहार की बधाई देते हुए बताया कि लोहड़ी का त्यौहार खुशियों और समृद्धि का त्यौहार है। हम सभी भारतवासियों को यह त्यौहार हर्षोल्लास से मनाना चाहिए तथा पर्व में सम्मिलित लोहड़ी को प्रज्जवलित कर बच्चों को आशीर्वाद दिया। लोहड़ी के समक्ष छात्र-छात्राओं ने जमकर भांगड़ा गिद्दा नृत्य प्रस्तुत किया। सामूहिक रूप से लोहड़ी की परिक्रमा की और नृत्य किया। भांगड़ा संगीत से विद्यालय का वातावरण गुंजायमान हो उठा। लोहड़ी के शुभ अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य गुरमीत सिंह सोढ़ी व अंकित अवस्थी एवं समस्त शिक्षकों ने बधाई दी। अमृत विचार

अज्ञात युवकों ने की मारपीट

फफूंद (औरैया)। कस्बे के चमनगंज मोहल्ले में सोमवार देर रात मोटरसाइकिल की टक्कर के बाद विवाद बढ़ गया।

एक पक्ष के लोगों ने अपने साथियों को बुलाकर एक युवक और उसके भाई के साथ मारपीट कर घायल कर दिया। पीड़ित अश्वनी शर्मा निवासी चमनगंज ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि सोमवार की शाम करीब सात बजे वह अपनी दुकान पर था। इसी दौरान मोटरसाइकिल सवार अज्ञात युवक की किसी अन्य बाइक से टक्कर हो गई। आरोप है कि इसके बाद उक्त व्यक्ति ने अपने साथियों को बुला लिया, जिन्होंने आते ही गाली-गलौज करते हुए उसके साथ लात-घूंसों और लाठियों से मारपीट शुरू कर दी। मारपीट के दौरान पीड़ित का भाई अवनीश बचाने आया तो उसके सिर पर लाठी लगने से गंभीर चोट आई।

अछल्दा स्टेशन पर माघ मेला श्रद्धालुओं के लिए ट्रेन का ठहराव

संवाददाता अछल्दा (औरैया)

अमृत विचार। माघ मेला प्रयागराज जाने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए मंगलवार को अछल्दा रेलवे स्टेशन पर ट्रेन संख्या 04190 अलीगढ़-गोविंदपुरी फास्ट मेमू ट्रेन का ठहराव सुनिश्चित किया गया। यह पहल यात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए की गई।

भारतीय किसान यूनियन भानु के राष्ट्रीय प्रवक्ता ठाकुर दीपक सिंह ने स्टेशन अधीक्षक अनिल त्यागी से माघ मेला प्रयागराज के लिए ट्रेनों के ठहराव की मांग की थी। श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यह मांग उठाई गई। स्टेशन अधीक्षक अनिल त्यागी ने मंगलवार को टूंडला के उपमुख्य यातायात प्रबंधक अमित आनंद से संपर्क किया और

ट्रेनों के ठहराव को लेकर ज्ञापन सौंपते लोग। अमृत विचार

• अलीगढ़-गोविंदपुरी फास्ट मेमू रोकी गई

अछल्दा स्टेशन पर ट्रेन ठहराव की आवश्यकता बताई।

इस पर त्वरित कार्रवाई करते हुए उपमुख्य यातायात प्रबंधक ने अलीगढ़-गोविंदपुरी फास्ट मेमू के ठहराव को मंजूरी दी। ट्रेन के ठहराव के दौरान यात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था के लिए रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) तैनात रहा। आरपीएफ के राकेश यादव ने श्रद्धालुओं को सुरक्षित तरीके से ट्रेन में चढ़ने में सहायता की और उन्हें माघ मेला के लिए रवाना किया।

कंचौसी रेलवे क्रासिंग पर एक घंटे जाम से जूझे वाहन सवार

संवाददाता कंचौसी

अमृत विचार। औरैया-रसूलाबाद मार्ग से निकलने वाले वाहन सवारों को कंचौसी रेलवे स्टेशन की पूर्वी क्रासिंग पर मंगलवार की सुबह 9 बजे जाम से जूझना पड़ा।

चार एक्सप्रेस ट्रेन व मालगाड़ी निकलने के बाद स्थिति सामान्य हो सकी थी। यातायात के सुचारू होने पर लोगों ने राहत की सांस ली। कंचौसी रेलवे स्टेशन की पूर्वी क्रासिंग पर वाहन सवारों को एक घंटे तक जाम में परेशान होना पड़ा। उनका कहना था कि यहां पर फ्लाईओवर जरूरी है। तब जाकर दुश्वारी पूरी तरह से दूर हो सकेगी। रेलकर्मी के अनुसार दिल्ली-हावड़ा रूट पर लगातार चार एक्सप्रेस ट्रेन सहित एक मालगाड़ी चंद मिनट अंतराल में पास कराई गईं। क्रासिंग खुलने पर वाहनों को एक-एक कर निकाला जा सका था।

सड़क पर लगा जाम। अमृत विचार

प्रियंका गांधी का जन्मदिन मनाते कांग्रेसी। अमृत विचार

प्रियंका गांधी का जन्मदिन मनाया

संवाददाता अछल्दा (औरैया)

अमृत विचार। कस्बे के हरीगंज बाजार में कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं ने सोमवार को कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा का जन्मदिन उत्साहपूर्वक मनाया।

कार्यक्रम के दौरान कांग्रेस नेताओं ने प्रियंका गांधी के संघर्षशील नेतृत्व, महिलाओं के अधिकारों य के प्रति उनके योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रियंका गांधी जनता की आवाज को मजबूती से उठाने वाली नेता हैं।

रंगदारी मांगने का लगाया आरोप

अयाना। थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत सिखरना के प्रधान संतराम शर्मा ने पुलिस को तहरीर दी। बताया कि सोमवार शाम चार बजे पर वह गांव की गोशाला में मौजूद था। तभी गांव के करीब 15 लोग लाठी- डंडे लेकर गोशाला में घुस आए। आरोप लगाया कि आरोपियों ने उससे 50 हजार रुपये रंगदारी के तौर पर मांग की। पूर्व में भी आरोपी उससे पांच-पांच हजार रुपये रंगदारी के तौर पर ले चुके हैं। आरोपी रंगदारी को लेकर उसके साथ आए दिन गाली-गलौज कर धमकी देते हैं। अयाना थानाध्यक्ष जयप्रकाश पाल ने बताया कि तहरीर मिली है। मामले की जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

बैठक | मतदाता आवश्यक प्रपत्रों के साथ 06 फरवरी तक कर सकते हैं आवेदन

नए मतदाताओं को जोड़ने के लिए 18 को अभियान

कार्यालय संवाददाता, औरैया

अमृत विचार। विधानसभा निर्वाचक नामावली के विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण 2026 के संबंध में मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के साथ बैठक कर जानकारी देते हुए बताया कि जनपद में नए मतदाताओं को जोड़ने के लिए विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण अभियान प्रातः 11:00 बजे से सायं 4:00 बजे तक आयोजित किया जाएगा।

इस दौरान संबंधित बीएलओ तथा पदाभिहीत अधिकारी संबंधित स्थलों पर उपस्थित रहकर फॉर्म-6, फॉर्म- 7 व फॉर्म 8 का संकलन करेंगे तथा आवेदकों को नए फार्म भी उपलब्ध कराएंगे। जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. इन्द्रमणि त्रिपाठी ने कलेक्ट्रेट स्थित कार्यालय कक्ष मे आयोजित बैठक में सभी राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों से अपेक्षा व्यक्त की, कि वह अपने-अपने बीएलए को निर्देशित करें कि 18 जनवरी 2026 को आयोजित होने वाले विशेष अभियान में प्रतिभाग कर निर्वाचक नामावली को पारदर्शी व त्रुटिविहीन बनाने में सहयोग करें। जिला मजिस्ट्रेट ने बताया कि इस दौरान अनमैप्ड मतदाताओं को नोटिस जारी किए जाएंगे। मतदाताओं को निर्गत नोटिस की सुनवाई हेतु आयोग द्वारा अतिरिक्त सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों की तैनाती की गई है जिससे मतदाताओं को नोटिस निराकरण में सुविधा होगी। साथ ही वह अपेक्षित अभिलेखों के साथ नामित अधिकारियों के समक्ष उपस्थित होकर अपना पक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। जिला मजिस्ट्रेट ने सभी राजनैतिक दलों से अपेक्षा व्यक्त की, कि वह अपने बीएलए के माध्यम से फॉर्म- 6 व घोषणा पत्र सहित मतदाताओं से भरवाकर अपने घोषणा पत्र के साथ संबंधित बीएलओ को उपलब्ध कर सकते हैं। बैठक के दौरान अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) नीरज प्रसाद, सपा जिला अध्यक्ष सर्वेश बापू गौतम, बसपा पार्टी प्रभारी हरपाल सिंह पाल, भाजपा जिला संयोजक अमर चंद राठौर आदि लोग मौजूद रहे।

बैठक के दौरान निर्देश देते डीएम डॉक्टर इंद्रमणि त्रिपाठी। अमृत विचार

01

जनवरी को 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले युवा बनें मतदाता, लोकतंत्र के विशेष अभियान में हों सम्मिलित

कबड्डी में नवलपुर ने औरैया देहात को हराकर जीता मैच

कंचौसी। भाग्यनगर ब्लॉक के बिहारीपुर में चल रहे चार दिवसीय कबड्डी टूर्नामेंट में अंतिम दिन औरैया देहात को हराकर नवलपुर ने मैच जीता।

नवलपुर और औरैया देहात के बीच रोमांचक मैच दर्शकों को देखने को मिला। नवलपुर को रोमांचक मुकाबले में 30 अंक मिले और औरैया देहात को 26 अंकों से संतोष करना पड़ा। जबकि फाइनल मुकाबला देर रात दूधिया रोशनी में खेला जाएगा। मैच का शुभारंभ भाजपा नेता आदेश शुक्ला उर्फ बीनू शुक्ला ने किया। मुख्य अतिथि ने खिलाड़ियों से हाथ मिलाकर परिचय किया और उनका उत्साह वर्धन भी किया। फाइनल मैच विजेता टीम को ट्रॉफी, मेडल और 11000 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा एवं उपविजेता टीम को 5100 रुपये नकद आयोजकों की तरफ से दिए जाएंगे।

सर्द हवाओं से बढ़ी सर्दी

बिधूना। पिछले लगभग एक माह से अधिक समय से सर्द बर्फीली हवाएं चलने से बढ़ी कड़ाके की ठंड के चलते जनजीवन बुरी तरह अस्त व्यस्त हो गया है। ठंड के कारण बेजुबान पशु पक्षी भी कंपकंपाते नजर आ रहे हैं। वहीं रोज खाने कमाने वाले दिहाड़ी मजदूरों के साथ फुटपाथों पर खुले आसमान के नीचे जिंदगी बसर करने वाले इस भीषण ठंड से सबसे अधिक परेशान हैं। भीषण ठंड का प्रकोप होने के बावजूद भी गरीबों को ठंड से बचाने के लिए जिम्मेदारों द्वारा आवश्यकतानुसार कहीं अलाव जलवाए जाते भी नहीं दिख रहे हैं।

अमृत विचार क्लासीफाइड

विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

वर्गीकृत विज्ञापन हेतु अमृत विचार अखबार क कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

सूचित किया जाता है कि हाईस्कूल का परीक्षा वर्ष 1994 अनुक्रमांक 1561161 की मार्कशीट एवं प्रमाण पत्र 8 जनवरी 2026 को शीशी चौराहे और औरास के बीच कहीं खो गया है। **सुधाकर तिवारी पुत्र रामकिशोर तिवारी निवासी मोहल्ला बरुवाटोला (अटलनगर) नगर पंचायत औरास जनपद उन्नाव**

सूचना

मेरे शैक्षिक अभिलेख में मेरी माता जी का नाम मन्जू तथा सरिता दर्ज है। जोकि दोनों नाम एक ही व्यक्ति के है जो सही नहीं है। सही नाम मन्जू देवी है। **हिमांशी यादव पुत्री सतेन्द्र कुमार निवासी – ग्रा0 परसुआ पो0 भैदपुर थाना–' विधूना जिला औरैया।**

सूचना

मैं MOHAMMAD SHAMEEM पुत्र श्री शमसीर, निवासी–15, मीरानपुर बभनपुरा, पो0–इल्फिातगंज, अम्बेडकर नगर, उ0प्र0, सबको सूचित करता हूँ कि मैंने अपना नाम बदलकर MOHD SHAMEEM रख लिया है, अत: आज से मुझे MOHD SHAMEEM के नाम से जाना पहचाना व लिखा जाये।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मैंने अपना नाम BINDA PRASAD MISHRA से BINDA PRASAD कर लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। BINDA PRASAD 26 GANGA KHEDA KESRI KHEDA MANAKNAGAR LUCKNOW

NOTICE

I, Brahm Dutt Yadav S/o Ram Pratap Yadav R/o 332/19, Narpat Nagar, Jarauli phase-1, Barra, Kanpur Nagar U.P. I have changed my name to Bramh Dutt Yadav for all future purposes.

सूचना

मैं **मानसी सोनकर उर्फ आयशा पुत्री लोकई सोनकर, निवासिनी कान्दभारी थाना कोत0 नगर जनपद– बलरामपुर** दिनांक 15–06–2018 से सराफत उल्ला पुत्र नकीबुल्ला निवासी ग्राम बंजरहा, थाना श्रीदत्तगंज जनपद बलरामपुर लिव एण्ड रिलेशनसिप में साथ–साथ रहते थे दोनो से एक बच्चा ईसान पैदा हुआ जो मानसी सोनकर के साथ रहता है दोनो के आपसी सहमति से ईसान मानसी सोनकर के साथ रहेगा और दिनांक 05–12–2625 की यह लिव एण्ड रिलेशनशिप राजी खुशी से समाप्त किया जाता है मानसी सोनकर ने राजी खुशी से यह शपथ–पत्र के माध्यम से रिश्ता समाप्त कर सक्षम अधिकारी व पेपर गजट के माध्यम से सूचना प्रकाशित कर दिया जो सर्व मान्य है।

सूचना

सूचित किया जाता है कि हाईस्कूल अंकतालिका में मेरा नाम छाया गुप्ता पुत्री भगवान दास गुप्ता दर्ज है, शादी के बाद आधार, पेन कार्ड आदि अभिलेख में मेरा नाम छाया पत्नी विष्णु पोरवाल दर्ज है। अतएव छाया गुप्ता व छाया एक ही नाम है। भविष्य में मुझे छाया के नाम से जाना जाए। छाया पत्नी विष्णु पोरवाल निवासी 38 नेविलगंज कस्बा भरथना इटावा

सूचना

मैने अपना नाम मोहम्मद मोबीन से बदलकर मोबीन अहमद कर लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना पहचाना जाए। **मोबीन अहमद पुत्रं अख्तर अली निवासी – खीदास नगर पोनी रोड शुक्लागंज गंगा गंज सफीपुर उन्नाव**

सूचना

मैं राम इन्दर सिंह नाम गलत है। DOB 19.07.1978 गलत है मे सही नाम राबेन्द्र सिंह कुशवाहा पुत्र कालीचरण है। DoB 01.07.1984 सही है निवासी– ए.59 बापू पार्क कोटला मुबारकपुर लोधी रोड मध्य दिल्ली 110003 पिनकोड है

सूचना

सूचित किया जाता है कि मैने अपना नाम LALIT KUMAR MISHRA से LALIT कर लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना। LALIT 26, Ganga kheda Kesri kheda Manak Nagar Lueknow

न्यूज ब्रीफ

नकदी-जेवर लेकर निकल गई किशोरी

सुमेरपुर। कस्बे की एक महिला ने थाने में तहरीर देकर बताया कि उसकी नाबालिग पुत्री घर से 3 लाख के जेवर एवं 80 हजार नकद लेकर बाजार जाने की बात कहकर युवक के साथ चली गई। पुलिस ने माती अकबरपुर निवासी नजीम के खिलाफ बहला फुसलाकर भगा ले जाने का मुकदमा दर्ज किया है।

पति और उसके परिवार पर केस

सुमेरपुर। क्षेत्र के टेढा गांव निवासी सुखराम वर्मा ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि उसने पुत्री रंजना देवी की शादी कैथी गांव निवासी अभिजीत के साथ 1 मार्च 25 को की थी। शादी के बाद से ही ससुराल वाले कम दहेज लाने का ताना देकर पुत्री को मानसिक रूप से प्रताड़ित करने लगे और 2 लाख नकद, एक सोने की जंजीर की मांग करने लगे। पांच माह पहले पति अभिजीत, ससुर जुग्गीलाल, सास दुखिया, देवर अविनाश, अभिषेक, अभिनव ने पुत्री को पीटा और जेवर, रुपये, कपड़े छीनकर घर से निकाल दिया। पुलिस जांच कर रही है।

छात्र को लोडर ने टक्कर मारी, घायल

राठ। अमगांव निवासी आर्यन (08) पुत्र अनिल अपने घर से ट्यूशन पढ़ने जा रहा था। सड़क पार करते समय अचानक एक तेज रफ्तार लोडर वाहन ने उसे जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर लगने से आर्यन सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद लोडर चालक ने वाहन रोका और ग्रामीणों व छात्र के परिजनों की मदद से आर्यन को तत्काल इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया।

प्राइवेट नलकूप से स्टार्टर, केबल चोरी

कुरारा। कस्बा निवासी राजबहादुर सचान पुत्र शिवराम ने थाने में दी तहरीर में बताया कि रिठारी मौजे में उनका निजी नलकूप लगा हुआ है। सोमवार की रात चोर नलकूप पर चढ़ गए और वहां लगा स्टार्टर तथा करीब 10 मीटर केबल काटकर चोरी कर ले गए। सुबह जानकारी होने पर पीड़ित ने थाने पहुंचकर घटना की शिकायत दर्ज कराई। पीड़ित ने पुलिस से चोरों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

एक दिवसीय रोजगार मेला 16 जनवरी को

हमीरपुर। जिला सेवायोजन अधिकारी ने बताया कि औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान निदेशालय प्रशिक्षण एवं सेवायोजन उप्र लखनऊ के निर्देशानुसार 16 जनवरी दिन शुक्रवार को प्रात: 10 :30 बजे से राजकीय सरीला में एक दिवसीय रोजगार मेला का आयोजन किया जा रहा है। उक्त जॉब फेयर में कई प्रतिष्ठित कंपनियों/ नियोजकों द्वारा प्रतिभाग किया जायेगा। इच्छुक अभ्यर्थी अपना rojgaarsangam .up .gov . in ऑनलाइन आवेदन करते हुए अपने समस्त शैक्षणिक मूल प्रमाण पत्रों व फोटो सहित उक्त तिथि व समय पर मेले में प्रतिभाग करते हुए इस अवसर का लाभ उठा सकते है। किसी कारणवश ऑनलाइन न कर पाने की स्थिति में आप सीधे भी प्रतिभाग कर सकते है।

बुजुर्ग ने खाया जहर सदर अस्पताल रेफर

कुरारा। मंगलपुर गांव में 60 वर्षीय अधेड़ ने जहरीला पदार्थ खा लिया। हालत बिगड़ने पर उसे सीएचसी ले गए, जहां से गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। मंगलपुर गांव निवासी गंगाराम (60) पुत्र बनारसी ने सोमवार की रात करीब 10 बजे अज्ञात कारणों के चलते जहरीले पदार्थ का सेवन कर लिया। कुछ देर बाद उसकी तबीयत बिगड़ने लगी। जिस पर परिजनों में हड़कंप मच गया। परिजन तत्काल उसे कस्बे की सीएचसी ले गए। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार किया। हालत नाजुक होने पर डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

खेत जा रही युवती से छेड़छाड़, रिपोर्ट दर्ज

बिवांर। थानाक्षेत्र के एक गांव निवासी युवती ने थाने में दिए शिकायती पत्र में बताया कि, बीते 12 जनवरी को शाम करीब साढ़े चार बजे जब वह खेत जा रही थी। तभी रास्ते में गांव के अरविंद पुत्र सरमन वर्मा ने उसे बुरी नीयत से पकड़ लिया और खेत में खींच कर ले जाने लगा। पीड़िता ने बताया कि जब उसने शोर मचाया तो पास ही क्रिकेट खेल रहे लड़कों को आता देख आरोपी गाली गलौज करता हुआ चला गया। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इस संबंध में थाना प्रभारी नंदराम प्रजापति ने बताया कि मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है आगे की कार्यवाही की जा रही है।

पिता के हत्यारे ढोंगी बेटे को आजीवन कारावास

कुरारा कस्बे में पांच साल पहले फरसा से किया था हमला

कार्यालय संवाददाता, हमीरपुर

- जमीन और मकान के बंटवारे के विवाद में की थी हत्या
- रामेंद्र से कृष्णा माधवाचार्य बनकर साधु का वेश धरे था

25 हजार रुपये अर्थदंड भी लगाया गया

अमृत विचार। कुरारा कस्बे में पांच वर्ष पहले जमीन और मकान के बंटवारे के विवाद में पिता पर फरसा से हमला कर हत्या करने वाले आरोपी बेटे को अपर सत्र न्यायाधीश की अदालत ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही 25 हजार रुपये का अर्थदंड भी लगाया है।

सहायक शासकीय अधिवक्ता चंद्रप्रकाश गोस्वामी ने बताया कि कुरारा कस्बा के वार्ड-9 निवासी राजेंद्र कुमार ने 22 दिसंबर 2020 को थाने में तहरीर देकर बताया था कि उसका छोटा भाई रामेंद्र अपना नाम बदलकर कृष्णा माधवाचार्य बन गया है और साधु के वेश में रहता है। दिन में सुबह 11.30 बजे वह घर आया और पिता मिठाईलाल से जमीन व मकान के बंटवारे के साथ रुपयों की मांग करते हुए झगड़ा करने लगा। इसके बाद पिता पर फरसा से हमला बोल दिया, जिससे वह लहूलुहान होकर गिर पड़े। इसके बाद उन्हें लेकर तुरंत जिला अस्पताल पहुंचे, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

पुलिस ने इस मामले का मुकदमा दर्ज करने के साथ ही आरोपी रामेंद्र उर्फ कृष्णा माधवाचार्य की तलाश शुरू कर दी और घटना के दूसरे दिन 23 दिसंबर को पुलिस ने आरोपी को फरसा के साथ जखेला मोड़ से गिरफ्तार कर। पुलिस ने पूरे मामले की गहराई से विवेचना करने के बाद आरोपी के खिलाफ अदालत में आरोप पत्र प्रस्तुत किया। गवाहों को कोर्ट में पेश कराने में मामले के पैरोकार संजीत कुमार का विशेष सहयोग रहा।

इस मामले की सुनवाई अपर सत्र न्यायाधीश कोर्ट-1 उदयवीर सिंह की अदालत में चल रही थी। मंगलवार को अपर सत्र न्यायाधीश ने आरोपी रामेंद्र उर्फ कृष्णा माधवाचार्य को हत्या का दोषी मानते हुए आजीवन कारावास और 25 हजार जुर्माना की सजा सुनाई है। अदालत के फैसले के बाद वादी राजेंद्र कुमार ने कहा कि छोटे भाई को अपनी करनी की सजा मिली है।

एडीओ से समिति के गठन की मांग

कुरारा (हमीरपुर)। ब्लाक क्षेत्र के चकोठी गांव के ग्राम प्रधान की बीमारी के चलते मौत होने के बाद विकास कार्य बाधित होने के साथ गौशाला संचालन व अन्य कार्य न हो पाने से गांव के ग्रामीणों ने एडीओ पंचायत से समिति गठित करने की मांग की है।

क्षेत्र के ग्राम प्रधान हरिशंकर भार्गव का बीते 24 दिसंबर को बीमारी के चलते निधन होने के कारण गांव के विकास कार्य ठप्प हो गए है। वही गौशाला में चरवाहों का मकर संक्रांति के पर्व पर वेतन न मिलने पर त्योहार फीका पड़ गया। चरवाहा आशीष कुमार, रामस्वरूप आदि ने बताया कि ग्राम प्रधान की बीमारी के चलते मौत होने के बाद गांव में विकास कर बाधित हो गए हैं। जिससे पंचायत मित्र पंचायत सहायक केयरटेकर आदि के मानदेय न मिलने से परेशान है। गांव के ग्रामीणों ने एडीओ पंचायत धर्मेंद्र पाल से समिति गठित करने की मांग की है। एडीओ पंचायत धर्मेंद्र पाल ने बताया कि डीपीआरओ को पत्र भेजा गया है, शीघ्र ही समिति का गठन किया जाएगा, जिससे रुके हुए कार्य कराए जाएंगे।

स्वास्थ्य शिविर का फीता काटकर शुभारंभ करते चेयरमैन। अमृत विचार

शिविर लगा मानसिक रोगियों का किया इलाज

- नगर पंचायत अध्यक्ष धीरेंद्र शिवहरे ने किया शुभारंभ

सुमेरपुर (हमीरपुर)। कस्बे के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में आयोजित मानसिक स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ नगर पंचायत अध्यक्ष ने फीता काटकर किया। शिविर में 160 मरीज का उपचार किया गया। इनमें 22 मानसिक रोगी पाए गए।

मंगलवार को कस्बे के नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में आयोजित मानसिक स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ नगर पंचायत धीरेंद्र शिवहरे ने किया। शिविर में कुल 160 मरीजों का परीक्षण किया गया। इनमें 22 मानसिक रोगी पाए गए। जिनका उपचार साइको थेरेपिस्ट डॉ.नीता एवं डॉ मुकेश कुमार एवं नर्स प्रगति ने किया। शिविर में प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ.तरुण पाल, डॉ.परवेज कादरी, डॉ.शमा परवीन, डॉ.विंदेश कुमार, डॉ.शशांक, सुषमा, श्याम यादव, राशिद खान, दिलीप कुमार आदि स्वास्थ्य कर्मी मौजूद रहे।

दो गांवों के 300 परिवार पानी के लिए तरस रहे

बिवांर (हमीरपुर)। पेयजल पाइप लाइन ध्वस्त होने से दो गांवों के कई मोहल्ले के तीन सौ घर पानी के लिए मोहताज है। दो किलोमीटर दूर से मोहल्लेवासी पानी लेकर आ रहे हैं।

क्षेत्र के सायर गांव के लोग कई सालों से एक से दो किलोमीटर दूर से पानी लाकर प्यास बुझाते आ रहे थे। नमामि गंगे परियोजना आने से गांव वासियों को राहत मिली थी। परंतु देखरेख के अभाव में डाली गई नई पाइप लाइन कई जगहों पर फटी पड़ी है। जिससे प्रतिदिन हजारों लीटर पानी बहकर नालियों में बर्बाद हो रहा है।

ऊपरी सायर के करगांव मोड़ के पास दो माह से पाइप लाइन फटी पड़ी है। जिससे तरौस मुहाल, निकट तरौस ग्राम ऊपरी, चुघी मुघी स्कूल के निकट पंडित मोहाल ग्राम सायर, मुखिया मुहाल ऊपरी, सैनी मुहाल ऊपरी, शर्मा मोहल्ला उपरी के कई मोहल्ले पानी के लिए तरस रहे हैं। इस लाइन से ऊपरी गांव के 60% और सायर गांव के 30% आबादी को पेयजल आपूर्ति की जाती है। लोगों ने लाइन को दुरुस्त कराने की मांग की है।

इचौली में वॉलीबाल का फाइनल मैच खेलते खिलाड़ी। अमृत विचार

प्रयागराज ने संगम को 2-1 से हरा ट्रॉफी जीती

मौदहा (हमीरपुर)। इचौली महोत्सव में आयोजित तीन दिवसीय चौधरी रणजीत सिंह मेमोरियल वॉलीबॉल प्रतियोगिता के अंतिम दिन खेले गए फाइनल में जेपी क्लब प्रयागराज ने देव एकेडमी संगम को 2-1 से हराकर ट्रॉफी अपने नाम की। अंतिम दिन पहला सेमीफाइनल मैच में जेपी क्लब प्रयागराज ने कानपुर को 2-1 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। दूसरे सेमीफाइनल में देव एकेडमी संगम ने इचौली को 2-1 से हराकर फाइनल में जगह बनाई। फाइनल मैच में जेपी क्लब प्रयागराज ने देव एकेडमी संगम को रोमांचक मुकाबले में 2-1 से हराकर ट्रॉफी अपने नाम की। आयोजक पूर्व विधायक युवराज सिंह ने विजेता टीम के खिलाड़ियों को सम्मानित किया। मैच रेफरी अभिषेक, छोटेलाल यादव रहे, कमेंटेटर सुभाष शुक्ला, बृजेश कुमार व स्कोरर शैलेन्द्र सिंह रहे। इस मौके पर प्रधानाचार्य अरुण कुमार, चेयरमैन कुलदीप निषाद, अध्यक्ष रणवीर सिंह, बड़ोखर ब्लाक प्रमुख स्वर्ण सिंह, रविकरन सिंह ,ऋषिराज सिंह, अखिलेश सिंह गौर सहित सैकड़ों दर्शक मौजूद रहे।

समायोजन निरस्त करने को प्रदर्शन

कार्यालय संवाददाता, हमीरपुर

डीएम को ज्ञापन देते शिक्षक संघ के पदाधिकारी। अमृत विचार

- प्राथमिक शिक्षक संघ ने प्रदर्शन कर डीएम को सौंपा ज्ञापन

अमृत विचार। जनपद में परिषदीय विद्यालयों में लागू किए गए समायोजन 3.0 को लेकर शिक्षकों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। शिक्षक संघ ने नियम विरुद्ध किए गए समायोजन 3.0 को निरस्त करने की मांग को लेकर मंगलवार को कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन कर डीएम को ज्ञापन सौंपा है।

उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष देवेंद्र सिंह चंदेल के नेतृत्व में दिए ज्ञापन में कहा कि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने किए गए समायोजन 3.0 में शासन द्वारा निर्धारित मानकों का पालन नहीं किया। कहा कि नियम विरुद्ध तरीके से बिना विकल्प, बिना काउंसिलिंग किए समायोजन कर दिया गया है। जिसका संघ हमीरपुर विरोध कर रहा है। बताया कि समायोजन 3.0 में छात्र अनुपात भी नही देखा गया है।

कुछ विकास खंडों में नामाकंन कम व ज्यादा भी नही देख गया है। साथ ही इस समायोजन में दिव्यांग व महिला शिक्षकों से विकल्प पत्र भी नही भराये गए और उनका विद्यालय आवंटन कर दिया गया है। उन्होंने समायोजन 3.0 को निरस्त करने की मांग की है।

मांग पूरी न होने पर धरना व विरोध प्रर्दशन करने की चेतावनी दी है। इस दौरान संदीप चंदेल, जितेंद्र कुमार गुप्ता, विजय गुप्ता सहित अन्य पदाधिकारी और शिक्षक मौजूद रहे।

घरेलू कलह में विवाहिता ने खाया जहर, थमी सांस

कार्यालय संवाददाता, हमीरपुर

- दो साल पहले हुई थी शादी, एक साल बेटा रोता-बिलखता रहा

अमृत विचार। घरेलू कलह के चलते विवाहिता ने जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम कराकर शव को परिजनों के सुपुर्द कर दिया है।

सुमेरपुर थाना क्षेत्र के मुंडेरा गांव निवासी शिवेंद्र पाल की पत्नी शिवकन्या (24) ने सोमवार की दोपहर घरेलू कलह के चलते जहरीला पदार्थ खा लिया।

जानकारी होते ही परिजन आनन फानन में सुमेरपुर के एक प्राइवेट हॉस्पिटल लेकर पहुंचे, जहां उपचार के बाद परिजन उसे घर ले गए। घर में अचानक तबियत बिगड़ने पर परिजन उसे जिला अस्पताल लेकर जा रहे थे, तभी उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया।

परिजनों की सूचना पर पहुंची सुमेरपुर पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया। शिवकन्या के भाई धर्मेंद्र पाल ने बताया कि दो वर्ष पूर्व शादी हुई थी। उसका पति एक प्राइवेट स्कूल में टीचर है। एक साल का पुत्र अभय राज है। इस घटना से परिजनों में कोहराम मच गया है।

हिन्दू ही संगठित राष्ट्र की पहचान

संवाददाता, राठ (हमीरपुर)

स्वयंसेवकों को संबोधित करते हरिनारायण नगाइच। अमृत विचार

अमृत विचार। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अंतर्गत कस्बे के शिवाजी बस्ती में विराट हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि राधा सखी मंडल के डा.अनिरुद्ध जी महाराज ने कहा कि अगर हिंदू समाज संगठित नहीं हुआ तो आज जो दुर्दशा हिंदूओं की बांग्लादेश में हो रही है वह स्थिति भारत में भी हो सकती है।

अगर हिंदू समाज ऐसे ही टुकड़ों में बंटा रहा तो अपना यह भारत वर्ष धीर धीरे कई छोटे छोटे देशों में बंट जाएगा। भारत की स्थिति भी वेनेजुएला की तरह हो जाएगी। हम सभी हिंदू भाई बहनों को संगठित होकर संपूर्ण भारतवर्ष को संगठित राष्ट्र के रूप में स्थापित कर भारत माता को विश्व पटल पर अंगीकृत करवाना है। मुख्य वक्ता सह नगर संघ चालक हरिनारायण नगायच ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बीजारोपण सन् 1925 में हुआ था। आज संघ के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में पूरे देश में बस्ती और मंडलश हिंदू सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं।

उन्होंने कहा कि संघ इन हिंदू सम्मेलनों के माध्यम से संपूर्ण हिंदू समाज में पंच परिवर्तन के विषय को लेकर के संपूर्ण हिंदू समाज में जन जागृति का अभियान चला रहा है। सम्मेलन में रमेशचंद्र यादव, नगर संघचालक मुरलीधरा, जिला संपर्क प्रमुख राज किशोर, सह जिला व्यवस्था प्रमुख संजय, शिवाजी बस्ती के पालका, नगर प्रचार प्रमुख पियूष आर्य, नगर कार्यवाह प्रदीप, जयवीर, श्याम बाबू, अनुज, अमित आर्य आदि लोग रहे।

युवक ने फंदा लगा कर खुदकुशी की

हमीरपुर। युवक ने घर के अंदर फांसी लगा ली। परिजन उसे लेकर जिला अस्पताल पहुंचे, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों के सुपुर्द कर दिया है।

सदर कोतवाली क्षेत्र के चंदूपुर गांव जयप्रकाश निषाद (35) ने सोमवार की देर शाम घर में फांसी लगा ली। जानकारी होते ही परिजन उसे जिला अस्पताल ले गए,जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। परिजनों की सूचना पर पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम कराया। पड़ोसियों के मुताबिक पिता की कुछ साल पहले ही मौत हो गई थी। मां उच्च प्राथमिक विद्यालय में खाना बनाने का काम करती है। मृतक और उसका भाई ओम प्रकाश सूरत में किसी फैक्टरी में लेबर का काम करते है। लगभग चार दिन पहले ही सूरत से लौटे थे।

रामलीला का मंचन करते कलाकार। अमृत विचार

राम-लक्ष्मण की आरती उतारते प्रधान व पति।

राम वन गमन के साथ लीला शुरू

संवाददाता, पौथिया (हमीरपुर)

अमृत विचार। पौथिया गांव स्थित सब्जी मंडी मैदान में तीन दिवसीय रामलीला के पहले दिन ग्राम प्रधान बंदना सचान, प्रधान प्रतिनिधि आशीष सचान ने रामायण एवं राम-लक्ष्मण की आरती के बाद लीला का शुभारंभ हुआ।

कलाकारों ने लीला में राजा दशरथ ने राम जी का राज्याभिषेक करते हैं। वहीं कैकेई राजा दशरथ से दो वरदान मांगते हुए कहा कि भरत को राज्य तिलक एवं राम जी को 14 वर्ष का वनवास। तभी राम जी ने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए राम सीता लक्ष्मण के साथ वन गमन करते हुए वन को प्रस्थान हो गए। हास्य कलाकार ने दर्शकों को लोट-पोट कर दिया। संगीत भजन एवं नृत्य में छतरपुर से आई पलक ने धूम मचा कर दर्शकों से जमकर तालियां बटोरी। राम की भूमिका सत्यम द्विवेदी कन्नौज, लक्ष्मण राहुल तिवारी कानपुर, दशरथ की भूमिका अशोक पांडेय कानपुर, कॉमिक कलाकार छुट्टन पांडेय कानपुर, व्यास की भूमिका सौरभ तिवारी कानपुर ने निभाई। इस मौके पर संजय दीक्षित, पप्पू तिवारी, धर्मेंद्र सचान, पीयूष शुक्ला, शिवेंद्र श्रीवास्तव ब्रह्मदेव दीक्षित, सहित आदि दर्शक उपस्थित रहे।

इनामी दंगल | इचौली महोत्सव के अंतिम दिन नामी-गिरामी पहलवानों ने दिखाएं गजब के दांव-पेच

अयोध्या के बजरंगी ने राजस्थान के राजेश को हराया

संवाददाता, मौदहा (हमीरपुर)

मुख्य अतिथि का स्वागत करते पूर्व विधायक युवराज सिंह। अमृत विचार

दंगल में दांव-पेच दिखाते पहलवान। अमृत विचार

अमृत विचार। इचौली महोत्सव में मंगलवार को अंतिम दिन विराट इनामी दंगल का आयोजन हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि शिवजी मेवाड़ व पूर्व सदर विधायक युवराज सिंह ने अयोध्या के बजरंगी व राजस्थान के राजेश पहलवानों को हाथ मिलाकर दंगल शुभारम्भ कराया। दंगल में दूर दराज से आए पहलवानों ने अपने दांव पेंच दिखाए।

इस दौरान भाजपा के युवा नेता ऋषि राज सिंह ने कहा की आज की युवा पीढ़ी नशा के घर जा रही हैं। हैं पहले संयुक्त परिवार होते थे तो प्रत्येक घर में एक पहलवान हुआ करते थे लेकिन अब एकाकी परिवारों में युवाओं में अपना भविष्य चुनने की क्षमता नहीं हैं स ऐसा नहीं हैं हमारे देश में आज भी प्रतिभाओं की कमी नहीं हैं सिर्फ उन्हें रास्ता दिखने की जरूत हैं। पूर्व सदर विधायक युवराज सिंह ने कहा कि यहां दंगल कराने की परंपरा हमारे बाबा स्व.चौधरी पहलवान सिंह ने प्रारम्भ की थी। उनको पहलवानी से बहुत ही लगाव था।

उनको गांव ही नहीं यदि अपने बुंदेलखंड क्षेत्र में किसी युवा में पहलवानी के लक्षण दिखाई देते तो वह उसे अपने यहां बुला लेते थे और उसे पहलवानी के पूरे गुण सिखाते थे। उन्ही की प्रेरणा से यह दंगल कार्यक्रम बरसों से आयोजित होता आया है। दंगल में हुई पहली कुश्ती में बजरंगी अयोध्या ने राजेश राजस्थान को पटकनी दी। वहीं हरियाणा के आकाश ने नेपाल के राजेंद्र को, शीलू मथुरा ने पंजाब के शेरा को, विवेक हरियाणा को मथुरा के राजेश, हमीरपुर के हुकुम सिंह व मथुरा के माधव पहलवान की कुश्ती बराबर रही।

साई हरियाणा ने सन्नी रोहतक को चित कर दिया। दंगल में दर्जनों कुश्तियां हुई। इस मौके पर संघ प्रचारक धनंजय सिंह, चेयरमैन कुलदीप निषाद, बीजेपी बांदा पूर्व जिलाध्यक्ष लवलेश सिंह, रामदेव सिंह, विजय शंकर, प्रधान सिसोलर, असरार प्रधान गुसियारी, धनंजय सिंह, इंद्रजीत सिंह, रविकरन सिंह, ऋषिराज सिंह सहित हजारों की संख्या में दर्शक मौजूद रहे।

जमीन बंटवारे को लेकर वृद्ध को लाठियों से पीटा

संवाददाता, राठ (हमीरपुर)

अमृत विचार। कोतवाली क्षेत्र के बहपुर गांव में जमीन संबंधी हिस्सा बटवारा को लेकर हुए विवाद के चलते परिवार के ही दबंग दंपत्ति ने वृद्ध के साथ गाली गलौज कर उसकी लाठियों से जमकर पिटाई कर दी। तथा जान से मारने की धमकी दे डाली। पीड़ित वृद्ध ने कोतवाली में लिखित तहरीर देकर कार्रवाई की गुहार लगाई है।

कोतवाली क्षेत्र के बहपुर गांव के निवासी कृष्णानंद ने कोतवाली में तहरीर देकर बताया कि जमीन संबंधी हिस्सा बंटवारा को लेकर हुए विवाद के चलते उसके परिवार के ही दबंग दंपत्ति ने उसके साथ गाली गलौज कर जमकर पिटाई शुरू कर दी। आरोप लगाया कि दबंग दंपत्ति ने लाठी डंडों से उसे पीट कर घायल कर दिया है तथा उसे जान से मारने की धमकी दे डाली। पीड़ित ने बताया कि दबंगों की मारपीट से उसे चोटें भी आई हैं। बताया कि उसने राठ कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। मामले में राठ कोतवाली के प्रभारी इंस्पेक्टर ने बताया कि प्रकरण की जांच करा कर कार्रवाई कराई जाएगी।

पड़ोसियों ने डंडे से पीट हाथ तोड़ा

- सुमेरपुर। क्षेत्र के ग्राम पत्यौरा में पड़ोसियों ने अकारण गाली गलौज करके लाठी डंडों से पीटकर हाथ तोड़ दिया। पत्यौरा निवासी उत्तम निषाद ने मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि मुझे गांव निवासी गुड़िया, राम बेटी, दुर्गी ने मिलकर अकारण गाली गलौज करके लाठी डंडों से पीटकर हाथ तोड़ दिया है। मारपीट से सिर में भी गंभीर चोट लगी है। थानाध्यक्ष अनूप सिंह ने बताया कि मुकदमा दर्ज किया गया है।

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार, 14 जनवरी 2026

न्यूज ब्रीफ

हनुमान मंदिर में कन्या भोज कराया गया

महोबा। अजनर के हनुमान मंदिर में मंगलवार को कन्या भोज का आयोजन किया गया। भोज में आसपास के ग्रामीण अंचलों से लगभग एक हजार कन्याओं ने भाग लिया। कन्या भोज दौरान मंदिर समिति के कार्यकर्ताओं के अलावा अवधेश राजपूत व अन्य लोगों ने सहयोग किया। कन्या भोज में स्थानीय लोग ट्रैक्टरों और निजी वाहनों से कन्याओं के साथ मंदिर पहुंचे और प्रसाद ग्रहण कर किया। महंत सीताराम दास के मार्गदर्शन में यह कन्या भोज संपन्न कराया गया। महंत ने बताया कि इस मंदिर पर दो बार विशाल यज्ञ भी कराया जा चुका है और इस प्रकार के धार्मिक आयोजन यहां होते रहते हैं, जिनमें लोगों का भरपूर सहयोग मिलता है।

नो हेलमेट नो फ्यूल के तहत की गई कार्रवाई

महोबा। पुलिस अधीक्षक प्रबल प्रताप सिंह के निर्देशन में सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत यातायात नियमों के पालन के लिए 'नो हेलमेट नो फ्यूल' अभियान के तहत यातायात प्रभारी सुनील कुमार सिंह एवं एआरटीओ दयाशंकर के साथ संयुक्त रूप से प्रवर्तन कार्रवाई की। इस दौरान टीम ने विभिन्न पेट्रोल पंपों पर पहुंचकर बिना हेलमेट दोपहिया वाहन चलाते हुए फ्यूल भरवाने आने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध कार्रवाई की, साथ ही वाहन चालकों को हेलमेट पहनने के महत्व, सड़क सुरक्षा नियमों के पालन एवं सुरक्षित ड्राइविंग के प्रति जागरूक किया गया। यातायात प्रभारी ने बताया कि हेलमेट का प्रयोग न केवल कानूनी दायित्व है, बल्कि यह सड़क दुर्घटनाओं में जीवन रक्षा का एक साधन भी है। उन्होंने आमजन से अपील करते हुए कहा कि वह स्वयं एवं दूसरों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यातायात नियमों का अनिवार्य रूप से पालन करें।

व्यापारी संवाद कार्यक्रम 17 व 28 जनवरी को

महोबा। प्रदेश में व्यापारिक गतिविधियों के प्रोत्साहन, पंजीयन बेस एवं राजस्व वृद्धि और स्थानीय स्तर पर जीएसटी-2 सुधारों के प्रति जागरूकता के लिए उद्यमियों करदाताओं और अन्य स्टेक होल्डर के साथ संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से 17 जनवरी एवं 28 जनवरी 2026 को व्यापारी संवाद कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। वाणिज्य कर विभाग के सहायक आयुक्त राज्य कर ने बताया कि महिला उद्यमियों युवा उद्यमियों की उपस्थिति रहेगी। 17 जनवरी और 28 जनवरी को दोपहर 12 बजे से सेवा योजन कार्यालय सभागार में व्यापारी संवाद कार्यक्रम होगा।

दीपदान से खिली गोपाल सागर की छटा

संवाददाता, बेलाताल (महोबा)

- मकर संक्रांति पर्व को लेकर धौंसा मठ में जुटी भीड़ खिचड़ी उत्सव पर आज होगा दंगल, तैयारियां पूरी
- गोपाल सागर सरोवर में देश के विभिन्न तीथ स्थलों का छोड़ा गया जल, श्रद्धालुओं में खासा उत्साह नजर आया

गोपाल सागर में दीपदान करते महंत और श्रद्धालु। अमृत विचार

अमृत विचार। मकर संक्रांति पर्व को लकर ऐतिहासिक मठ धौंसा मंदिर के गोपाल सागर में मंगलवार को भव्य दीपदान किया गया। दीपदान के मौके पर मंदिर के महंत श्यामाशरण देवाचार्य महाराज ने अधिक संख्या में पहुंचकर भक्तों के साथ सरोवर में भव्य दीपदान किया। दीपदान कार्यक्रम में धीरे-धीरे अन्य लोग भी पहुंच गए। दीपदान से गोपाल सागर जगमगा उठा, तालाब में जलते दीप की रोशनी दूर दूर से दिखाई दे रही थी।

धौंसा मंदिर के महंत ने बताया कि गोपाल सागर में भारत के अनेक तीर्थों के जल का आहवान कर संपूर्ण तीर्थों का जल छोड़ा गया था, जिससे गोपाल सागर का जल पवित्र हो गया था, जिसके स्नान मात्र से लोगों के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं और उनके अंदर एक नई ऊर्जा का संचार होगा और उन्हें संपूर्ण तीर्थों का फल भी प्राप्त होगा। इस मौके पर महाराज ने बताया कि मकरसंक्रांति पर्व को लेकर मंदिर परिसर में सारी व्यवस्थाएं पहले से पूर्ण कर ली गई है। महंत ने बताया कि 15 जनवरी को खिचड़ी उत्सव का आयोजन किया गया है, जिसमें भारी भीड़ जुटने की संभावना है। खिचड़ी उत्सव के बाद क्षेत्रीय पहलवानों का कुश्ती भी कराई जाएगी। जहां पर दूर दराज से पहलवान आकर हिस्सा लेगे। दंगल के आयोजन की मंदिर प्रबंध समिति ने सारी तैयारियां पूर्ण कर ली है। दंगल का क्षेत्रीय लोग आनंद उठाएंगे। कड़ाके की ठंड को देखते हुए अलाव जलाने की भी व्यवस्था की गई है।

बीज किट के लिए 20 तक आवेदन

महोबा। राज्य सरकार ने निःशुल्क दलहन बीज मिनी किट वितरण का फैसला किया है। उर्द एवं मूंग के बीज के लिए किसान कृषि दर्शन-2 पोर्टल पर आवेदन कर सकते हैं। ऑनलाइन लॉटरी के माध्यम से चयनित कृषकों को राजकीय कृषि बीज भंडार से बीज का वितरण किया जाएगा।

दलहन बीज मिनी किट के लिए 20 जनवरी तक आनलाइन आवेदन कर सकते हैं। एक किसान को एक ही दलहनी फसल की मिनी किट प्राप्त हो सकेगी। कृषि विभाग में पंजीकृत कृषक ही मिनीकिट के लिए आवेदन कर सकेगा। जिले के लिए निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष प्राप्त आवेदन में से ऑनलाइन लॉटरी के माध्यम से चयनित किसानों को बीज का निःशुल्क वितरण किया जायेगा। कृषि विभाग के अधिकारियों ने सभी किसानों से अपील करता है कि वह आवेदन कर लाभ सकते हैं।

भूमि और तालाब के नाम पर फसल बीमा ले रहे भूमाफिया

कार्यालय संवाददाता, महोबा

- शिकायतों के बाद भी दूसरों की जमीन का क्लेम लेने वाले माफिया पर नहीं हो रही कार्रवाई

अमृत विचार। जिले में भूमि घोटाले को लेकर किसान नेताओं ने मुख्यमंत्री तक शिकायतें की है, इसके बाद भी फसल बीमा घोटाला बंद होने का नाम नहीं ले रहा है। फसल घोटाले से जुड़े लोगों ने किसानों की भूमि का बीमा लेने के अब मंदिर तालाबों और वन विभाग के नाम दर्ज भूमि का अपने नाम बीमा कराकर लाखों रुपये का क्लेम वसूल लिया है।

बेलाताल की गाटा संख्या 947 की तालाबी 120 बीघा जमीन पर भूमाफिया ने सरसों की फसल और उसका नुकसान दिखाकर लाखों रुपये फसल बीमा का क्लेम ले लिया। जैतपुर के धौंसा मंदिर की भूमि का फसल बीमा कराकर लाखो रुपये बीमा के नाम पर ले लिया है। मंदिर के महंत को इसकी भनक तक नहीं लगी, बाद में किसान नेता गुलाब सिंह राजपूत ने धौंसा मंदिर के नाम दर्ज भूमि का बीमा वसूलने वाले ग्रामीण का नाम पता उजागर किया तो हड़कंप मच गया। पनवाड़ी की ग्राम पंचायत किल्हौवा के मजरा चौका की भूमि का गाटा संख्या 410(ग) है और यह जमीन वन विभाग में दर्ज है। वन विभाग की 81 बीघा भूमि पर चना फसल का नुकसान दिखाकर लाखों रुपये क्लेम ले लिया। जय जवान जय किसान एसोसिएशन के अध्यक्ष गुलाब सिंह राजपूत ने कहा कि अधिकारियों की सांठगांठ से जमीन किसी की और बीमा दूसरे के नाम कर भूमाफिया मिलकर फसल बीमे के पैसे का बंदरबांट कर रहे हैं।

पेट्रोल डाल परचून की दुकान में लगाई आग

पनवाड़ी के अग्निहोत्रीपुरा मोहल्ले में दबंगों ने आगजनी की

संवाददाता, पनवाड़ी (महोबा)

- पीड़ित दुकानदार ने थाने में तहरीर देकर दबंगों पर लगाया आरोप
- पुलिस जांच-पड़ताल में जुटी, दो संदिग्ध हिरासत में लिए गए

आगजनी के बाद दुकान के बाहर खड़ा दुकानदार का परिवार। अमृत विचार

अमृत विचार। पनवाड़ी कस्बे के अग्निहोत्रीपुरा मोहल्ले में दबंगों ने सोमवार की रात एक किराना की दुकान में आग लगा दी, जिससे दुकान धू-धू कर जल गई। आग की लपटें देखकर आसपास के लोग दौड़ पड़े, लेकिन तब तक आग पूरी तरह से फैल चुकी थी। ग्रामीणों ने दमकल विभाग को सूचना दी। दमकल विभाग की गाड़ी पहुंचने से पहले ही सब कुछ जलकर राख हो चुका था। पीड़ित दुकानदार ने थाने में तहरीर देकर दबंगों पर आग लगाने का आरोप लगाया है।

पनवाड़ी के अग्निहोत्रीपुरा मोहल्ले में नेहरू इंटर कालेज के पास चंद्रभान अहिरवार किराना की दुकान चलाकर परिवार का गुजर-बसर करता था। सोमवार की रात दबंगों ने दुकान में पेट्रोल डालकर आग लगा दी।

गनीमत यह रही कि घटना के समय दुकान पर कोई नहीं था, जिससे बड़ी घटना टल गई। दुकान में आग लगते ही आसपास के लोग आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े और आनन-फानन में आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक दुकान सहित सब कुछ जलकर राख हो चुका था।

सूचना पर पहुंची पुलिस ने संदेह के आधार पर दो लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। दुकान मालिक ने बताया कि दबंगों ने पहले गालीगलौज की और फिर दुकान में आग लगा दी। पेट्रोल डालकर दुकान में लगाई गई है, जिससे आसपास के लोगों में दहशत का माहौल है। उधर, पुलिस घटना का खुलासा करने में जुट गई है। पुलिस लोगों से घटना के बावत जानकारी जुटाने में लगी हुई है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही आगजनी करने वालों का पर्दाफाश किया जाएगा।

सड़क हादसों में दो बाइक चालक घायल

महोबा। दो सड़क दुर्घटनाओं में दो बाइक चालक घायल हो गए। ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस ने घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका उपचार किया जा रहा है।

जैतपुर क्षेत्र के चपका बिहार गांव का दयाराम पुत्र परमा अपनी बहन से मिलने उसके ससुराल नौगांव फदना जा रहा था, तभी किल्हौवा मार्ग पर एक क्रेशर के समीप सामने से आ रही दूसरी बाइक से भिड़ंत हो गई, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। राहगीरों ने घटना की सूचना पुलिस को दी, सूचना मिलने पर पीआरवी 7349 के कांस्टेबल संदीप कुमार और चालक गौरीशंकर पहुंचे और घायल दयाराम को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पनवाड़ी पहुंचाकर भर्ती कराया गया। वही दूसरी घटना मंगलवार को महोबकंठ कस्बे में घटी, जहां पर अरविंद कुमार पटेल बाइक से खेत पर किसी काम के लिए जा रहा था, तभी पीछे से आ रहे अज्ञात वाहन ने ओवरटेक करते समय बाइक में टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार सड़क पर गिरकर घायल हो गया। घटना के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया। सूचना पर पहुंचे कांस्टेबल नितिन कुमार ने घायल को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया।

बाल विवाह रोकने की शपथ ली

कार्यालय संवाददाता, महोबा

- राजकीय महिला पॉलीटेक्निक चरखारी में रैली के बाद गोष्ठी का आयोजन किया गया
- बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत हुआ आयोजन, युवाओं को कानूनी जानकारी दी गई

गोष्ठी में शादी की सही उम्र के बारे में जानकारी दी गई। अमृत विचार

अमृत विचार। जिलाधिकारी गजल भारद्वाज के निर्देश पर जिला प्रोबेशन अधिकारी के कुशल मार्गदर्शन में राजकीय महिला पॉलीटेक्निक चरखारी में बाल विवाह मुक्त भारत अभियान कार्यक्रम एवं रैली का आयोजन किया गया, रैली कालेज से शुरू होकर मुख्य मार्गों से होते हुए पुनः कालेज आकर एक गोष्ठी में परिवर्तित हो गई, जहां बाल विवाह से लड़कियों के स्वास्थ्य सहित अन्य जीवन में पड़ने वाले प्रभाव पर विस्तार से जानकारी दी गई साथ ही कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को बाल विवाह की रोकथाम के लिए शपथ ग्रहण भी कराया गया।

कार्यक्रम में महिला कल्याण विभाग से संरक्षण अधिकारी श्याम बाबू विश्वकर्मा ने बताया कि बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के अंतर्गत लड़की की शादी की उम्र 18 वर्ष और लड़के की शादी की उम्र 21 वर्ष होनी चाहिए। अगर इससे कम उम्र में शादी होती है तो वह बाल विवाह की श्रेणी में आता है। इस अधिनियम का उल्लंघन करने पर दो साल तक की कैद और एक लाख रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान है।यह एक गैर जमानती और संज्ञेय अपराध है। बच्चों को बाल विवाह के प्रति जागरुक करते हुए बताया गया कि इससे लड़कियों के स्वास्थ्य शिक्षा और भविष्य पर गंभीर रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे उनका शारीरिक और मानसिक विकास बाधित होता है।

जेंडर स्पेशलिस्ट रुचि द्विवेदी ने कहा कि लड़कियों के कम उम्र में विवाह से वे कई गंभीर बीमारियों से ग्रसित हो जाती हैं और घरेलू हिंसा की शिकार हो जाती हैं। कम उम्र में विवाह उनका बचपन और भविष्य दोनों छीन लेता है। लड़कियों को शिक्षित और जागरूक होना बहुत ही जरूरी है। शिक्षा से ही लड़कियों के अंदर आत्मविश्वास पैदा होता है और उन्हें अपने जीवन के प्रति स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है। शिक्षित होने तथा कानूनी रूप से मान्य उम्र में ही शादी करने पर वह परिवार के प्रति अपने दायित्व और कर्तव्यों का सही ढंग से निर्वहन कर सकती हैं इसके साथ ही महिला कल्याण विभाग की संचालित सभी योजनाओं तथा जरूरी हेल्पलाइन नंबरों जैसे1098, 1090, 181, 112 आदि की जानकारी दी गई तथा बच्चों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम में चाइल्ड हेल्प लाइन की सीमा यादव, कॉलेज प्रधानाचार्य रवि कुमार सहित छात्राएं उपस्थित रही।

167 बच्चों का किया गया चेकअप

कार्यालय संवाददाता, महोबा

बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण करती स्वास्थ्य टीम। अमृत विचार

अमृत विचार। जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ. अम्बुज गुप्ता व सीएसी जैतपुर के चिकित्साधीक्षक डॉ. पवन राजपूत की देखरेख में बचेवरा और अजनर आंगनबाडी में राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) के अंतर्गत स्वास्थ्य शिविर आयोजन किया गया। शिविर में 167 बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

आरबीएसके टीम ए ने बचेवरा में कुल 81 बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया साथ ही निशुल्क दवाओं का वितरण किया। इस अवसर पर टीम में शामिल महिला चिकित्सक डॉ. वैशाली सोनी ने बच्चों एवं उनके अभिभावकों को सर्दी जुकाम से बचाव के उपायों की जानकारी दी। वहीं आरबीएसके टीम बी ने अजनर पंचायत भवन स्थित आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 1 में 42 और आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 2 में 44 बच्चों का चेकअप कर आवश्यक सलाह दी। शिविर में महिला चिकित्सक डॉ. आकांक्षा सोनी ने एनीमिया के लक्षणों, कारणों एवं उससे बचाव के उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

गुंडा एक्ट में दो लोग जिला बदर

हमीरपुर। पुलिस की पैरवी के चलते अपर जिला मजिस्ट्रेट (वित्त एवं राजस्व) ने मझगवां व कुरारा क्षेत्र के गुंडा एक्ट के दो अपराधियों को 6 माह के लिए जिलाबदर किया है।

इस अवधि में अपराधी शस्त्र व आग्नेयास्त्र लेकर नहीं चलेंगे। साथ ही जनपद की सीमा में प्रवेश नहीं करेंगे। दूसरे जनपद में जिस स्थान पर निवास करेंगे उसकी सूचना संबंधित न्यायालय एवं स्थानीय पुलिस को भी देंगे। जिलाबदर अभियुक्तों में महेश राजपूत पुत्र कृष्ण कुमार उर्फ किशन राजपूत निवासी ग्राम गोहानी थाना मझगवां व दिलीप पुत्र राम प्रकाश निवासी ग्राम क्योटरा थाना कुरारा हैं।

जरूरतमंदों को कंबल बांट कर कमाया पुण्य

कार्यालय संवाददाता, महोबा

गरीब को कंबल ओढ़ाते एसडीएम डॉ .प्रदीप कुमार। अमृत विचार

अमृत विचार। खिरियाकला गांव में समाजसेवी रमेशचंद्र मिश्रा ने एक सैकड़ा गरीबों और असाहयों को कंबल वितरित किए। कड़ाके की ठंड में कंबल पाकर गरीबों के चेहरे खिल उठे। कंबल वितरण की खबर मिलते ही आसपास के ग्रामीण क्षेत्र के लोग भी कंबल पाने के लिए सुबह से पहुंच गए। उपजिलाधिकारी कुलपहाड़ ने असाहयो को कंबल वितरित किए। उधर बछेछरकला गांव में भी ग्राम प्रधान रणविजय सिंह राजपूत ने 400 जरुरतमंदों को कंबल और शाल वितरित की।

विकासखंड जैतपुर के खिरियाकला गांव में कंबल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कंबल वितरण के मौके पर मुख्य अतिथि के रुप में उपजिलाधिकारी डॉ. प्रदीप कुमार को बुलाया गया। इस मौके पर एसडीएम ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से गरीब और निराश्रितों को बड़ी राहत मिलती है। इस तरह के पुनीत कार्य समय समय पर होते रहने चाहिए। भाजपा नेता उमाशंकर मिश्रा ने कहा कि रमेशचंद्र मिश्रा काफी समय से कंबल वितरण का कार्य कर रहे हैं। भीषण सर्दी में हर साल गरीबों को ठंड से राहत मिलती है। इस मौके पर बसपा नेता निर्दोष दीक्षित, शशिभूषण रिछारिया, महेंद्र द्विवेदी, मानवेंद्र सिंह सहित तमाम लोग मौजूद रहे। उधर जैतपुर ब्लाक के बछेछरकला गांव में स्व. शीतल प्रसाद और स्व. जयदेवी की पुन्य स्मृति में चार सैकड़ा गरीबों को कंबल बांटे गए। प्रधान ने कहा कि उनके माता पिता ने उन्हें समाजसेवा और मानवता की सीख दी थी। इस मौके पर पूर्व ग्राम प्रधान चरण सिंह, सुभाष राजपूत, धीरेंद्र यादव, शिव सिंह, शंभूदयाल, प्रशांत कुमार, मूरत सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

जयंती पर कार्यक्रम | स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर युवाओं को विवेकानंद के आदर्श बताए गए

शिक्षा से सिर्फ ज्ञान नहीं, चरित्र का भी निर्माण

कार्यालय संवाददाता, महोबा

कार्यक्रम को संबोधित करते प्राचार्य डॉ .आरिफ राईन। अमृत विचार

अमृत विचार। शहर के स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय के वार्षिकात्सव और स्वामी विवेकानंद की जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्य डॉ. आरिफ राईन सहित अन्य प्रवक्ताओं ने मां सरस्वती पर दीप प्रज्जवलित किया और इसके बाद स्वामी विवकेनंद और कालेज के संस्थापक स्व. अभर सिंह भदौरिया के चित्र पर पुष्प अर्पित किए गए। इस मौक पर वक्ताओं ने स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

प्राचार्य ने स्वामी विवकानंद को भारत के गौरव एवं युवा शक्ति का प्रतीक बताते हुए कहा कि उन्होंने विश्व में भारत की आध्यत्मिकता एवं ज्ञान का झंडा फहराया और जीवन की सफलता का मंत्र दिया। बताया कि स्वामी ने कहा था कि उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक अपने लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए। प्रोफेसर संतोष शर्मा ने कहा कि शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं बल्कि चरित्र निर्माण भी करना है, जिस तरह स्वामी जी एक महान संत दार्शनिक और राष्ट्रवादी थे, जिन्होंने राष्ट्रीय चेतना जगाई थी, इसलिए उनकी जयंती को युवा दिवस के रुप में घोषित किया गया।

प्रवक्ता विकास वर्मा ने कहा कि विचार व्यक्तित्व की जननी है, व्यक्ति जैसा सोचता है वैसा बन जात है, इसलिए युवा जागरण अभियान के लिए वेदांत सोसाइटी की स्थापना की गई है। कालेज के प्रशांत शुक्ला ने कहा कि स्वामी जी ने शिकागो में धर्म सम्मेलन में कहा था कि खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है। भारत की संस्कृति परम्परा और अध्यात्म को दुनिया में पहचान मिली। प्रोफेसर रामशरण यादव ने कहा कि जैसे सभी नदियां अंत में समुद्र पर जाकर मिलती है उसी प्रकार मनुष्य अलग अलग धर्म के माध्यम से एक ही ईश्वर तक पहुंचते हैं। प्रोफेसर नफीस अली ने कहा कि अनुभव ही आपक एक मात्र शिक्षक है जितना बड़ा संघर्ष होगा जीत भी उतनी शानदार होगी। इस मौके पर संदीप खरे, बैनीप्रसाद, हरीशरण आदि वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। इस में उपस्थित लोगों ने देश की युवा शक्ति को चरित्र निर्माण एवं देश प्रेम और भारत को प्रगतिशील राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया।

अधिवक्ता सभागार में हुई गोष्ठी

महोबा। स्वामी विवेकानंद की जयंती को अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद की जिला इकाई ने युवा अधिवक्ता दिवस के रूप में जिला अधिवक्ता समिति सभागार में मनाया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने विवेकानंद के चित्र पर माल्यार्पण किया और पुष्पांजलि अर्पित की। अतिथियों ने स्वामी विवेकानंद के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अधिवक्ता कृष्ण बिहारी दीक्षित, रामप्रकाश शुक्ला, बार संघ के अध्यक्ष रामसहाय राजपूत, महामंत्री अजीत सिंह परिहार, परिषद के अध्यक्ष कैलाशनाश गोस्वामी, महामंत्री कृष्णगोपाल द्विवेदी कोमल सिंह यादव, दिव्या राजपूत, राधिका गुप्ता, अमित शर्मा, कृत बिहारी दीक्षित, रामनरेश आदि अधिवक्ता मौजूद रहे।

50 साल बाद बेदखली का नोटिस

कार्यालय संवाददाता, महोबा

अपनी फरियाद लेकर कलेक्ट्रेट पहुंचे ग्रामीण परिवार। अमृत विचार

अमृत विचार। 50 साल से काकुन गांव में मकान बनाकर रह रहे ग्रामीणों को अब प्रशासन ने बेदखली का नोटिस जारी कर दिया है। इससे ग्रामीणों की नींद उड़ गई है। मंगलवार को ग्रामीणों ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर जिलाधिकारी से न्याय की गुहार लगाई। प्रशासन श्मशान की जमीन बता ग्रामीणों को हटाने की तैयारी कर रहा है, जबकि ग्रामीणों ने पट्टे की भूमि बताते हुए मकान भी बना लिए हैं।

जिलाधिकारी को दिए गए शिकायती पत्र में ग्रामीणों बताया कि उनके पूर्वज उक्त भूमि पर पचास साल से रहते चले आ रहे हैं। इतना ही नहीं सरकारी योजना के तहत तमाम ग्रामीणों के पक्के आवास भी बन चुके है और तमाम ग्रामीणों ने भी अपने पैसों से आवास बन लिए हैं। अब प्रशासन मरघट की जमीन बताकर मकान खाली करने का दबाव बना रहा है। उनके दरवाजे पर बेदखली के नोटिस भी चस्पा कर दिए गए हैं, जिससे अब उनके आशियाने छिनने के आसार बढ गए हैं। अब उन्हें बेघर होने का खतरा सताने लगा है। चरखारी के काकुन गांव निवासी संतोष, ज्ञानवती और संतराम आदि ग्रामीणों का आरोप है कि भूमि प्रबंधन समिति और कुछ असामाजिक तत्व पुरानी रंजिश के चलते उन्हें बेघर करना चाहते हैं। बताया कि जिस गाटा संख्या पर उनके मकान स्थित हैं, वहां कभी कोई शव नहीं जलाया गया और न ही मौके पर कोई मरघट है, जबकि मरघट की भूमि दूसरे स्थान पर है, जहां एक पक्का शवदाह गृह भी बना हुआ है। ग्रामीणों ने बताया कि उनके मकान चकबंदी से भी पहले के हैं। कई घर तो सरकारी इंदिरा आवास योजना के तहत निर्मित हुए हैं, जिनमें बिजली के कनेक्शन और सरकारी नंबर प्लेटें भी लगी हुई हैं। ज्ञानवती ने बताया कि 50 साल पहले तत्कालीन प्रधान ने उन्हें इस जमीन के पट्टे दिए थे। अब अचानक इसे सरकारी श्मशान भूमि बताकर मकान गिराने की धमकी दी जा रही है। छोटेलाल का मकान गिराए जाने के बाद से पूरे गांव में दहशत का माहौल है।

न्यूज ब्रीफ

अदालतों में कल रहेगा सार्वजनिक अवकाश

चित्रकूट। जिला जज शेषमणि ने बताया कि इलाहाबाद हाईकोर्ट के निर्देश पर 15 जनवरी को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया है। इसके एवज में किसी चतुर्थ शनिवार को न्यायिक कार्य के लिए न्यायालय खोले जाने के भी निर्देश हैं। बताया कि 15 जनवरी को इस न्यायिक अधिष्ठान के वाह्य न्यायालय मऊ, ग्राम न्यायालय मानिकपुर सहित सभी न्यायालयों में अवकाश रहेगा। इसके एवज में 23 मई को सभी न्यायालय खोले जाएंगे।

मानचित्र समाधान दिवस बृहस्पतिवार को होगा

चित्रकूट। सचिव चित्रकूट विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण अजय कुमार यादव ने बताया कि माह के प्रत्येक बृहस्पतिवार को मानचित्र समाधान दिवस का आयोजन किया जाएगा। यह आयोजन अपराह्न एक बजे से पांच बजे तक प्राधिकरण कार्यालय में होगा। इसमें सभी संबंधित भवन मानचित्र प्रस्तुतकर्ता, संबंधित विभाग एवं सभी मानचित्रकार मौजूद रहेंगे। सचिव ने सभी संबंधितों से इस मौके का लाभ उठाने की अपील की।

आग से घर और गृहस्थी का सामान हुआ राख

मऊ (चित्रकूट)। कोल्हुवा गांव में सोमवार रात एक कच्चे घर में आग लग गई, जिससे सारा सामान जलकर राख हो गया। अग्निपीड़िता ननकी देवी ने बताया कि रात करीब 11 बजे आग लगी। किसी तरह वह जान बचाकर घर से बाहर निकली। आग की चपेट में आने से खाने-पीने का सामान, कपड़े और घरेलू वस्तुएं नष्ट हो गईं। ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। लेखपाल ने पीड़ित परिवार को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। फिलहाल आग लगने के कारणों का पता नहीं चल सका है।

अफसरों ने धान क्रय केंद्रों का देखा हाल

चित्रकूट। डीएम के निर्देश पर एसडीएम, नोडल अधिकारियों एवं क्षेत्रीय विपणन अधिकारियों ने धान क्रय केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। जिले में अबतक 1024 किसानों से 6342.31 मीट्रिक टन धान खरीद की जा चुकी है। अधिकारियों ने किसानों से अपील की कि धान क्रय केंद्रों में ही धान बेचें। समस्या समाधान के लिए धान खरीद प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है, जिसके मोबाइल नंबर 7839565017, 7355904833 एवं 8707219558 हैं। किसान धान किसी भी समस्या के लिए खाद्य तथा रसद विभाग के टोल फ्री नंबर 18001800150 पर भी किसान शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

बोलेरो और मारुति की टक्कर में दो घायल

रामनगर (चित्रकूट)। बांधी गांव के पास नेशनल हाइवे के बगल में खड़ी एक मारुति को सामने से आ रहे बोलेरो ने टक्कर मार दी। हादसे में मारुति सवार संजय व अतुल घायल हुए हैं। इनका निवास स्थान पता नहीं चल सका। लोगों की सूचना पर एंबुलेंस पहुंची और घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। बताया जा रहा है कि युवक बनारस से कर्वी की ओर जा रहे थे।

चित्रकला में उमेश और विनय अव्वल

चित्रकूट। सेवा पखवाड़ा के तहत हुई चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने वाले मेधावी बच्चों को मंगलवार को पुरस्कार राशि के चेक दिए गए। जूनियर वर्ग में उमेश और सामान्य (सीनियर वर्ग) में विनय अव्वल रहे। संयुक्त निदेशक पर्यटन आरके रावत, एसडीएम अजय कुमार ने बच्चों की हौसलाफजाई की। जूनियर वर्ग में पार्थ को द्वितीय और जोया को तृतीय पुरस्कार मिला। सामान्य वर्ग में शमा खान दूसरे और प्रवीण दत्त नामदेव तीसरे स्थान पर रहे। कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों ने बच्चों की प्रतिभा की सराहना की। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों में रचनात्मकता एवं सांस्कृतिक चेतना को बढ़ावा देने में सहायक होते हैं। पढ़ाई लिखाई के साथ इस प्रकार की प्रतियोगिताएं भी आवश्यक हैं। उन्होंने बच्चों को और बेहतर करने की प्रेरणा दी।

एसडीएम से कब्जा हटवाने की मांग

कालपी। ब्लाक के छिरिया सलेमपुर निवासी विनोद कुमार ने एसडीएम को शिकायती पत्र देकर बताया कि कूड़ा डालने की सुविधा के लिए सरकारी खाद के गड्ढे आवंटित किए गए थे। खाद के गड्ढों पर गांव के ही एक व्यक्ति ने कब्जा कर लिया है, जिससे ग्रामीणों को कूड़ा डालने में परेशानी हो रही है। ग्रामीणों को सड़क किनारे कूड़ा डालना पड़ रहा हैं, जिससे गंदगी बनी रहती। ग्रामीण ने खाद के गड्ढे को अतिक्रमणमुक्त कराने की मांग की है।

मरने के बाद भी रोशनी देंगे राजेंद्र गुप्त

कार्यालय संवाददाता, चित्रकूट

अमृत विचार। जिले के प्रतिष्ठित व्यापारी राजेंद्र अग्रवाल अपनी मृत्यु के बाद भी दो जिंदगियों की दुनिया रोशन करेंगे। उनकी पत्नी-बेटे और अन्य परिवारीजनों ने उनकी मौत के बाद जानकीकुंड अस्पताल में उनके नेत्रदान कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

पुरानी बाजार कर्वी निवासी सरिता अग्रवाल ने बताया कि मेरे स्व.पति के भाई डा. राकेश अग्रवाल, राजीव अग्रवाल, संजय अग्रवाल एवं मेरे पुत्र राहुल अग्रवाल सहित सारे परिवार की इच्छा थी कि हम लोग उनको तो जिंदा नहीं कर सकते, पर नेत्रदान करके उनकी आंखों को तो जिंदा रख सकते हैं। उनकी आंखों से दो लोग इस दुनिया को देख सकते हैं। इससे बड़ा क्या पुण्य होगा। इसलिए उनकी मृत्यु के पश्चात हमने सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय चित्रकूट से संपर्क किया और उनके नेत्रदान किए। बताया कि सूचना मिलते ही तत्काल चिकित्सीय टीम हमारे यहां पहुंची और नेत्रदान की प्रक्रिया को पूर्ण किया। वहीं सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय टीम ने इस महान काम की जमकर सराहना की। बताया कि इस नेत्रदान से दो लोगों को नई रोशनी मिलेगी।

स्व. राजेंद्र अग्रवाल के परिवारीजनों को नेत्रदान संबंधी पत्र देते चिकित्सक।

- व्यापारी परिवार ने जानकीकुंड अस्पताल में किया नेत्रदान

चिकित्सालय के प्रशासक डा. इलेश जैन ने पुण्य आत्मा के लिए प्रार्थना की। अग्रवाल परिवार की सराहना करते हुए कहा कि नेत्रदान बहुत ही पुनीत कार्य है। इसके लिए समाज के हर व्यक्ति को आगे आना चाहिए। साथ ही समाज में नेत्रदान को लेकर फैली कुरीतियों के बारे में लोगों को जागरूक करने का काम भी समाज के हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। सरिता और उनके परिवार की इस मानवीय पहल की लोगों ने सराहना की।

एनडीपीएस एक्ट में दो को कारावास

चित्रकूट। एनडीपीएस एक्ट में दोषी दो लोगों को अपर सत्र न्यायाधीश प्रथम अनुराग कुरील ने एक वर्ष एक माह और 15 दिन के सश्रम कारावास की सजा दी। दोनों को अर्थदंड भी दिया।

सहायक शासकीय अधिवक्ता सनद कुमार मिश्रा ने बताया कि 13 जुलाई 23 को तत्कालीन निरीक्षक अजीत कुमार पांडेय ने राहुल रैकवार पुत्र रामबाबू निवासी अकबरपुर थाना भरतकूप को एक किलो 300 ग्राम गांजा, मोहित उर्फ कर्मवीर सिंह पुत्र महेंद्र निवासी लैना बाबा रोड शिवरामपुर को एक किलो 100 ग्राम गांजा के साथ गिरफ्तार किया था। इसकी विवेचना तत्कालीन एसआई रामअधार यादव ने की थी। मंगलवार को अपर सत्र न्यायाधीश प्रथम अनुराग कुरील ने दोनों दोषियों को सजा सुनाई।

कलेक्ट्रेट के पास किशोरी ने जान देने का किया प्रयास

कार्यालय संवाददाता, चित्रकूट

- लोगों ने देखा तो बचाया, जिला अस्पताल से प्रयागराज रेफर

अमृत विचार। कलेक्ट्रेट के पास खेत में एक किशोरी ने पेड़ में फंदा लगाकर आत्महत्या करने की कोशिश की। कलेक्ट्रेट में मौजूद लोगों ने इसे समय रहते देख लिया और फंदे से उतारकर अस्पताल भेजा। उसे प्रयागराज रिफर किया गया है। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

मंगलवार की सुबह कलेक्ट्रेट और आसपास उस समय हड़कंप मच गया, जब लोगों ने देखा कि पास के खेत में एक किशोरी फांसी लगाकर आत्महत्या की कोशिश कर रही है। प्रत्यक्षदर्शियों और ड्यूटी पर तैनात होमगार्ड ने इसे आननफानन में पेड़ से नीचे उतारा। मौके पर एडीएम सहित अन्य अधिकारी और कर्मचारी पहुंच गए। आननफानन में उसे पास स्थित जिला अस्पताल पहुंचाया गया। जहां से प्रयागराज रिफर कर दिया गया। सूचना पर किशोरी के परिवारीजन भी अस्पताल पहुंच गए। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि सूचना मिली थी कि कलेक्ट्रेट परिसर के बाहर खेत में किसी लड़की ने फांसी लगाने की कोशिश की है। उसे बचाकर हायर सेंटर इलाज के लिए भेजा गया है। बताया कि सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मामले की गहन जांच की जा रही है। इसमें जो भी दोषी पाया जाएगा, उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

ड्रॉफ्ट सूची में मृतकों के भी नाम, उठ रहे सवाल

मतदाता सूची के आलेख्य प्रकाशन में सामने आईं गड़बड़ियां

संवाददाता, कालपी (जालौन)

- भाग संख्या-11 की सूची में 18 मृतकों के नाम दर्ज
- भाग संख्या-10 की ड्राफ्ट सूची में 8 मृतक शामिल

अमृत विचार। भारत निर्वाचन आयोग की त्रुटिरहित मतदाता सूची की मंशा एसआईआर के बाद भी पूरी नहीं हुई। जिला निर्वाचन अधिकारी की ओर से जारी की गई ड्राफ्ट सूची में अभी भी मृतकों के नाम शामिल हैं, जिससे प्रगाढ़ पुनरीक्षण प्रक्रिया पर सवाल उठ रहे हैं।

भारत निर्वाचन आयोग ने मतदाता सूची को दुरुस्त करने के लिए विशेष पुनरीक्षण अभियान चलाया। इसके बाद ड्राफ्ट सूची का प्रकाशन हुआ, जिसमें मृतकों को सूची से बाहर करने के साथ 2003 की मतदाता सूची से सम्बन्ध स्थापित न करने वाले मतदाताओं के अलावा शादीशुदा लडकियों और स्थाई रूप से बाहर रह रहे मतदाताओं का नाम काटा गया। इस प्रक्रिया के बाद कालपी विधानसभा क्षेत्र में मतदाताओं की संख्या 3,47,607 रह गई है। ड्राफ्ट सूची में लगभग 51,000 मतदाता कम हुए हैं, जिनमें 9,145 मृतक मतदाता शामिल हैं। लगभग 28,000 मतदाताओं को नोटिस भेजने की तैयारी है।

ड्राफ्ट सूची प्रकाशित होने के बाद गड़बड़ियां भी सामने आने लगी हैं। रामचबूतरा द्वितीय के भाग संख्या-11 की सूची में 18 मृतकों के नाम मतदाता के रूप में दर्ज हैं तो कुछ मतदाताओं के एक से अधिक जगह नाम हैं। इस वार्ड के निवासी सर्वप्रिय गोयल, एनुल हसन मंसूरी कहते हैं कि बीएलओ ने सही ढंग से काम नहीं किया। पुरानी सूची से ही एसआईआर फार्म भरकर प्रक्रिया को पूरा कर लिया गया है। वहीं भाग संख्या-10 की ड्राफ्ट सूची में भी 8 मृतकों के नाम शामिल हैं। इतना ही नहीं, सूची में शादीशुदा होकर गैरजनपद में रहीं लड़कियों के नाम भी शामिल हैं, जिससे पूरी प्रक्रिया पर सवाल खड़े हो रहे हैं। इस संबंध में एसडीएम मनोज कुमार सिंह से बात करने की कोशिश की गई, लेकिन उनके जिला स्तरीय बैठक में होने के चलते बात नही हो सकी।

लेखपाल समय से आख्या लगाएं

कालपी (जालौन)। मंगलवार को तहसील सभागार में लेखपालों की बैठक में तहसीलदार ने कहा कि जनता से जुड़े कार्यों का समय से हल किया जाए। उन्होंने प्रमाण पत्र निर्गत करने में लेखपालों को समय पर रिपोर्ट लगाने के निर्देश दिए।

तहसीलदार अभिनव तिवारी ने कहा कि इस समय शासन स्तर से विभिन्न पदों की भर्ती निकाली गई है, ऐसे में छात्र-छात्राओं को आय, निवास व जाति प्रमाण पत्रों की आवश्यकता है। इनमें लेखपालों की रिपोर्ट अहम है। रिपोर्ट समय से नहीं लग रही है। जनता से जुड़े काम भी समय से नहीं हो पा रहे हैं, जिससे जनता भी अधिकारियों के पास तक जा रही है। उन्होंने लेखपालों को हिदायत दी कि निर्धारित समय में काम नहीं हुए तो कार्रवाई तय है। उन्होंने कहा कि एसआईआर प्रक्रिया और एग्री स्टेक की प्रगति संतोषजनक नहीं है। एसआईआर की ड्राफ्ट सूची प्रकाशित हुई है, जिसमें अभी भी गड़बड़यां हैं।

गोरक्षा प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों को सम्मानित करते सभासद शंकर यादव।

गोरक्षा करने वालों का सम्मान

कार्यालय संवाददाता, चित्रकूट

अमृत विचार। विश्व हिंदू महासंघ गोरक्षा प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष धीरज त्रिपाठी सहित उनकी टीम को गोरक्षा क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने पर सम्मानित किया गया।

नगर पालिका परिषद के सभासद समाजसेवी शंकर यादव ने जिलाध्यक्ष धीरज त्रिपाठी, जिला प्रभारी पद्मेंद्र त्रिपाठी और जिला महामंत्री धीरेंद्र मिश्रा को सम्मानित किया। शंकर यादव ने कहा कि कुछ जिम्मेदार अधिकारी और गौशालाओं का संचालन करने वाले प्रधान व सचिव सरकार की मंशा के अनुरूप कार्य नहीं कर रहे हैं। इसका खामियाजा गोवंशों को भुगतना पड़ रहा है।

धीरज त्रिपाठी ने ग्रामवासियों से गोवंश और गौशालाओं की स्थिति को लेकर जागरूक होने की अपील की कि सभी को चाहिए कि गोवंशों को गौशालाओं में सुरक्षित रखकर सेवा भाव से कार्य करें और पुण्य के भागी बनें।

स्टाल लगाकर गर्म खिचड़ी खिलाई

जालौन। मकर संक्रांति पर्व को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से नगर के केशव बस्ती क्षेत्र में खिचड़ी वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

केशव बस्ती में आरएसएस की ओर से आयोजित खिचड़ी वितरण में संघ के स्वयं सेवकों ने श्रद्धा और सेवा भाव के साथ खिचड़ी का वितरण किया। आशीष सोनी ने कहा कि यह पर्व सूर्य के उत्तरायण होने का प्रतीक है, जो नई ऊर्जा, सकारात्मकता और सामाजिकता का संदेश देता है। सामूहिक आयोजनों से आपसी जुड़ाव बढ़ता है और नई पीढ़ी को भारतीय परंपराओं से जोड़ने का कार्य होता है। कार्यक्रम के समापन पर आयोजकों ने लोगों का आभार जताया और मकरसंक्रांति पर्व शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में विकास गुप्ता, हरिश्चंद्र वर्मा, मनीष सोनी, अरविंद बीनू गुप्ता, आशीष सोनी, विनय खत्री, गोलू सोनी, सुशील तिवारी, विवेक सोनी, कपिल सोनी, बॉबी गुप्ता आदि रहे।

खाद्य सुरक्षा सलाहकार समिति की बैठक में निर्देश देते जिलाधिकारी पुलकित गर्ग।

मिलावटखोरों पर सख्त कार्रवाई की जाए: डीएम

कार्यालय संवाददाता, चित्रकूट

- खाद्य सुरक्षा सलाहकार समिति की बैठक में डीएम ने दिए निर्देश

अमृत विचार। जिलाधिकारी पुलकित गर्ग ने खाद्य एवं औषधि प्रशासन के अफसरों को निर्देश दिए कि मिलावटी एवं असुरक्षित खाद्य पदार्थ कारोबारियों पर कड़ी कार्रवाई करें। डीएम मंगलवार को जिला स्तरीय खाद्य सुरक्षा सलाहकार समिति की बैठक में विभाग के कामों की समीक्षा कर रहे थे।

बैठक में सहायक आयुक्त (खाद्य) ने अबतक की प्रवर्तन कार्रवाई की जानकारी दी। बताया कि निरीक्षण के दौरान पाई गईं अनियमितताओं पर सात औषधि विक्रय प्रतिष्ठानों के लाइसेंस निरस्त किए गए। 16 प्रकरण वर्तमान में न्यायालय में विचाराधीन हैं। डीएम ने निर्देशित किया कि प्रभावी पैरवी सुनिश्चित करते हुए लंबित वादों का निस्तारण कराया जाए। बताया गया कि मिलावटी खाद्य पदार्थ एवं औषधि की शिकायतें टोल-फ्री नंबर 18001805533 पर अथवा सहायक आयुक्त (खाद्य) के मोबाइल नंबर 9455483881 तथा औषधि निरीक्षक के मोबाइल नंबर 8299898979 पर दर्ज की जा सकती हैं। बैठक में एडीएम (वि/रा), मुख्य चिकित्साधिकारी, जिला आबकारी अधिकारी, जिला आपूर्ति अधिकारी, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन के अधिकारी, जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, समाजसेवी अभिमन्यु सिंह, सुभाष साहू आदि मौजूद रहे।

कालपी के यमुना घाटों पर तैनात होगी पुलिस

संवाददाता, कालपी (जालौन)

अमृत विचार। मकर संक्रांति पर्व पर बुधवार को यमुना स्नान के लिए जुटने वाली भीड़ के मद्देनजर पुलिस प्रशासन सतर्क हो गया है। मंगलवार को पुलिस अधीक्षक डॉ.दुर्गेश कुमार ने यमुना घाटों का निरीक्षण कर स्थानीय पुलिस को व्यवस्था दुरुस्त रखने के निर्देश दिए।

मकर संक्रान्ति पर यमुना स्नान के लिए नगर और ग्रामीण क्षेत्र से बडी संख्या में लोग आते हैं। किला और पीला घाट पर भारी भीड़ जुटती है। इसी के मद्देनजर मंगलवार की दोपहर एसपी डॉ. दुर्गेश कुमार ने किला घाट औक पीला घाट का जायजा लिया। एसपी ने पुलिस को निर्देश दिए कि घाटों पर पुलिस बल सतर्क रहे और किसी को भी निर्धारित स्थल से अलग स्नान करने की अनुमति नहीं दें। महिलाओं की संख्या अधिक होने पर उनकी सुरक्षा के लिए महिला पुलिस बल भी तैनात करने के दिए। उन्होंने सीओ अवधेश कुमार सिंह को भीड़ बढ़ने की स्थिति में यातायात व्यवस्था को दुरुस्त रखने के लिए ठोस रणनीति बनाने के दिशा निर्देश दिए। इस दौरान नगर पालिका के जिम्मेदारों के साथ कोतवाली प्रभारी निरीक्षक अजयब्रम्ह तिवारी मौजूद रहे।

कालपी में यमुना घाट का निरीक्षण करते एसपी डॉ. दुर्गेश कुमार।

शून्य प्रगति वाले आंगनबाड़ी केंद्रों पर की जाए कार्रवाई: सीडीओ

मंगलवार को रामनगर ब्लाक में समीक्षा बैठक के दौरान निर्देश देते मुख्य विकास अधिकारी डीपी पाल। अमृत विचार

संवाददाता, रामनगर (चित्रकूट)

अमृत विचार। सीडीओ डीपी पाल ने मंगलवार को ब्लाक सभागार में समीक्षा बैठक की। उन्होंने शून्य प्रगति वाले आंगनबाड़ी केंद्रों पर कार्रवाई और शत प्रतिशत उपलब्धि प्राप्त करने वाले केंद्रों को प्रशस्ति पत्र देने के निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि लापरवाही पर सुपरवाइजर से स्पष्टीकरण लिया जाए।

बैठक में स्वास्थ्य एवं पोषण की समीक्षा के दौरान सीडीओ ने कहा कि बच्चों को टीकाकरण से इनकार करने वाले परिवारों को समझाएं और टीकाकरण कराएं। आयुष्मान भारत संबंधी शिविर लगाकर पात्र लाभार्थियों को कार्ड वितरित किया जाए। जल जीवन मिशन के अंतर्गत विद्यालय, आंगनबाड़ी केंद्रों, उप स्वास्थ्य केंद्रों में नल कनेक्शन किया जाए। सैम/मैम बच्चों एवं हाई रिस्क प्रेगनेंसी वाली महिलाओं की निगरानी कंट्रोल रूम से करने के निर्देश दिए गए। इसके अलावा सीडीओ ने हैंडओवर न हुए आंगनबाड़ी केंद्रों की सूची उपलब्ध कराने, विद्यालय एवं आंगनबाड़ी परिसरों में बाउंड्रीवाल, शौचालय एवं मूत्रालय निर्माण को प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। खंड शिक्षाधिकारी, रामनगर को लर्निंग आउटकम पर विशेष ध्यान देने तथा डीआईओएस को संबंधित संकेतकों की प्रगति कम होने पर स्पष्टीकरण देने के लिए निर्देशित किया।

दूरसंचार विभाग के अधिकारी को नोटिस

- सीडीओ ने दूरसंचार विभाग के अधिकारी के बैठक में नहीं आने पर नोटिस जारी करने को कहा। पीएम आवास योजना के शेष आवासों का निर्माण शीघ्र पूर्ण कराने अन्यथा रिकवरी की कार्रवाई करने के निर्देश दिए। सब्जी विभाग को समय से डेटा फीडिंग सुनिश्चित कराने के लिए निर्देशित किया।

किसानों ने साझा किए अनुभव | गनीवां कृषि विज्ञान केंद्र का भ्रमण कर जिलाधिकारी ने किसानों को दी सलाह

दलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाने की जरूरत

कार्यालय संवाददाता, चित्रकूट

अमृत विचार। जिलाधिकारी पुलकित गर्ग ने किसानों को सलाह दी कि किसानों को दलहनी फसलों का उत्पादन करना चाहिए। डीएम नें मंगलवार को कृषि विज्ञान केंद्र गनीवां का भ्रमण किया।

जिलाधिकारी ने आदर्श दलहन ग्राम योजना के अंतर्गत मसूर उत्पादन में सूक्ष्म पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि सभी किसान दलहन उत्पादन के लिए कृषि विज्ञान केंद्र से सलाह लें और ज्यादा से ज्यादा भूमि का उपयोग इसके उत्पादन के लिए करें। जिला प्रशासन एवं कृषि विभाग द्वारा आवश्यक सहयोग किया जाएगा। जिलाधिकारी ने किसानों से अपील की कि वे नवीन कृषक उत्पादक संगठन का गठन करें अथवा पहले से गठित कृषक उत्पादक संगठनों से जुड़कर दलहन उत्पादन के क्षेत्र में विस्तार सुनिश्चित करें। इससे उत्पादन को अच्छा बाजार मिल सकेगा, साथ ही सामूहिक प्रयास से लागत घटेगी और आय में वृद्धि होगी। कार्यक्रम के दौरान किसानों ने अपने अनुभव साझा किए और खेती में आ रही समस्याओं से जिलाधिकारी को अवगत कराया। इस पर डीएम ने इनके समाधान का आश्वासन दिया। जिलाधिकारी ने केंद्र में संचालित विभिन्न परियोजनाओं को देखा। यहां उप निदेशक कृषि राजकुमार, जिला उद्यान अधिकारी प्रतिभा पांडेय मौजूद रहीं। वैज्ञानिक विजय गौतम, उत्तम कुमार त्रिपाठी, डा. मनोज शर्मा, अंजली यादव एवं रोहित मिश्रा ने महत्वपूर्ण जानकारियां दीं।

कृषि विज्ञान केंद्र का भ्रमण करते जिलाधिकारी पुलकित गर्ग। अमृत विचार

किसानों के प्रयास से आयात होगा कम

- जिलाधिकारी ने कहा कि वर्तमान समय में देश को कुछ दलहनी फसलों का आयात करना पड़ रहा है। इसे किसानों के सामूहिक प्रयासों से कम किया जा सकता है। मसूर, अरहर एवं उड़द जैसी दलहनी फसलों के उत्पादन में क्षेत्रफल एवं उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

किसानों को तकनीकी प्रशिक्षण देगा क्रेंद्र

- डीएम ने कहा कि जिले में उन्नत किस्म के बीजों की उपलब्धता तथा आवश्यक तकनीकी प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से दिया जाएगा। इस अवसर पर उन्होंने पांच चयनित किसानों को ग्रीष्मकालीन दलहन उत्पादन के लिए मूंग का बीज वितरित किया। साथ ही उद्यान विभाग द्वारा सब्जी बीजों का भी वितरण किया गया।

युवा सम्मेलन में मौजूद कुलपति प्रो .आलोक चौबे और अतिथि। अमृत विचार

आरएसएस को समझने के लिए शाखा में आना जरूरी: प्रवीण

सीतापुर (चित्रकूट)। आरएसएस के मध्य क्षेत्र प्रमुख प्रवीण गुप्त ने कहा कि सकारात्मक कार्य करने वाले व्यक्ति या संगठन की पहले उपेक्षा, उपहास और विरोध होता है। बाद में उसकी स्वीकार्यता होती है। संघ के साथ भी ऐसा ही हुआ।

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के युवा सम्मेलन में उन्होंने कहा कि आरएसएस को पुस्तकों में पढ़कर नहीं समझा जा सकता है। इसके लिए नियमित रूप से शाखा में आना होगा। संघ शाखा, व्यक्ति निर्माण की अभिनव पद्धति है। सम्मेलन में मार्गदर्शक व्याख्यान सह बौद्धिक के साथ शाखा के नियमित खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम विषयों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ मझगवां खंड के तत्वावधान में किया गया। कुलगुरु प्रो. आलोक चौबे इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

जब मैं कहता हूं कि आप देवी या देवता हैं, तो मेरा मतलब है कि आप में अनंत संभावनाएं हैं, आपकी क्षमताएं अनंत हैं।
-ओशो, दार्शनिक

विफलता और प्रश्न

पीएसएलवी-सी 62 मिशन मई 2025 में प्रक्षेपित पीएसएलवी-सी 61 मिशन की तरह ही असफल हो गया। इसरो की विगत उपलब्धियों और पीएसएलवी की 90 फीसद से ज्यादा सफलता के मद्देनजर शक नहीं कि इसरो अपनी गलती सुधार कर भविष्य में ऐसे मिशन में कामयाब रहेगा। 64 प्रक्षेपणों में पांच विफलताएं बुरा प्रदर्शन नहीं। पीएसएलवी ने ही चंद्रयान-1 और आदित्य-एल 1 सौर वेधशाला जैसे मिशनों को प्रक्षेपित किया था। पर इस मिशन की नाकामी ने इसरो की प्रतिष्ठा, पीएसएलवी की क्षमताओं पर सवाल खड़ा किया है। अंतरिक्ष बाजार में तेजी से उभरते भारत की गति प्रगति को तात्कालिक तौर पर ही सही, झटका तो लगा है। इस विफलता के वित्तीय परिणाम शोचनीय हैं। प्रतिस्पर्धी वैश्विक प्रक्षेपण बाजार में इसरो पीएसएलवी को एक वाणिज्यिक उत्पाद के तौर पर प्रस्तुत करता है। यह ईओएस-ए 1 प्रेक्षण उपग्रह अन्वेषा के साथ सात देशों के स्टार्टअप्स के अलावा शैक्षणिक संस्थानों की ओर से विकसित 15 अन्य पेलोड लेकर जा रहा था, सभी नष्ट हो गए। स्वदेशी संस्थाओं की बात दीगर है, लेकिन विदेशी संस्थाओं का भरोसा इस दोहरी असफलता से किंचित डिगेगा। ऐसे में अंतरिक्ष बाजार की अंतर्राष्ट्रीय बीमा कंपनियां पीएसएलवी के जोखिम का आकलन कर प्रीमियम बहुत ज्यादा बढ़ाएंगी, इसरो का प्रक्षेपण किफायती नहीं रहेगा। चार चरणों वाले रॉकेट पीएसएलवी-सी 62 पहले और दूसरे चरण में सामान्य रहा। तीसरे चरण के दौरान रॉकेट नियत प्रक्षेप पथ से हट गया। वह असामान्य रूप से घूमने लगा, जिसे "रोल रेट डिस्टर्बेंस" कहते हैं, इसके बाद वह अपेक्षित मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सका। संभवतः सी 61 मिशन के तीसरे चरण की तरह उसने भी 'चैंबर प्रेशर' खो दिया। नोजल या केसिंग प्रणाली में किसी संरचनात्मक या सामग्री संबंधी विफलता भी इसकी वजह हो सकती है। नाकामी का कारण अभी स्पष्ट नहीं है, जांच जारी है।

पिछले साल की विफलता की वजहें सार्वजनिक नहीं की गईं, फेल्योर एनालिसिस कमिटी की रिपोर्ट प्रधानमंत्री कार्यालय में रखा रह गया। संभवतः रक्षा सुरक्षा मामलों को लेकर गोपनीयता बरती गई हो, ऐसे में इस बार भी उम्मीद कम ही है कि गलतियों की रिपोर्ट सामने आए। कुछ बरसों से नाकामी के विश्लेषण वाली रिपोर्टों को सार्वजनिक करना बंद है। रिपोर्ट सार्वजनिक होती तो पता चलता कि क्या कमियां थीं, उन्हें ठीक करने के लिए क्या किया गया? इस बार बस भरोसा दिलाया गया कि तीसरे चरण के डिजाइन को सुदृढ़ किया गया है, लेकिन नाकामी ही हाथ आई। करदाता जनता और वाणिज्यिक हितधारकों को यह जानने का पूरा हक है कि 2025 में क्या गलत हुआ था? क्या 2026 में भी ऐसी ही गलती दोहराई गई और तीसरा चरण फिर से क्यों प्रभावित हुआ? निजी उद्योगों के लिए अंतरिक्ष निर्माण क्षेत्र खोलने की भारत की पहल पर भी प्रश्न है। ये कभी-कभार होने वाली गड़बड़ियां नहीं है। फिलहाल, इसरो के लिए भरोसा फिर से कायम करने और गुणवत्ता सुनिश्चित करने वाले नियमों एवं प्रक्रियाओं को दोबारा बनाने का मुश्किल काम शुरू कर देना चाहिए, जिसका सबसे अच्छा तरीका तो यही होगा कि अंतरिक्ष विभाग सी 61 मिशन की "फेलियर एनालिसिस कमेटी" द्वारा दी गई रिपोर्ट को जारी करे, जिससे विफलता का सटीक कारण जानकर सबक लिया जा सके।

प्रसंगवश

मोटे अनाजों की खेती में बुंदेलखंड क्यों पिछड़ा

बुंदेलखंड की जलवायु, मिट्टी और पृष्ठभूमि मोटे अनाजों या जिन्हें हम मिलेट्स भी कहते हैं, के अनुकूल थी, लेकिन यह विचारणीय तथ्य है कि बुंदेलखंड से मोटे अनाजों की खेती क्यों गायब सी हो गई है? सरसरी तौर पर देखें तो यह खाद्य सुरक्षा के लिए किए गए सरकारी प्रयासों और हरित क्रांति के परिणामों का एक दुष्प्रभाव-सा दिखता है, परंतु इसके पीछे अनेक महत्वपूर्ण कारण छुपे हुए हैं, जो हमारी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से जुड़े हुए हैं। ऐतिहासिक तौर पर हमारी सभ्यता मोटे अनाजों विशेषकर बाजरा, ज्वार, कोदो, रागी, काकुन, कनकी, मक्का पर निर्भर थीं, क्योंकि इन्हें आसानी से उगाया जा सकता था। ये न सिर्फ पौष्टिक थे, बल्कि शुष्क जलवायु के लिए उपयुक्त भी थे, जिसमें सिंचाई या ज्यादा शारीरिक श्रम की आवश्यकता नहीं पड़ती थी, परंतु उत्पादन कम होने के कारण यह बढ़ती जनसंख्या को खिलाने के लिए पर्याप्त नहीं था। इस समस्या के निवारण हेतु 1960 के दशक में शुरू हुई हरित क्रांति का उद्देश्य

अविनाश झा
डीएफएमओ, चित्रकूट

वैश्विक स्तर पर खाद्य उत्पादन को बढ़ाकर लोगों की खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करना था, जिसके लिए इसमें चावल और गेहूं जैसी अधिक उपज और अधिक कैलोरी प्रदान करने वाली फसलों को प्राथमिकता दी गई। स्वाभाविक रूप से सरकारों और वैज्ञानिकों ने इन अनाजों की किस्में विकसित करने में भारी निवेश किया। उन्होंने उत्पादन बढ़ाने के लिए सब्सिडी, सिंचाई सुविधाएं और रासायनिक उर्वरक उपलब्ध कराए। उन्नत बीजों की अनुपलब्धता और अनुसंधान व विकास में निवेश की कमी के कारण मोटे अनाजों की उत्पादकता कम बनी रही। स्वाभाविक रूप से इससे इनकी खेती में धीरे-धीरे गिरावट आ गई। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 1983 से वर्ष 2011 के बीच भारत मंर शहरी और ग्रामीण दोनों ही परिवारों में मोटे अनाज की खपत में भारी कमी आई।

शहरीकरण, खान पान में बदलाव और आधुनिक जीवनशैली से भी मोटे अनाजों के उपभोग में कमी आई। परिष्कृत गेहूं और पॉलिश किए हुए चावल हमारे मुख्य भोजन बन गए। गेहूं और चावल को 'बेहतर' या उच्च सामाजिक स्थिति वाला अनाज माना जाने लगा, जबकि मोटे अनाजों को 'गरीबों का भोजन' समझकर उपेक्षा की जाने लगी। भारत में वर्ष 1961 और वर्ष 2011 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में कुल अनाजों में मोटे अनाजों का अनुपात 35 प्रतिशत से घटकर 5 प्रतिशत हो गया और शहरी क्षेत्रों में यह 17 प्रतिशत से घटकर 3 प्रतिशत हो गया। मोटे अनाजों की कम उत्पादकता ने भी इसकी खेती पर असर डाला है। भारत में वर्ष 1961 और वर्ष 2011 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में कुल अनाजों में मोटे अनाजों का अनुपात 35 प्रतिशत से घटकर 5 प्रतिशत हो गया और शहरी क्षेत्रों में यह 17 प्रतिशत से घटकर 3 प्रतिशत हो गया। मोटे अनाजों की कम उत्पादकता ने भी इसकी खेती पर असर डाला है। बुंदेलखंड के दृष्टि से देखें, तो मोटे अनाजों की खेती निरंतर कम होते रहने के पीछे यहां की अन्ना प्रथा को एक महत्वपूर्ण कारण माना जाता रहा है, लेकिन मोटे अनाजों की खेती के प्रति अरुचि का सबसे बड़ा कारण बेहतर मार्केटिंग व्यवस्था का अभाव, जागरूकता, नई तकनीकों के उपयोग में कमी, मंडी में खपत, प्रोसेसिंग व्यवस्था का अभाव है। जाहिर तौर पर कोई भी किसान अब सिर्फ खाने के लिए खेती नहीं करता है, बल्कि यह उसकी आजीविका का साधन है। हाल के दिनों में एफ पीओ/ एफपीसी के माध्यम से बेहतर मार्केटिंग व्यवस्था, प्रोसेसिंग युनिटों की स्थापना, मिलेट्स महोत्सव के जरिए जागरूकता और जानकारी बढ़ाना, किसानों को बाजार से सीधे जोड़ने के प्रयासों से मोटे अनाजों की खेती के प्रति रुचि बढ़ी है। आशा है कि इससे निकट भविष्य में बुंदेलखंड फिर से अपनी पुरानी पहचान पाने में सफल होगा।

नाटो के अस्तित्व पर मंडरा रहे संकट के बादल

दिग्विजय सिंह
कानपुर

नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन (नाटो) के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इसकी वजह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की दादागिरी है। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को उनके देश में घुसकर गिरफ्तार किए जाने के बाद से ही ट्रंप अपनों के साथ ही विरोधियों के भी निशाने पर हैं, लेकिन ग्रीनलैंड पर कब्जे और कोलंबिया, क्यूबा, मैक्सिको जैसे देशों पर हमले की धमकी अब उनके मित्र देशों के राष्ट्राध्यक्षों को भी रास नहीं आ रही है। ग्रीन लैंड को अमेरिका में मिलाने की बार-बार धमकी के बाद फ्रांस, ब्रिटेन जैसे देशों के राष्ट्र प्रमुखों ने गंभीर परिणाम भुगतने की न सिर्फ चेतावनी दी है, बल्कि इशारे में यह भी बता दिया है कि नाटो का अस्तित्व इससे मिट जाएगा।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद नाटो की स्थापना 1949 में हुई थी। शुरुआती दौर में इस संगठन में अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और फ्रांस शामिल थे। इसका मूल उद्देश्य संगठन के किसी भी देश पर हमले की स्थिति में सदस्य देश मदद को आगे आएंगे और आक्रमण करने वाले देश के विरुद्ध मिलकर लड़ेंगे। दुनिया के सबसे बड़े इस सैन्य संगठन से लोहा लेने की स्थिति में फिलहाल कोई गैर-नाटो देश नहीं है, लेकिन मादुरो की गिफ्तारी के बाद पूरी दुनिया में भूचाल आ गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव ने भी इस घटना को लेकर गंभीर टिप्पणी की और अमेरिका को चेताया।

रूस, चीन जैसे देशों ने ट्रंप से मादुरो को तत्काल छोड़ने की मांग की, लेकिन अमेरिका के मित्र राष्ट्रों ने बयान देने में संयम बरता। अब वे भी ट्रंप के विरुद्ध दिख रहे हैं। इसकी वजह ट्रंप का आक्रामक रवैया है। ट्रंप लगातार कह रहे हैं कि वे डेनमार्क के नियंत्रण वाले ग्रीन लैंड को अमेरिका में मिलाना चाहते हैं, क्योंकि वहां आसपास रूस, चीन जैसे विरोधी देशों की सेनाएं हैं। पिछले दिनों एयर फोर्स वन में पत्रकारों से उन्होंने कहा कि हमें राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से ग्रीनलैंड चाहिए। हम 20 दिन में इस पर बात करेंगे। उनके इस बायान पर डेनमार्क की प्रधानमंत्री मेटे फ्रेडरिकसन ने सख्त रुख अपनाया और साफ कर दिया कि अमेरिका ने ऐसा किया तो यह नाटो के अंत की शुरुआत होगी।

नॉर्डिक देशों के साथ ही ब्रिटेन डेनमार्क और ग्रीनलैंड के आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन करके ट्रंप को यह बता दिया कि उन्हें अब अपने बयान वापस लेने चाहिए। ग्रीनलैंड भले ही काफी हद तक स्वायत्त है, लेकिन अभी वह डेनमार्क का हिस्सा है। ऐसे में अगर अमेरिका वहां सैन्य कार्रवाई करता है, तो फिर यह संगठन में फूट की शुरुआत होगी। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने डोनाल्ड ट्रंप को चेताते हुए कहा है कि ग्रीनलैंड वहां के लोगों का है और इसके भविष्य का फैसला सिर्फ डेनमार्क और ग्रीनलैंड ही करेंगे। हालांकि इन चेतावनियों का फर्क ट्रंप पर होता नहीं दिख रहा है।

नाटो के रक्षा बजट में अमेरिका का योगदान करीब 16 फीसदी है। अमेरिका के सांसद ही नाटो से अमेरिका के अलग होने की मांग कर रहे हैं। हालांकि ट्रंप सामरिक दृष्ट से कभी नहीं चाहेंगे कि नाटो से अमेरिका अलग हो, लेकिन उनकी बढ़ती महत्वाकांक्षा इस संगठन को मटियामेट कर सकती है। मादुरो की गिरफ्तारी के बाद ट्रंप वेनेजुएला की नई राष्ट्रपति को भी लगातार धमकी दे रहे हैं। माना जा रहा है कि वहां के तेल भंडार और व अन्य खनिजों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए अमेरिका फिर हमले करेगा और वहां के लोगों को चैन से जीने नहीं देगा।

मादुरो की गिरफ्तारी के बाद कोलंबिया पर भी अमेरिकी हमले का खतरा मंडरा रहा है। वहां के राष्ट्रपति गुस्तावों पेट्रो को ट्रंप का विरोधी माना जाता है। ट्रंप की कोशिश वहां समर्थक सरकार लाने की है ताकि वहां के संसाधन अमेरिका के काम आ सकें। इसीलिए वे पेट्रो को लगातार धमकियां दे रहे हैं। वेनेजुएला पर कार्रवाई के बाद राष्ट्रपति पेट्रो ने डोनॉल्ड ट्रंप को सीधी चुनौती दी है और कहा है कि आओ मुझे पकड़ लो, मैं यहीं इंतजार कर रहा हूं। कोलंबिया से अमेरिका में ड्रग्स आ रही है यह आरोप ट्रंप का है। उन्होंने कहा है कि कोलंबिया को एक बीमार आदमी चला रहा है, जो अमेरिका में कोकीन बेचता है। इस बयान के बाद के बाद अब हमले की आशंका और गहरा गई है।

मादुरो ने भी ट्रंप को गिरफ्तारी की चुनौती दी थी। परिणाम यह रहा कि अमेरिका ने सैन्य कार्रवाई की और उन्हें गिरफ्तार किया। राष्ट्रपति ट्रंप ने मेक्सिको को भी चेतावनी दी है। उनका आरोप मेक्सिको पर अमेरिका में ड्रग्स भेजने का है। उन्होंने कहा है कि मेक्सिको को अपनी हालत सुधारनी होगी, क्योंकि ड्रग्स मेक्सिको के रास्ते अमेरिका में आ रहा है। इसे रोकने के लिए हमें कुछ करना होगा। उनके इस बयान के बाद मेक्सिको के लोग डरे हुए हैं। मेक्सिको की राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबाम ने ट्रंप के गुस्से को शांत करने की कोशिश की है और कहा है कि "मुझे हमले की संभावना पर विश्वास नहीं है, मुझे तो यह भी विश्वास नहीं है कि वे इसे गंभीरता से ले रहे हैं। शिनबाम ने ट्रंप को सुझाव देते हुए कहा है कि विदेशी सैन्य हस्तक्षेप से संगठित अपराध का समाधान नहीं होता"। हालांकि ट्रंप कब क्या करेंगे कह पाना कठिन है। यही वजह है कि पूरी दुनिया की नजर ट्रंप के अगले कदम पर है।

माना जा रहा है कि अगर ट्रंप अब किसी अन्य देश पर कार्रवाई करते हैं, तो चीन का हौसला भी बढ़ेगा और भी ताइवान पर हमला करके उसे अपने में मिलाने की कोशिश करेगा। चीन ने यह देख लिया कि मादुरो के मामले में संयुक्त राष्ट्र संघ ने निंदा के अलावा कुछ नहीं किया।

> रूस, चीन जैसे देशों ने ट्रंप से मादुरो को तत्काल छोड़ने की मांग की, लेकिन अमेरिका के मित्र राष्ट्रों ने बयान देने में संयम बरता। अब वे भी ट्रंप के विरुद्ध दिख रहे हैं। इसकी वजह ट्रंप का आक्रामक रवैया है।

आमने सामने

चुनाव शुरू होने के बाद से, मैंने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके बताया है कि क्या-क्या गलत काम हुए हैं। पिंपरी-चिंचवाड़ इतना समृद्ध निगम था, फिर भी उन्हें बॉन्ड जारी करने पड़े। विभिन्न विभागों में लगभग 4,000 करोड़ रुपये के बिल लंबित हैं और भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। मैंने इसके उदाहरण दिए हैं।
- अजीत पवार, एनसीपी प्रमुख

मैं अपने वचन का पक्का हूं। इसीलिए, जब यह तय हुआ कि पुणे और पिंपरी-चिंचवाड़ में हम एनसीपी के साथ गठबंधन में चुनाव नहीं लड़ेंगे, तो हमने यह भी कहा था कि यह एक सौहार्दपूर्ण मुकाबला होगा और हम एक-दूसरे पर कोई व्यक्तिगत हमला नहीं करेंगे। हमने अंत तक उस प्रतिबद्धता का पालन किया, लेकिन अजीत पवार ने नहीं किया। उन्होंने ऐसा क्यों किया, यह मुझे नहीं पता।
- देवेंद्र फडणवीस, मुख्यमंत्री महाराष्ट्र

भारत को स्पेस सुपरपावर बनाता प्राइवेट सेक्टर

विवेक शुक्ला
पूर्व सूचना अधिकारी यूएई एंबेसी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के सोमवार को पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (पीएसएलवी) मिशन में एक निजी क्षेत्र की भागीदारी रही। पहली बार, हैदराबाद की निजी कंपनी ध्रुवा स्पेस ने सात सैटेलाइट प्रदान किए, जो इसरो के मिशन का हिस्सा बने। इस ताजा मिशन में निजी क्षेत्र की भागेदारी से साफ है कि भारत के अंतरिक्ष इकोसिस्टम में निजी कंपनियों का योगदान रहने वाला है। निजी क्षेत्र को फंडिंग, रेगुलेटरी सपोर्ट और तकनीकी विशेषज्ञता की जरूरत है। इसरो के साथ साझेदारी से ये दूर हो सकती हैं। निजी क्षेत्र की भूमिका कितनी अहम है?

इसरो के मिशनों में निजी कंपनियां अब सैटेलाइट निर्माण, लॉन्च व्हीकल विकास और डेटा सेवाओं में सक्रिय हैं। ध्रुवा स्पेस के सात सैटेलाइट्स पीएसएलवी मिशन में शामिल होने से पता चलता है कि निजी क्षेत्र सस्ते, नवीन समाधान प्रदान कर रहा है। इससे लॉन्च क्षमता बढ़ रही है और लागत कम हो रही है। पहले इसरो अकेले ही सब कुछ संभालता था, लेकिन अब 300 से अधिक स्टार्टअप्स इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं। कंपनियां जैसे स्काईरूट एयरोस्पेस, सेलेस्टियल एयरोस्पेस, अग्निकुल कॉसमोस और पिक्सेल स्पेस सैटेलाइट लॉन्च और अर्थ ऑब्जर्वेशन में योगदान दे रही हैं। निजी क्षेत्र की भागीदारी से इसरो को बड़े मिशनों पर फोकस करने का मौका मिलता है, जबकि छोटे कार्य निजी कंपनियां संभालती हैं।

इस संदर्भ में, गुरुग्राम के युवा वैज्ञानिकों का एक समूह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनमें से कई आईआईटी के छात्र हैं और टीम का नेतृत्व युवा वैज्ञानिक श्रेयांस जैन कर रहे हैं। उनकी कंपनी, सेलेस्टियल एयरोस्पेस, एक क्रांतिकारी बैलून-सहायता प्राप्त रॉकेट लॉन्च सिस्टम विकसित कर रही है। इस तकनीक में एक बड़ा बैलून रॉकेट को ऊपरी वायुमंडल तक ले जाता है, जहां हवा पतली होती है और प्रतिरोध कम। वहां से रॉकेट प्रज्वलित होता है, जिससे ईंधन की बचत होती है और पेलोड क्षमता 2-3 गुना बढ़ जाती है। श्रेयांस बताते हैं, "जमीन से लॉन्च करने में घनी हवा और गुरुत्वाकर्षण से लड़ना पड़ता है, जिससे ईंधन बर्बाद होता है। हमारा तरीका कुशल है और लागत कम करता है।" उनकी टीम हाई-प्रेशर इन्फ्लेटेबल संरचनाओं पर काम कर रही है, जो गर्म गैसों से संचालित होती हैं। भविष्य में न्यूक्लियर प्रोपल्शन जैसी उन्नत तकनीकें जोड़ी जा सकती हैं, जो ग्रहों के बीच तेज यात्रा सक्षम करेंगी।

यह नवाचार इसरो के मिशनों से सीधे जुड़ा है। इसरो के पीएसएलवी मिशन में निजी क्षेत्र की भागीदारी दिखाती है कि कैसे युवा उद्यमी राष्ट्रीय प्रयासों को मजबूत कर रहे हैं। कई महीनों के अकेले शोध के बाद, श्रेयांस ने आईआईटी ग्रेजुएट्स और युवा वैज्ञानिकों की टीम बनाई। अब वे विंड टनल टेस्ट और छोटे प्रयोग कर रहे हैं, लक्ष्य 2026 के अंत तक प्रोटोटाइप लॉन्च करना है। टीम ने भारत और विदेश में पेटेंट फाइल किए हैं, और अंतिम लक्ष्य ऑर्बिटल लॉन्च है। निजी क्षेत्र अंतरिक्ष मिशनों में बड़ी भूमिका निभा रहा है, जो भारत के सपनों के लिए अनिवार्य है।

यह भूमिका भारत के लिए कितनी जरूरी है? भारत की स्पेस इकोनॉमी वर्तमान में लगभग 9 बिलियन डॉलर की है, जो वैश्विक बाजार का 2-3% है। सरकार का लक्ष्य 2033 तक इसे 44 बिलियन डॉलर तक पहुंचाना है। निजी क्षेत्र इस लक्ष्य की कुंजी है। 2020 से शुरू हुए सुधारों ने इसे संभव बनाया है। इंडियन स्पेस पॉलिसी 2023, आईएन-स्पेस (इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथोराइजेशन सेंटर) का गठन और 100% एफडीआई की अनुमति ने निजी कंपनियों को प्रोत्साहित किया है। इससे स्वदेशी तकनीक विकसित हो रही है, जो आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण है। कृषि, आपदा प्रबंधन, टेलीकॉम और इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे क्षेत्रों में स्पेस टेक्नोलॉजी की मदद से समाज का विकास हो रहा है। उदाहरण के लिए, अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट्स फसल पूर्वानुमान और बाढ़ चेतावनी में उपयोगी हैं।

निजी क्षेत्र की भागीदारी रोजगार सृजन भी कर रही है। युवा वैज्ञानिक जैसे श्रेयांस जैन की टीम आईआईटी छात्रों को अवसर दे रही है, जो अन्यथा विदेश जा सकते थे। इससे ब्रेन ड्रेन रुकता है और स्थानीय नवाचार बढ़ता है। वैश्विक स्तर पर, भारत को लॉन्च प्रदाता के रूप में स्थापित करने में निजी क्षेत्र मदद कर रहा है। स्पेसएक्स जैसी कंपनियों की तरह, भारतीय स्टार्टअप्स सस्ते लॉन्च प्रदान कर सकते हैं, जो विकासशील देशों के लिए आकर्षक है। इससे विदेशी मुद्रा अर्जित होती है और भारत की सॉफ्ट पावर बढ़ती है। सेलेस्टियल एयरोस्पेस जैसी कंपनियां बड़े बदलाव ला सकती हैं। सेलेस्टियल एयरोस्पेस की बैलून तकनीक ईंधन बचत से पर्यावरण अनुकूल भी है, जो सस्टेनेबल स्पेस एक्सप्लोरेशन की दिशा में कदम है। भविष्य में, निजी क्षेत्र मंगल मिशन या स्पेस टूरिज्म में योगदान दे सकता है।

बेशक, इसरो के मिशनों में निजी क्षेत्र की भूमिका न केवल अहम है, बल्कि भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाओं के लिए अनिवार्य है। श्रेयांस जैन जैसे युवा इनोवेटर्स इस परिवर्तन के प्रतीक हैं। उनकी सेलेस्टियल एयरोस्पेस कंपनी पीएसएलवी जैसे मिशनों से प्रेरित होकर नई ऊंचाइयां छू रही है। निजी क्षेत्र से नवाचार, लागत कमी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, जो भारत को स्पेस सुपरपावर बनाएगा। यह आत्मनिर्भरता, आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण की कुंजी है। जैसे-जैसे स्टार्टअप्स बढ़ेंगे, भारत का अंतरिक्ष भविष्य और उज्ज्वल होगा।

> गुरुग्राम के युवा वैज्ञानिकों का एक समूह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनमें से कई आईआईटी के छात्र हैं और टीम का नेतृत्व युवा वैज्ञानिक श्रेयांस जैन कर रहे हैं। उनकी कंपनी, एक क्रांतिकारी बैलून-सहायता प्राप्त रॉकेट लॉन्च सिस्टम विकसित कर रही है।

सोशल फोरम

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और नाटो की वास्तविक प्रकृति

आज जब अमेरिका ग्रीनलैंड पर कब्जा करना चाहता है, जो एक नाटो सदस्य देश का अंग है, तो ऐसी एक घटना पर ध्यान देना चाहिए, जो भारत से जुड़ी है। 1961 में जब भारत ने गोवा,

प्रवीण झा
लेखक

दमन और दीव पर सैन्य कार्रवाई कर उन्हें पुर्तगाली शासन से मुक्त कराया, उस समय पुर्तगाल नाटो (NATO) का सदस्य था। इसके बावजूद नाटो ने भारत के विरुद्ध कोई सामूहिक सैन्य कार्रवाई नहीं की। यह तथ्य अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की जटिलताओं और नाटो की वास्तविक प्रकृति को समझने में मदद करता है। सबसे पहला कारण यह था कि नाटो एक सामूहिक रक्षा संगठन है, आक्रामक युद्धों में हस्तक्षेप करने वाला वैश्विक पुलिस बल नहीं। नाटो की संधि का अनुच्छेद-5 तभी लागू होता है, जब किसी सदस्य देश पर उसके अपने क्षेत्र में सशस्त्र हमला हो। गोवा उस समय यूरोप में स्थित पुर्तगाल का हिस्सा नहीं था, बल्कि एक उपनिवेश था। कई नाटो देशों की नजर में उपनिवेशों की रक्षा को अनुच्छेद-5 के अंतर्गत लाना कानूनी रूप से स्पष्ट नहीं था।

दूसरा महत्वपूर्ण कारण था औपनिवेशिक व्यवस्था का पतन। 1960 के दशक तक विश्व समुदाय में उपनिवेशवाद के विरुद्ध माहौल बन चुका था। भारत की कार्रवाई को कई देशों ने औपनिवेशिक शासन के अंत के रूप में देखा, न कि एक संप्रभु राष्ट्र पर आक्रमण के रूप में। अमेरिका और ब्रिटेन जैसे नाटो के प्रभावशाली सदस्य भारत को शीत युद्ध के संदर्भ में पूरी तरह विरोधी खेमे में धकेलना नहीं चाहते थे।

तीसरा कारण था रणनीतिक यथार्थवाद। भारत एक बड़ा, स्थिर और क्षेत्रीय रूप से महत्वपूर्ण देश था। गोवा के लिए भारत से युद्ध करना न तो व्यावहारिक था और न ही नाटो के दीर्घकालिक हितों में।

इस प्रकार, कानूनी सीमाओं, बदलते वैश्विक नैतिक दृष्टिकोण और रणनीतिक हितों के कारण नाटो ने पुर्तगाल का साथ देकर युद्ध में उतरने से परहेज किया। यह घटना दिखाती है कि अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन भी हमेशा अपने घोषित सिद्धांतों से नहीं, बल्कि परिस्थितियों और हितों से संचालित होते हैं।

-फेसबुक वॉल से

सामयिकी

सावधान, रात में सड़कें पुरुषों के लिए आरक्षित हैं

दिन में जितना महिलाओं के लिए व्यवस्था को आरक्षित किया गया, उतनी ही रातें महिलाओं के लिए भयावह, असुरक्षित, सीमाबद्ध और खोल में सिमटाव लिए है, क्योंकि रात में सड़कें पुरुष वर्ग के लिए जो आरक्षित हैं। महिला सशक्तिकरण और स्वावलंबन के कपाट केवल दिन दोपहरी ही खुलते हैं। रात की कालिमा में जाने किस पुरुष पर उसकी मूल जंतु प्रकृति हावी हो जाए कहा नहीं जा सकता। उत्तराखंड में ऋषिकेश के वंतारा रिजॉर्ट में अंकिता भंडारी हत्याकांड हो अथवा उन्नाव बलात्कार या निर्भया का दिल दहलाने वाला हत्याकांड तमाम मामलों में मृतक महिला के नाम केवल मोमबत्तियां, रैली, धरना, प्रदर्शन और मृत्यु के पश्चात चारित्रिक बलात्कार आता है और आरोपी रसूख वाले हैं, तो सबूत और गवाहों के नामोनिशान मिटा दिए जाते हैं। कानून न्याय भावनाओं से नहीं सबूत और गवाहों से संचालित होता है। पितृसत्तात्मक, अर्थकेंद्रित व्यवस्था सबूत मिटाने और गवाह को तोड़ने में सदा कामयाब रही है। रात में सड़कों पर पुरुषों का वर्चस्व रहा है।

बीना नयाल
लेखिका, अल्मोड़ा

मेरी एक कॉलेज मित्र, जिसने एमबीए किया था, नोएडा की किसी कंपनी में कार्यरत थी। दूसरा बच्चा होने के पश्चात उसके प्रमोशन के लिए शिफ्ट ड्यूटी करना अनिवार्य हो गया, जब भी शिफ्ट होती थी, उसका पति या देवर उसको आनंद विहार लेने जाता था, क्योंकि ऑफिस कैब केवल आनंद विहार तक उपलब्ध थी। बीते दिनों रात 10:30 बजे उसका फोन आया। मैं अर्धनिद्रा की अवस्था में थी। मैंने बोला कहां है तू? वो बोली आनंद विहार पहुंचने वाली हूं। मैंने पूछा पति आएंगे, वह बोली नहीं वह 26 जनवरी की परेड के पास का इंतजाम करने गए हैं। बोली आज नौकरी के चक्कर में घर में कहासुनी हो गई। सब बच्चों का एहसान जताते हैं। इसलिए मैंने देवर को भी आने का सही वक्त नहीं बताया है। आज रानी लक्ष्मीबाई बनघर तक का ऑटो लूंगी। मित्र दिल्ली में ज्योति कॉलोनी में डीडीए फ्लैट में रहती थी। अगले दिन 26 जनवरी का दिन था, सोचा उसने गणतंत्र दिवस की परेड लाइव देखी होगी, तो शाम को फोन लगाया। फोन उठाते ही वह रुंधे गले से बोली यार, कल हादसा होते-होते बचा। आनंद विहार से केवल नंद नगरी का ऑटो मिला, क्योंकि उसका घर वहीं था और वो आगे जाने को तैयार नहीं था। रात 11:30 बजे ऑटो वाले को पैसे दे रही थी कि दो बाइक सवार ने मेरे ऊपर पिस्टल तान दी और बोला चल मेरे साथ में। मैं रोने लगी। मैंने जल्दी से ऑटो वाले के हाथ जोड़े और बोली भैया बचा लो मुझे। ऑटो वाले ने अपनी जान जोखिम में डालकर तेजी से ऑटो चलाया और सीधा नंद नगरी थाने में रोका, जहां मुझे महिला पुलिस को सौंप दिया। वह बाइक सवार भी पीछा करते रहे। आटो वाले ने पुलिस वालों को सब कुछ बताया, मैं कांप रही थी, डर के मारे आवाज भी नहीं निकल रही थी। मैंने घर पर फोन किया, देवर आया तो पुलिस वालों ने फटकारा, कैसे अकेले महिला को रात में सड़कों पर सफर करने छोड़ देते हैं? इस घटना के पश्चात मेरी मित्र ने नौकरी के साथ स्वरोजगार पर भी ध्यान दिया। स्वरोजगार बढ़िया चल निकला तो नौकरी छोड़ दी। आज भी उस घटना को याद करके मुहं से बस यही निकलता है कि रात में सड़कें पुरुषों के लिए आरक्षित हैं। समाज में समृद्धि का ग्राफ जितनी तेजी से बढ़ रहा है, उतनी तीव्रता से महिला सुरक्षा का ग्राफ लगातार गिर रहा है। शायद यह परवरिश का ही नतीजा है कि हम महिलाओं को तो नैतिकता के सांचे में ढाल देते हैं, परंतु कुछ पुरुषों की गलत शिक्षा, उन्हें मर्द तो नहीं बनाती है, लेकिन भेड़िया जरूर बना डालती हैं, जिससे पीड़ित और परिवार तो प्रभावित होता ही है। साथ ही पूरा समाज और तंत्र की नीयत भी संदेह व निशाने पर आ जाती है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित एवं 117/एल/320-ए, नवीन नगर काकादेव, कानपुर नगर 208001 (उ.प्र.) से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- दिग्विजय सिंह*** 0512-2548300 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2022/85730 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र कानपुर होगा)।

घुघुतिया पर्व

लोकसंस्कृति और उत्तरायणी की आत्मा

'काले कौवा आ ले घुघुति माला खा ले- घुघुति माला खा ले' कभी ये आवाज उत्तराखंड के सुदूर ग्रामीण अंचलों, उत्तराखंड के विकसित क्षेत्रों सहित प्रत्येक उत्तराखंडी परिवार का बहुत ही लोकप्रिय गीत हुआ करता था। प्रत्येक उत्तराखंडी परिवार चाहे वह प्रदेश में अथवा देश के किसी भी कोने रहता हो। इस घुघुतिया त्योहार को बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। यह कुमाऊं क्षेत्र में अत्यंत लोकप्रिय त्योहार है, जिसे उत्तराखंड में उत्तरायणी त्योहार के साथ मनाया जाता है। घुघुतिया त्योहार मुख्य रूप से कुमाऊं क्षेत्र में बहुत ही प्रचलित है, उत्तराखंड में उत्तरायणी का त्योहार धार्मिक मान्यता लिए हुए है। बागेश्वर में प्रति वर्ष उत्तरायणी मेले का आयोजन होता है, जो एक सप्ताह तक चलता है। यह उत्तराखंड के क्षेत्र का अत्यंत श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाने वाला त्योहार माना जाता है। आज भी उत्तराखंड के लोग गांव हों या भारत वर्ष में कहीं, जहां उत्तराखंडी प्रवासी बंधु रहते हैं, उत्तरायणी के त्योहार को बड़ी ही धूमधाम से मनाते है।

मोहन सिंह बिष्ट
समाजसेवी

उत्तरायणी त्योहार पूरे उत्तराखंड का लोकप्रिय त्योहार है। इसका धार्मिक महत्व भी है। कहते हैं अयोध्या में जब प्रभु श्रीराम का भव्य राजतिलक का आयोजन हो रहा था, तो इस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए जगत पिता ब्रह्मा जी भगवान विष्णु की मानस पुत्री सरयु देवी को अपने साथ अयोध्या लेकर जा रहे थे तभी मार्ग में मार्कण्डेय ऋषि का आश्रम पड़ा। मार्कण्डेय ऋषि एक वृक्ष के नीचे साधना कर रहे थे। यह देखकर सरयू रुक गईं और मार्ग में ऋषि के बैठने से उत्पन्न बाधा के कारण व्याकुल होने लगीं। यह देखकर माता पार्वती को उन पर दया आ गई, उन्होंने भगवान शिव की ओर उनकी सहायता हेतु देखा, तो भोलेनाथ ने लीला रची, उन्होंने एक व्याघ्र का रूप धारण कर लिया और माता पार्वती गोमाता रूप धरकर लीला करने लगे। व्याघ्र गाय की ओर झपटा उससे मार्कंडेय जी ध्यान टूटा और वो गोमाता की रक्षा हेतु मार्ग से हट गए। देवी सरयू प्रसन्न होकर अपने मार्ग से बहकर आगे बढ़ गईं, जिस स्थान पर भगवान शिव ने व्याघ्र का रूप धरा था, उस स्थान ऋषि मार्कण्डेय द्वारा भगवान व्याघ्रेश्वर महादेव को शिवलिंग के रूप में स्थापित किया, उन्हीं के नाम पर व्याघेश्वर से धीरे-धीरे अपभ्रंश होकर, उस स्थान का नाम बागेश्वर पड़ा। उसी स्थान पर पवित्र गोमती नदी और मान्यता है कि लुप्त सरस्वती नदी की धारा भी बहती थी। इससे तीनों पवित्र नदियों का संगम होने के कारण यह स्थान और भी पवित्र हो गया। इस दिन को समस्त जनमानस नदी के पवित्र जल में स्नान कर सूर्य को अर्घ्य देकर पूजा आराधना करने लगा। धीरे-धीरे इस स्थान पर दूर-दूर से श्रद्धालु आकर पूजा-अर्चना करने लगे तथा स्नान ध्यान और दान इत्यादि से सभी प्रकार कष्टों मुक्त होने की भावना से एकत्र होने लगे। इस स्थान का महत्व बढ़ता गया। उत्तरायणी प्रमुख रूप से मकर संक्रांति का त्योहार ही है। उत्तराखंड में भी यह कुमाऊं क्षेत्र में घुघुति त्योहार और गढ़वाल क्षेत्र में खिचड़ी संक्रांति के नाम से मनाया जाता है और पूरे उत्तराखंड में यह बहुत ही लोकप्रिय त्योहार है। इस दिन लोग प्रात: काल नदी में स्नान करके सूर्य देव को अर्घ्य देते हैं और उनकी उपासना करते हैं तथा खिचड़ी का दान भी करते हैं।

उत्तरायणी कैथीग

उत्तराखंड में जिला बागेश्वर के अलावा उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ तथा बरेली में भी प्रति वर्ष उत्तरायणी का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। राजधानी लखनऊ में विभिन्न पर्वतीय प्रवासी संगठन धूमधाम से उत्तरायणी का त्योहार मनाते हैं। पर्वतीय महापरिषद के द्वारा इस अवसर पर महानगर रामलीला ग्राउंड से लेकर न्यू हैदराबाद स्थित गोमती तट के किनारे भारत रत्न पंडित गोविंद बल्लभ पंत सांस्कृतिक उपवन तक भव्य शोभा यात्रा के साथ दस दिवसीय 'उत्तरायणी कैथीग' का भी आयोजन किया जाता है। इस वर्ष संस्था के रजत जयंती वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 'उत्तरायणी कैथीग' '15 दिवसीय' कर दिया गया है। यह कौथीग (मेला) 14 जनवरी से 28 जनवरी 2026 तक चलेगा। इस मेले में उत्तराखंडी जड़ी बूटियों, खान-पान, पहनावे, हस्तशिल्प, ज्वेलरी, दन, शाक-सब्जी में मूली, गडेरी इत्यादि के स्टॉल लगते हैं तथा उत्तराखंडी लोकसंस्कृति को दर्शाने वाले कार्यक्रम लोकनृत्य लोकगीतों की धूम रहती है। बड़े-बड़े गणमान्य अतिथियों के साथ-साथ आम प्रवासी उत्तराखंडी बंधु भी इस कार्यक्रम में बड़े ही उत्साह से भाग लेते हैं। उत्तरायणी के इस मेले से स्थानीय लोगों में पर्वतीय संस्कृति के प्रति जिज्ञासा और अनुराग बढ़ा है, जिससे भारी संख्या में स्थानीय निवासी भी उत्तराखंडी कार्यक्रमों में जुटते हैं तथा भाग भी लेते हैं।

पौराणिक कथा

उत्तराखंड में घुघुतिया त्योहार के पीछे स्थानीय कथा प्रचलित है कि कुमाऊं क्षेत्र में राजा कल्याण चंद का शासन था, उनके कोई संतान नहीं थी। ईश्वर की आराधना करने के बाद, उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम निर्भय चंद था, जिसे प्यार से रानी घुघुतिया कहकर बुलाती थी। घुघुतिया को रानी ने सुंदर सी मोतियों की माला पहना रखी थी। घुघुतिया जब आंगन में खेलता तो रानी मां उसे खिलाते हुए कौओं से कहती थीं। काले कौवा आरे घुघुति की माला खा ले और घुघुति जोर-जोर से ताली बजाकर खुश होता था। घुघुतिया को खेलने के लिए रानी मां पकवान भी रखती थीं, तो कौवे आकर घुघुति के पास एकत्र हो जाते, तो वो उन्हें प्यार से पकवान खिलाता था। धीरे-धीरे घुघुति बड़ा होने लगा और कौवों से उसकी दोस्ती हो गई और वह कौवों के साथ खेलता रहता था। राजा कल्याण चंद का मंत्री बड़ा हो दुष्ट था, जब राजा नि :संतान था, तो उसे राज्य पाने की आस थी, लेकिन राजकुमार घुघुतिया के जन्म लेने से उसका सपना टूट गया था, वो मन ही मन में घुघुतिया से शत्रुता रखने लगा और एक दिन मौका पाकर वह राजकुमार घुघुति को उठाकर उसे मारने की नियत से घने जंगल की ओर ले जाने लगा। ऐसा करते हुए कौवों ने उसे देख लिया। सभी कौवे अपने दोस्त घुघुति को बचाने के लिए मंत्री और उसके साथियों पर टूट पड़े। कुछ कौवे घुघुति की कीमती मोतियों की माला लेकर राजमहल में पहुंचकर कांव-कांव करने लगे। तभी राजा और रानी की नजर घुघुति की माला पर पड़ी, जिसे कौवा चोंच में दबाए हुए था, उसके साथी कांव-कांव कर रहे थे। राजा-रानी समझ गए कि घुघुति संकट में है। राजा ने अपने सैनिकों को लेकर जंगल में जाकर घुघुति को बचाया और उस दुष्ट मंत्री को बंदी बना, उसे मृत्युदंड दिया, घुघुति की जीवन रक्षा होने और सही सलामत घर लौटने पर नगर की राजा सहित समस्त प्रजा बहुत प्रसन्न हुई तथा राजा के आदेश पर नगर में उत्सव का माहौल बन गया। कौओं के सम्मान में सभी नगरवासियों ने घुघुते सहित तरह-तरह के पकवान बनाकर कौवों के साथ-साथ एक दूसरे को भी खिलाए और गीत-संगीत के साथ पूरे वातावरण में हर्षोलासित होकर प्रत्येक वर्ष घुघुतिया त्योहार मनाने लगे। इस घटना का समय और उत्तरायणी का त्योहार एक समय होने के कारण घुघुतिया त्योहार के रूप में मनाया जाने लगा। घुघुति अंग्रेजी अक्षर & के प्रकार का एक पकवान होता है, जो खाने में अत्यंत स्वादिष्ट होता है, जिसे बनाकर उत्तराखंडी माताएं, उन्हें एक मजबूत धागे में माला पिरोकर बच्चों को खेलने के लिए दे देती थीं। सभी बच्चे अपनी-अपनी माला लेकर दौड़ते-हंसते-कूदते अत्यंत प्रसन्न होकर कौवों को आवाज लगाते हैं। 'काले कौवा आ ले घुघुति माला खा ले', 'काले कौवा आले घुघुति माला खा ले'।

पोंगल: तमिल परंपरा का जीवंत उत्सव

लोकायन

तमिलनाडु का शस्योत्सव अथवा फसल कटाई का पर्व पोंगल केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि प्रकृति, कृषि और जीवन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का सांस्कृतिक उत्सव है। यह पर्व नई शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। इस शुभ अवसर पर सूर्य को समस्त सृष्टि के पीछे निहित जीवन-ऊर्जा के रूप में पूजा जाता है। यह पर्व चार दिनों तक मनाया जाता है और इस अवधि को उत्तरायण पुण्यकालम कहा जाता है, जिसे हिंदू सौर कैलेंडर के अनुसार अत्यंत शुभ माना गया है। इस वर्ष पोंगल 15 जनवरी से 18 जनवरी तक मनाया जाएगा। लगभग दो हजार वर्ष पुराने इस त्योहार के प्रमाण चोल काल से मिलते हैं, जो इसकी प्राचीनता और सांस्कृतिक गहराई को दर्शाते हैं। पोंगल मुख्य रूप से तमिलनाडु में उगाई जाने वाली तीन प्रमुख फसलों चावल, हल्दी और गन्ना के इर्द-गिर्द केंद्रित है। 'पोंगल' शब्द का अर्थ है उबलना या ऊपर से बहना। यही अर्थ उस पारंपरिक व्यंजन से भी जुड़ा है, जो इस पर्व का अभिन्न अंग है। यह उबाल समृद्धि, भरपूर फसल और खुशहाली का प्रतीक माना जाता है।

परंपरागत रूप से पोंगल शुभ मुहूर्त में घर के आंगन में पकाया जाता है। यह मुहूर्त अक्सर मंदिर के पुजारी द्वारा बताया जाता है। आज भी कई घरों में पत्थर से बने चूल्हों पर मिट्टी के बर्तनों में पोंगल पकाने की परंपरा जीवित है। लकड़ी के ईंधन पर पकाया गया पोंगल अपने विशिष्ट स्वाद और सुगंध के लिए जाना जाता है। जैसे ही पकवान उबलकर बर्तन से बाहर आने लगता है, लोग 'पोंगालो पोंगल' का सामूहिक उद्घोष करते हैं। इस समय एक-दूसरे से पूछा जाता है-"पाल पोंगिता?" यानी क्या दूध उबल गया है?-जो शुभता का संकेत होता है। पोंगल की शुरुआत मकर संक्रांति यानी सूर्य उत्तरायण से होती है और यह चार दिनों तक विभिन्न रूपों में मनाया जाता है भोगी पोंगल, थाई पोंगल, मट्टू पोंगल और कानुम पोंगल।

भोगी पोंगल

पोंगल उत्सव का पहला दिन भोगी पोंगल कहलाता है। इस दिन वर्षा और समृद्धि के देवता भगवान इंद्र की पूजा की जाती है, क्योंकि अच्छी फसल के लिए वर्षा का विशेष महत्व होता है। इसी कारण इसे इंद्रन भी कहा जाता है। इस दिन घरों की विशेष साफ-सफाई की जाती है और फर्श पर चावल के घोल से सुंदर कोलम बनाए जाते हैं। कोलम न केवल सजावटी होते हैं, बल्कि उस पवित्र स्थान को भी चिह्नित करते हैं, जहां पोंगल पकाया जाएगा। दिन के अंत तक खेतों से ताजी फसल चावल, हल्दी और गन्ना घर लाई जाती है। शाम को भगवान इंद्र के सम्मान में अलाव जलाए जाते हैं, जिनके चारों ओर नृत्य और गायन का आयोजन होता है।

सूर्य / थाई पोंगल

दूसरा दिन थाई पोंगल या सूर्य पोंगल कहलाता है और इसे सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दिन की शुरुआत प्रात: काल स्नान के बाद कोलम बनाने से होती है, जो प्राय: घर की महिलाएं करती हैं। परिवार के सभी सदस्य नए वस्त्र धारण करते हैं और फिर पोंगल पकाने की मुख्य रस्म आरंभ होती है। मिट्टी के बर्तन में चावल उबाले जाते हैं, जिनमें हल्दी का पौधा बांधा जाता है। बर्तन को सुंदर चित्रकारी से सजाया जाता है और आंगन में चूल्हे पर रखा जाता है। पकने के बाद पोंगल को केले, नारियल और गन्ने के साथ सूर्य देव को अर्पित किया जाता है। पहले देवताओं, फिर मवेशियों और अंत में परिवार व मित्रों को पोंगल बांटा जाता है। इस क्रम का पालन अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

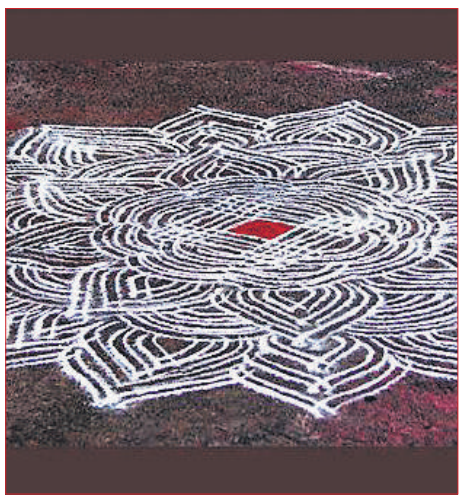

मट्टू पोंगल

तीसरे दिन मट्टू पोंगल मनाया जाता है, जो मवेशियों को समर्पित होता है। किसान के जीवन में मवेशियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, इसलिए इस दिन उनका आभार प्रकट किया जाता है। मवेशियों को स्नान कराया जाता है, उनके सींगों को रंगा-संवारा जाता है और फूलों से सजाया जाता है। बुरी नजर से बचाने के लिए उनकी आरती की जाती है। इस दिन जल्लीकट्टू जैसे पारंपरिक पशु खेलों का भी आयोजन होता है।

कानुम पोंगल

चौथा और अंतिम दिन कानुम पोंगल उत्सव के समापन का प्रतीक है। यह आनंद और मेल-मिलाप का दिन होता है। इस दिन चावल को हल्दी के पत्तों पर रखकर पक्षियों के लिए अर्पित किया जाता है। घर की महिलाएं परिवार की समृद्धि और भाइयों की कुशलता के लिए सामूहिक प्रार्थना करती हैं। हल्दी जल से आरती कर उसे पूरे घर में छिड़का जाता है। कानुम पोंगल को नए रिश्ते तय करने, विवाह प्रस्तावों और नए सामाजिक बंधनों के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। इस प्रकार पोंगल केवल फसल का उत्सव नहीं, बल्कि प्रकृति, परंपरा और सामूहिक जीवन-मूल्यों का उत्सव है, जो आज भी तमिल संस्कृति की जीवंत पहचान बना हुआ है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और समकालीन कला का संकट

सुमन कुमार सिंह
कलाकार/कला लेखक

भारतीय कला इतिहास की चर्चा करते समय प्राय: यह स्वीकार किया जाता है कि सदियों तक यह परंपरा पुरुषसत्ता, राजसत्ता और धर्मसत्ता के प्रभाव में संचालित होती रही। वरिष्ठ कलाकार और कला समीक्षक अशोक भौमिक के अनुसार, इसी कारण भारतीय कला में लंबे समय तक आम जनजीवन, शर्म, पीड़ा और व्यक्तिगत भावनाओं का प्रत्यक्ष प्रकटीकरण सीमित रहा। इस दृष्टि से देखें, तो उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं सदी के आरंभ में विकसित बंगाल पुनर्जागरण काल की कला भी इस संरचनात्मक सीमा से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकी। ऐसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में स्वतंत्रता के बाद प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप (1947) की स्थापना भारतीय कला में एक निर्णायक मोड़ के रूप में सामने आती है। एफ.एन. सूज़ा, एम.एफ़. हुसैन, एस.एच. रज़ा, के.एच. आरा और रामकुमार जैसे कलाकारों ने न केवल औपनिवेशिक अकादमिक यथास्थिति को चुनौती दी, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव, सामाजिक यथार्थ और आधुनिक चेतना को चित्रकला का विषय बनाया। यह वह क्षण था, जब भारतीय कला में कलाकार की निजी अभिव्यक्ति पहली बार पूरे आत्मविश्वास के साथ उभरती है।

संवाद होना चाहिए कला का मूल उद्देश्य

आधुनिकता के विस्तार को आगे बढ़ाते हुए भूपेन खख्खर ने मध्यमवर्गीय जीवन, यौनिक पहचान और घरेलू संसार को चित्रकला के केंद्र में रखा, गुलाम मोहम्मद शेख ने इतिहास, मिथक और समकालीन राजनीति के जटिल संवाद रचे और अर्पिता सिंह ने स्त्री अनुभवों को निजी स्मृति और सामाजिक असुरक्षा के साथ जोड़ा। इन कलाकारों के यहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अराजक नहीं, बल्कि वैचारिक जिम्मेदारी के साथ दिखाई देती है। हालांकि पिछले दो-तीन दशकों में समकालीन भारतीय कला में एक ऐसी प्रवृत्ति भी तेजी से उभरी है, जहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता स्वयं एक उद्देश्य बनती दिखाई देती है। परिणामस्वरूप ऐसी कृतियां सामने आती हैं, जिनमें न तो माध्यम के साथ गहरा संघर्ष दिखता है, न विषय के साथ कोई जोखिम। कई बार ये कृतियां वैश्विक कला बाजार की मांग, क्यूरेटर-केंद्रित शब्दावली या त्वरित दृश्य प्रभाव के लिए गढ़ी हुई प्रतीत होती हैं। इसी संदर्भ में द आर्ट न्यूजपेपर के सहयोगी संपादक बेन ल्यूक का हालिया टिप्पणी-लेख "वी आर लिविंग इन एन एज ऑफ बैड पेन्टिंग" यानी "हम एक खराब कला के दौर में रह रहे हैं" विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। ल्यूक स्पष्ट करते हैं कि उनका प्रश्न केवल ब्रिटेन या फ्रिज लंदन जैसे कला मेलों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आज की वैश्विक चित्रकला की वैचारिक स्थिति पर एक गंभीर टिप्पणी है। भारतीय संदर्भ में भी यह प्रश्न अप्रासंगिक नहीं है। एक ओर वी.एस. गायतोंडे, जेराम पटेल या नसरीन मोहम्मदी जैसे कलाकारों की परंपरा है, जहां अमूर्तता भी गहन साधना और अनुशासन से उपजती है। दूसरी ओर आज ऐसी चित्रकला भी दिखाई देती है, जो केवल 'अवधारणा' के नाम पर दर्शक से किसी भी संवेदनात्मक या बौद्धिक संवाद से बचती है।

यहां आम दर्शकों के बीच प्रचलित वह व्यंग्यात्मक किस्सा याद आता है- खाली कैनवास पर गाय के घास चरने की कहानी। यह मजाक भले ही अतिरंजित हो, पर वह उस दूरी की ओर संकेत करता है, जो कई बार समकालीन कला और सामान्य दर्शक के बीच पैदा हो गई है। दर्शक यह मानने को विवश हो जाता है कि आधुनिक कला समझ से परे है, जबकि कला का मूल उद्देश्य संवाद होना चाहिए- भले ही वह सहज न हो।

भारतीय समकालीन कला के सामने चुनौती

निस्संदेह, चित्रकला एक दृश्य भाषा है और उसका अनुवाद शब्दों में अनिवार्य नहीं। किंतु इतिहास बताता है कि महान आधुनिक और समकालीन कलाकारों-चाहे वे रामकुमार, तैयब मेहता हों या के.जी. सुब्रमण्यम, ने अपने समय के प्रश्नों से टकराते हुए ऐसी दृश्य भाषाएं रचीं, जो जटिल होते हुए भी अर्थपूर्ण थीं। यहां बेन ल्यूक का प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह हमें यह याद दिलाता है कि "सब कुछ स्वीकार्य है" का वातावरण कला के लिए उतना ही खतरनाक हो सकता है, जितना सेंसरशिप। भारतीय समकालीन कला के सामने भी आज यही चुनौती है कि वह स्वतंत्रता और जिम्मेदारी, प्रयोग और संवेदना तथा वैश्विक संवाद और स्थानीय अनुभव के बीच संतुलन कैसे बनाए? स्पष्ट है कि 'खराब कला' की यह बहस आने वाले समय में और तेज होगी और ऐसे में संभव है कि भारतीय कला जगत के लिए यह आत्मपरीक्षण का एक जरूरी अवसर भी बन सकती है।

आर्ट गैलरी

अतियथार्थ का स्वप्नलोक

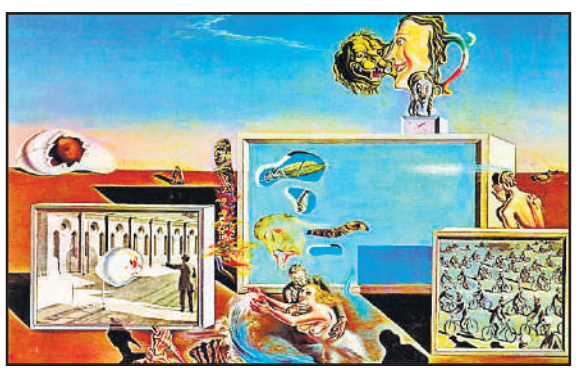

1929 में निर्मित साल्वाडोर डाली की प्रसिद्ध कृति "प्रकाशित सुख" अतियथार्थवादी कला की एक महत्वपूर्ण आधारशिला मानी जाती है। यह चित्र केवल दृश्य सौंदर्य तक सीमित नहीं रहता, बल्कि दर्शक को अवचेतन मन की रहस्यमय और जटिल परतों में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करता है। स्पेन के कैटालोनिया क्षेत्र में उभरते कला-आंदोलनों के प्रभाव में बनी यह रचना आंद्रे ब्रेटन और मैक्स अर्न्स्ट जैसे अतियथार्थवादी विचारकों की मुक्त और प्रयोगधर्मी चेतना को प्रतिबिंबित करती है। चित्र में एक काल्पनिक परिदृश्य उभरता है, जहां अनेक पुरुष आकृतियां असंबद्ध और तर्क से परे क्रियाओं में लीन दिखाई देती हैं। लहरदार, रेगिस्तानी भू-भाग के बीच स्थित एक केंद्रीय आकृति पूरे दृश्य पर प्रभुत्व स्थापित करती है, जबकि आसपास फैली अन्य आकृतियां किसी स्वप्न की भांति अलग-अलग भावनाओं और स्थितियों को व्यक्त करती हैं।

सल्वाडोर डाली के बारे में- 1904 में स्पेन के फिगेरेस में जन्मे सल्वाडोर डाली का जीवन उतना ही असाधारण था, जितनी उनकी कला। बचपन से ही उनकी प्रतिभा स्पष्ट थी, किंतु पारिवारिक अनुभवों और निजी आघातों ने उनके भीतर द्वैत और रहस्य की भावना को गहराई दी। सैन फर्नांडो अकादमी में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उन्होंने पारंपरिक सीमाओं को अस्वीकार किया और अपनी स्वतंत्र शैली विकसित की। पुनर्जागरण की तकनीकी परिपक्वता और स्वप्निल कल्पना के अद्वितीय मेल ने डाली को अतियथार्थवाद का सबसे प्रभावशाली चित्रकार बना दिया।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	83,627.69	25,732.30
गिरावट	250.48	57.95
प्रतिशत में	0.30	0.22

सोना 1,45,000
प्रति 10 ग्राम

चांदी 2,71,000
प्रति किलो

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार, 14 जनवरी 2026
www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

स्कोडा की घरेलू बिक्री पिछले वर्ष 36% बढ़ी

नई दिल्ली। वाहन विनिर्माता कंपनी स्कोडा ऑटो फॉक्सवैगन इंडिया (एसएवीडब्ल्यूआईपीएल) ने बीते वर्ष 1,17,000 इकाई के साथ अब तक की सर्वाधिक घरेलू बिक्री दर्ज की है जो सालाना आधार पर 36 प्रतिशत अधिक है। कंपनी ने कहा कि घरेलू बिक्री एवं निर्यात सहित 2025 में कुल बिक्री 1,59,500 इकाई रही। यह उपलब्धियों से भरा साल रहा जिसमें एसएवीडब्ल्यूआईपीएल ने 'मेड-इन-इंडिया' गाड़ियों के मामले में 20 लाख का आंकड़ा पार किया। यह इसके विनिर्माण कार्यों के पैमाने और परिपक्वता को रेखांकित करता है। स्कोडा ऑटो फॉक्सवैगन इंडिया के सीईओ पीयूष अरोड़ा ने कहा, 2025 हमारे लिए उद्देश्यपूर्ण और व्यापक प्रगति का वर्ष रहा है।

बजट में युक्तिसंगत किया जाए सीमा शुल्क

नई दिल्ली। सलाहकार फर्म डेलॉयट इंडिया ने मंगलवार को सुझाव दिया कि आगामी बजट में आयात शुल्क संरचना को युक्तिसंगत बनाने और आवंटन बढ़ाने से घरेलू विनिर्माण और देश के निर्यात को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। डेलॉयट इंडिया ने कहा कि विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) व्यवस्था में सुधार, जैसे कि 'छोड़े गए शुल्क' के आधार पर घरेलू आपूर्ति की अनुमति देना, उप-अनुबंध मानदंडों को आसान बनाना और मूल्यवर्धन को सीमा-शुल्क से छूट देने के साथ ही एक सीमित सीमा-शुल्क माफी योजना से प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार होगा और मुकदमों में कमी आएगी।

टाटा ने पंच का नया अवतार पेश किया

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स ने मंगलवार को पंच का नया अवतार पेश किया जिसमें कई नए फीचर जोड़े गए हैं। माइक्रो-एसयूवी श्रेणी में वह हुंडई एक्सटर, सिट्रोएन सी3 और मारुति इग्निस को टक्कर दे रही है। टाटा ने पंच में नया टर्बो पेट्रोल इंजन, सीएनजी के साथ ऑटोमैटिक गियरबॉक्स, 10.25-इंच की बड़ी स्क्रीन, 360-डिग्री कैमरा और वेंटिलेटेड सीट्स जैसे फीचर्स शामिल किए हैं। पंच का सबसे बड़ा अपडेट इसका नया इंजन विकल्प है। अब इसमें टर्बो पेट्रोल का विकल्प भी जोड़ दिया गया है।

ट्रंप की नई धमकी से भारतीय निर्यातक चिंतित

ईरान के साथ व्यापार करने वाले देशों पर अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है 25% शुल्क लगाने की घोषणा

नई दिल्ली, एजेंसी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ईरान के साथ व्यापार करने वाले देशों पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाने की घोषणा के बाद निर्यातक सतर्क हो गए हैं। उनका कहना है कि अतिरिक्त शुल्क के प्रभाव का आकलन ट्रंप प्रशासन की ओर से अधिसूचना जारी होने के बाद ही किया जा सकेगा। भारतीय निर्यातक पहले से 50 प्रतिशत अमेरिकी शुल्क का सामना कर रहे हैं।

ट्रंप ने घोषणा की है कि ईरान के साथ व्यापार करने वाले किसी भी देश को अमेरिका के साथ अपने व्यापार पर 25 प्रतिशत शुल्क का भुगतान करना होगा। यह एक ऐसा कदम है जो भारत, चीन और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) जैसे ईरान के प्रमुख व्यापारिक भागीदारों को प्रभावित कर सकता है। निर्यातकों के संगठन 'फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशंस' (फियो) ने मंगलवार को कहा कि घरेलू कंपनियां ईरान के साथ व्यापार से संबंधित सभी प्रतिबंधों का अनुपालन कर रही हैं। हालांकि ट्रंप की ईरान के साथ व्यापार करने वाले देशों को 25 प्रतिशत शुल्क लगाने की घोषणा पर स्पष्ट जानकारी मिलने पर ही इस चेतावनी के प्रभाव का आकलन संभव हो पाएगा। ट्रंप की घोषणा से भारत-ईरान व्यापार संबंधों पर असर पड़ सकता है।

फियो के महानिदेशक अजय सहाय ने कहा, भारतीय कंपनियां और बैंक, ईरान पर लगाए गए ओएफएसी (विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय) प्रतिबंधों का पूरी तरह और स्पष्ट रूप से पालन कर रहे हैं। हम केवल खाद्य पदार्थों और दवा क्षेत्र में ही काम कर रहे हैं जिन पर रोक नहीं है, इसलिए भारत पर किसी भी प्रतिकूल प्रभाव की आशंका का कोई आधार नहीं है। एक निर्यातक ने कहा, हम अमेरिकी राष्ट्रपति की घोषणा से चिंतित हैं। हम इस संबंध में अमेरिका से अधिसूचना की प्रतीक्षा कर रहे हैं। भारत से ईरान को होने वाले प्रमुख निर्यातों में चावल, चाय, चीनी, दवा, कृत्रिम रेशे, विद्युत मशीनरी और कृत्रिम आभूषण शामिल हैं। प्रमुख आयातों में सूखे मेवे, अकार्बनिक/कार्बनिक रसायन और कांच के बर्तन शामिल हैं।

ईरान में अशांति से भारतीय बासमती के निर्यात पर असर

नई दिल्ली। ईरान में जारी नागरिक अशांति का असर भारत के बासमती चावल के निर्यात पर पड़ना शुरू हो गया है जिससे घरेलू कीमतों में भारी गिरावट आई है। निर्यातकों को भुगतान में देरी और बढ़ती अनिश्चितता इसकी मुख्य वजह है। इंडियन राइस एक्सपोर्टर्स फेडरेशन ने निर्यातकों से ईरानी अनुबंधों पर जोखिमों का पुनर्मूल्यांकन करने और भुगतान के सुरक्षित तरीके अपनाने का आग्रह किया है। साथ ही ईरानी बाजार के लिए जरूरत से ज्यादा भंडार रखकर जोखिम न लेने की सलाह दी है। व्यापारिक आंकड़ों के अनुसार भारत ने वित्त वर्ष 2025-26 के अप्रैल-नवंबर के दौरान ईरान को 468.10 अमेरिकी डॉलर का बासमती चावल निर्यात किया जिसकी कुल मात्रा 5.99 लाख टन थी। ईरान भारत का सबसे बड़ा बासमती चावल आयातक है लेकिन अस्थिरता के कारण ऑर्डर प्रवाह, भुगतान चक्र और निर्यात पर दबाव बढ़ रहा है। इसका असर अब घरेलू मंडियों में साफ तौर पर दिखाई दे रहा है। एक सप्ताह में ही बासमती की प्रमुख किस्मों की कीमतों में भारी गिरावट आई है।

नए शिखर पर चांदी-सोना

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में मंगलवार को चांदी की कीमतें 6,000 रुपये उछलकर 2,71,000 रुपये किलोग्राम के नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गईं। स्टॉकिस्टों की लगातार खरीदारी के बीच सोना भी 400 रुपये बढ़कर 1,45,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के अपने उच्चतम स्तर पर जा पहुंचा।

अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने कहा कि चांदी ने लगातार तीसरे दिन अपनी बढ़त जारी रखी और 6,000 रुपये यानी 2.3 प्रतिशत उछलकर सभी करो समेत 2,71,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। सोमवार को चांदी 15,000 रुपये यानी छह प्रतिशत की जबर्दस्त उछाल के साथ 2,65,000 रुपये प्रति किग्रा के सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गई थी। यह शुक्रवार को 2,50,000 रुपये प्रति किग्रा पर बंद हुई थी। मंगलवार की बढ़त के साथ चांदी पिछले तीन कारोबारी सत्रों में कुल 21,000 रुपये यानी 8.4 प्रतिशत की बड़ी छलांग लगा चुकी है। वर्ष 2026 में अब तक चांदी ने कुल 32,000 रुपये यानी 13.4 प्रतिशत की तेज बढ़त दर्ज की है। यह 31 दिसंबर, 2025 को 2,39,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर रही थी।

चांदी 6,000 रुपये उछलकर 2,71,000 रुपये किलो पर
* तीन सत्रों में 21,000 रुपये की वृद्धि

सेंसेक्स 250 अंक टूटा

मुंबई। विदेशों से मिश्रित संकेतों के बीच घरेलू शेयर बाजारों में मंगलवार को गिरावट रही और बीएसई का सेंसेक्स 250.48 अंक यानी 0.30 फीसदी टूटकर 83,627.69 पर बंद हुआ। एनएसई का निफ्टी-50 सूचकांक भी 57.95 अंक यानी 0.22 प्रतिशत गिरकर 25,732.30 अंक पर रहा। टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद, रियलिटी, फार्मा, तेल एवं गैस, ऑटो और एफएमसीजी सेक्टरों के सूचकांक लाल निशान में रहे। आईटी, बैंकिंग, मीडिया और रसायन समूहों के सूचकांक हरे निशान में बंद हुए। सेंसेक्स की कंपनियों में ट्रेंट और एलएंडटी में तीन प्रतिशत से अधिक की गिरावट रही।

सरकार ने अफगानिस्तान के साथ व्यापार निलंबित करने के दावों को खारिज किया

नई दिल्ली। सरकार ने ईरान में अशांति के कारण भारत के अफगानिस्तान के साथ व्यापारिक संबंध निलंबित करने के दावों को मंगलवार को खारिज कर दिया। पाकिस्तानी सोशल मीडिया पर ऐसी खबरें फैलाई जा रही हैं कि ईरान में अशांति के कारण भारत ने अफगानिस्तान के साथ व्यापारिक संबंध निलंबित कर दिए हैं।

- **पाकिस्तान में सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही हैं झूठी खबरें**

भारत सरकार की ओर से कहा गया है कि ये खबरें पूरी तरह झूठी हैं। इस संबंध में पाकिस्तान के दुष्प्रचार करने वाले कुछ खाते मनगढ़ंत पत्र प्रसारित कर रहे हैं। 'पीआईबी फैक्ट चेक' ने सोशल मीडिया पर लिखा, पाकिस्तानी दुष्प्रचार खातों द्वारा एक मनगढ़ंत पत्र प्रसारित किया जा रहा है जिसमें झूठा दावा किया गया है कि ईरान में बढ़ती अशांति के कारण भारत ने अफगानिस्तान के साथ व्यापारिक संबंध अस्थायी रूप से निलंबित कर दिए हैं। वित्त वर्ष 2024-25 में अफगानिस्तान को भारत का निर्यात 31.891 करोड़ अमेरिकी डॉलर रहा जबकि आयात 68.981 करोड़ अमेरिकी डॉलर था।

रूस से तेल खरीदने में तीसरे स्थान पर खिसका भारत

नई दिल्ली, एजेंसी

- **रिलायंस ने की आयात में भारी कटौती, अब चीन पहले और तुर्किए दूसरे नंबर पर**

रिलायंस इंडस्ट्रीज और सार्वजनिक क्षेत्र की रिफाइनरियों की ओर से कच्चे तेल के आयात में भारी कटौती के बाद दिसंबर 2025 में रूस से इस ईंधन को खरीदने के मामले में भारत तीसरे स्थान पर आ गया है। यूरोपीय शोध संस्थान सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर (सीआरईए) ने मंगलवार को इस संबंध में आंकड़े जारी किए।

सीआरईए के अनुसार भारत द्वारा रूस से कुल हाइड्रोकार्बन आयात दिसंबर में 2.3 अरब यूरो रहा, जो पिछले महीने के 3.3 अरब यूरो से कम है। रिपोर्ट में कहा गया, ''तुर्की भारत को पीछे छोड़ते हुए दूसरा सबसे बड़ा आयातक बन गया, जिसने रूस से दिसंबर में 2.6 अरब यूरो के हाइड्रोकार्बन खरीदे। चीन शीर्ष खरीदार बना रहा, जिसकी रूस के शीर्ष पांच आयातकों से होने वाली निर्यात आय में 48 प्रतिशत (छह अरब यूरो) की हिस्सेदारी रही।

सीआरईए ने कहा, भारत रूसी जीवाश्म ईंधन का तीसरा सबसे बड़ा खरीदार था, जिसने दिसंबर में कुल 2.3 अरब यूरो के रूसी हाइड्रोकार्बन का आयात किया। इसके मुताबिक, भारत की कुल खरीद में कच्चे तेल की हिस्सेदारी 78 प्रतिशत थी, जो कुल 1.8 अरब यूरो रही। इसके अलावा कोयला (42.4 करोड़ यूरो) और तेल उत्पाद (8.2 करोड़ यूरो) आयात किया गया। भारत ने नवंबर में रूसी कच्चे तेल की खरीद पर 2.6 अरब यूरो खर्च किए थे।

इंडिगोः न्यू ईयर सेल में किराए की शुरुआत 14,99 रुपये से

नई दिल्ली। निजी विमान सेवा कंपनी इंडिगो ने मंगलवार को न्यू ईयर सेल की घोषणा की जिसमें घरेलू मार्गों पर किराया 1,499 रुपये से शुरू हो रहा है।

इंडिगो ने बताया कि सेल 13 से 16 जनवरी तक जारी रहेगी। इसमें घरेलू मार्गों पर सभी कर सहित किराया 1,499 और अंतर्राष्ट्रीय मार्गों पर 4,499 रुपये से शुरू होगा। इसके साथ, चुनिंदा 6 ई एडऑन पर 70 प्रतिशत तक की छूट भी मिलेगी। इस ऑफर के तहत 20 जनवरी से 30 अप्रैल तक की यात्रा के लिए टिकट की बुकिंग की जा सकेगी। बुकिंग यात्रा से सात दिन पहले करानी होगी। इंडिगोस्ट्रेच का किराया चुनिंदा घरेलू मार्गों पर 9,999 रुपये से शुरू होगा। इंडिगो की वेबसाइट, एप, व्हाट्सएप और एआई एसिस्टेंट 6 ईस्काई से टिकट बुक कराने पर दो साल तक के बच्चों के टिकट एक रुपये में बुक होंगे।

एनपीएस में सुनिश्चित पेंशन के लिए बनाई गई विशेषज्ञ समिति

नई दिल्ली, एजेंसी

- **कई क्षेत्रों के विशेषज्ञों को रखा गया है 15 सदस्यीय समिति में**

पेंशन कोष विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के तहत निश्चित भुगतान के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसके तहत निश्चित पेंशन सुनिश्चित करने के लिए रूपरेखा एवं नियम तैयार करने को लेकर एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया है।

पीएफआरडीए ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि यह पहल पेंशन नियामक अधिनियम के अनुरूप है और इसका उद्देश्य एनपीएस अंशधारकों के लिए सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाली आय को सुनिश्चित और सुरक्षित बनाना है। इस समिति के गठन का उद्देश्य हर नागरिक को उम्रदराज होने के बाद आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करना है। बयान के अनुसार, 15 सदस्यीय समिति का गठन दिवाला एवं शोधन अक्षमता बोर्ड (आईबीबीआई) के पूर्व अध्यक्ष डॉ. एमएस साहू की अध्यक्षता में किया गया है। इसमें विधि, मूल्यांकनकर्ता, वित्त, पूंजी बाजार एवं शिक्षा जगत जैसे विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल हैं। इसके अलावा, व्यापक विचार-विमर्श सुनिश्चित के लिए समिति को बाहरी विशेषज्ञों या मध्यस्थों को विशेष सदस्यों के तौर पर प्रतिक्रिया एवं परामर्श के लिए आमंत्रित करने का अधिकार दिया गया है।

समिति नियमित पेंशन भुगतान पर एक स्थाई सलाहकार समिति के रूप में गठित की गई है। इसके मुख्य कार्यों में नियमों का विकास, बाजार आधारित गारंटी, परिचालन के तौर-तरीके खोजना, जोखिम और कानूनी निगरानी, अंशधारकों की सुरक्षा आदि शामिल हैं। पेंशन नियामक पेंशन कोष नियामक एवं विकास प्राधिकरण एक सांविधिक नियामक संस्था है। इसका मकसद पेंशन कोष की स्थापना, विकास एवं नियमन के माध्यम से सेवानिवृत्ति के बाद आय सुरक्षा को बढ़ावा देना और पेंशन योजनाओं से जुड़े अंशधारकों के हितों की रक्षा करना है।

राष्ट्रीय

रेल किराए की गणना का तरीका हमारा व्यापारिक रहस्य, नहीं कर सकते आम

रेलवे ने केंद्रीय सूचना आयोग के नोटिस पर दिया जवाब, आरटीआई अपील खारिज

नई दिल्ली, एजेंसी

भारतीय रेलवे ने केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) को अपनी किराए की गणना की पद्धति की जानकारी देने से यह कहकर इन्कार कर दिया कि यह पद्धति उसका व्यापारिक रहस्य है जो व्यावसायिक गोपनीयता के दायरे में आती है, इसलिए इसे सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम के तहत सार्वजनिक नहीं किया जा सकता। सीआईसी की ओर से इस संबंध में दायर एक आरटीआई अपील खारिज किए जाने के दौरान रेलवे की ओर से दिया गया यह तर्क सामने आया है।

आरटीआई आवेदन के जरिए ट्रेन टिकटों और विशिष्ट सेवा पश्चिम सुपरफास्ट एक्सप्रेस के लिए मांग आधारित किराया निर्धारण और तत्काल बुकिंग के प्रभाव सहित आधार किराया (बेस फेयर) गणना प्रणाली पर विस्तृत जानकारी मांगी गई थी। जवाब में, रेलवे बोर्ड ने कहा कि किराया श्रेणी-आधारित है और विभिन्न श्रेणियों में प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के कारण इसमें अंतर आता है। उसने इसके साथ यह भी तर्क दिया कि विभिन्न श्रेणियों के किराया निर्धारण के वर्गीकरण और पद्धति के संबंध में उसकी नीति व्यापार रहस्य/बौद्धिक संपदा अधिकारों के दायरे में आता है और आरटीआई अधिनियम की धारा 8 के तहत इसे सार्वजनिक किए जाने से छूट प्राप्त है।

सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 8 में उन सूचनाओं के लिए छूट का प्रावधान है जिन्हें सार्वजनिक करना अनिवार्य नहीं है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा, व्यापार रहस्य और व्यक्तिगत गोपनीयता जैसी संवेदनशील जानकारी की रक्षा करती हैं। रेलवे अधिकारियों ने किराया निर्धारण पद्धति की गोपनीयता को बरकरार रखने संबंधी सीआईसी के पूर्व के आदेशों का भी हवाला दिया। साथ ही, यह तर्क दिया कि भारतीय रेलवे एक वाणिज्यिक उपयोगिता के रूप में कार्य करता है तथा राष्ट्रीय हित में सामाजिक दायित्वों का निर्वहन भी करता है। रेलवे बोर्ड के मुख्य जन सूचना अधिकारी (सीपीआईओ) ने कहा कि विस्तृत मूल्य निर्धारण प्रणाली का खुलासा जनहित में उचित नहीं है।

कहा- टिकट मूल्य निर्धारण खुलासा जनहित में भी नहीं

मुख्य जन सूचना अधिकारी ने यह भी कहा, मूल्य निर्धारण संबंधी जानकारी का खुलासा जनहित में उचित नहीं है, क्योंकि यदि कोई लाभ होता भी है, तो वह आम आदमी को वितरित/हस्तांतरित कर दिया जाता है, न कि निजी उद्यम की तरह व्यक्तिगत लाभ के लिए रखा जाता है। आयोग ने उल्लेख किया कि जन सूचना अधिकारी ने पहले ही सभी सार्वजनिक करने योग्य जानकारी और रेलवे रेटिंग नीतियों के सामान्य सिद्धांत मुहैया कर दिए थे और उपलब्ध अभिलेखों से परे डेटा तैयार करने या उसकी व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है।

सावरकर के चित्रों को हटाने की याचिका पर सुनवाई से इन्कार

नई दिल्ली, एजेंसी

- **सुप्रीम कोर्ट ने याचिका को बताया तुच्छ याचिकाकर्ता को लगाई फटकार**

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को संसद और अन्य सार्वजनिक स्थानों से विनायक दामोदर सावरकर के चित्रों को हटाने के अनुरोध वाली जनहित याचिका पर सुनवाई करने से इन्कार कर दिया और याचिकाकर्ता को याचिका वापस लेने की अनुमति देने से पहले भारी जुर्माना लगाने की चेतावनी दी।

सीजेआई सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम पंचोली की पीठ ने याचिकाकर्ता सेवानिवृत्त भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी बी बालमुरुगन को ऐसी तुच्छ याचिका दायर करने पर चेतावनी दी। सीजेआई ने कहा, इस तरह की याचिका मानसिकता दर्शाती है। पीठ याचिकाकर्ता के इस निवेदन से नाराज थी कि वह वित्तीय बाधाओं के कारण व्यक्तिगत रूप से बहस करने नहीं आ सकता। बालमुरुगन ने याचिका में संसद के केंद्रीय कक्ष और अन्य सार्वजनिक स्थानों से सावरकर के चित्रों को हटाने का निर्देश देने का अनुरोध किया था। यह भी कहा था कि सरकार हत्या या राष्ट्रविरोधी गतिविधियों जैसे जघन्य अपराधों के आरोपियों को तब तक सम्मानित न करे जब तक कि वे बरी न हो जाएं।

अब्बास अंसारी की पूर्ण जमानत याचिका को मंजूरी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गैंगस्टर तथा यूएपीए के तहत दर्ज मामले में उत्तर प्रदेश के पूर्व विधायक अब्बास अंसारी की पूर्ण जमानत याचिका को मंगलवार को मंजूरी दे दी। सीजेआई सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति एम पांचोली की पीठ ने अंसारी की याचिका पर सुनवाई के दौरान यह आदेश दिया। पीठ ने कहा कि अंसारी अंतरिम जमानत पर लंबे वक्त से बाहर हैं और अब तक उन पर इस आजादी का दुरुपयोग करने का कोई आरोप नहीं लगा है। ऐसे में मामले पर कोई भी टिप्पणी किए बिना अंतरिम जमानत को पूर्ण किया जाता है। वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल और निजाम पाशा ने अब्बास अंसारी की ओर से पैरवी की।

लड़की की शादी से पहले माता-पिता को उसकी सहमति लेनी चाहिए

भुवनेश्वर। उड़ीसा हाईकोर्ट ने कहा है कि यदि कोई लड़की शादी के लिए तैयार नहीं है तो बाहरी दबाव या जबरदस्ती के जरिए उसकी शादी कराना स्वस्थ समाज के अनुकूल नहीं है। मुख्य न्यायाधीश हरीश टंडन और न्यायमूर्ति मुराहारी श्री रमन की पीठ ने कहा, अब समय आ गया है कि समाज आत्ममंथन करे कि लड़कियों को उनके माता-पिता जबरन शादी के लिए मजबूर करते हैं तो क्या होता है। लड़की का निर्णय सर्वोपरि है और माता-पिता को कोई भी फैसला लेने से पहले उसकी सहमति लेनी चाहिए।

- **उड़ीसा हाईकोर्ट की पति से अलग हुई महिला की याचिका पर टिप्पणी**

हाईकोर्ट ने यह टिप्पणी एक विवाहित महिला की उस याचिका का निपटारा करते हुए की, जिसमें उसने जबरन कराई गई शादी के बाद अलग रहने की अनुमति मांगी थी। अदालत ने स्पष्ट किया कि किसी भी स्थिति में माता-पिता को ऐसा निर्णय लेने से पहले बालिग लड़की की सहमति अवश्य लेनी चाहिए। महिला ने कहा कि वह न तो अपने पति के साथ रहना चाहती है और न ही अपने माता-पिता के साथ, क्योंकि वह रोजगार में है और स्वयं अपनी आजीविका अर्जित करती है।

एसएसबी ने शुरू की शराब के आदी अपने जवानों की बर्खास्तगी

नई दिल्ली। नेपाल और भूटान के साथ लगती बिना बाड़ वाली सीमाओं की रक्षा में जुटे सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) ने अपने शराब के आदी जवानों के खिलाफ सेवा समाप्ति की कार्रवाई शुरू की है। अधिकारियों के मुताबिक अब तक ऐसे 50 से ज्यादा जवानों की पहचान की गई है जिनमें से 8-10 कर्मियों को चिकित्सा और कानूनी कार्यवाही पूरी करने के बाद नौकरी से निकाल दिया गया है। बाकी के खिलाफ भी इसी तरह की कार्रवाई जारी है। अधिकारियों के मुताबिक उन कर्मचारियों के खिलाफ यह कार्रवाई की जा रही है जिनकी पहचान कई वर्षों से शराब की लगातार लत वाले कर्मियों के रूप में की गई है। उन्हें शराब पर निर्भरता के लक्षणों (एडीएस) वाले मामलों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। अधिकारियों का कहना है कि ऐसे जवान अपनी खुद की सुरक्षा के साथ अपने सहयोगियों और यहां तक कि आम जनता की सुरक्षा के लिए भी खतरा बन जाते हैं। शराब न मिलने पर ऐसे जवान चरम कदम उठा सकते हैं।

जज कम होने के बाद भी हिमाचल हाईकोर्ट 90 प्रतिशत मामले निपटाए

शिमला। हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट ने स्वीकृत संख्या से पांच न्यायाधीश कम होने के बावजूद 2025 में लगभग 90 प्रतिशत मामलों का निपटारा किया है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, एक जनवरी 2025 तक उच्च न्यायालय में 93,942 मामले लंबित थे। वर्ष के दौरान 81,092 नए मामले दर्ज किए गए जबकि 72,981 मामलों का निपटारा किया गया। इस तरह वर्ष के अंत तक लंबित मामलों की संख्या बढ़कर 1,02,053 हो गई लेकिन निपटारे की दर उल्लेखनीय रूप से 89.99 प्रतिशत रही। हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सहित स्वीकृत 17 न्यायाधीशों की संख्या के मुकाबले न्यायालय में 12 न्यायाधीश कार्यरत हैं। लंबे समय से लंबित मामलों को निपटाने के उद्देश्य से हाईकोर्ट ने 2026 में 12 शनिवारों को कार्य दिवस घोषित किया है, जिनमें सबसे पुराने मामलों की ही सुनवाई होगी।

लोकतांत्रिक ढांचे पर हमला कर रहे सरकार चलाने वाले : राहुल

उदगमंडलम। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को आरोप लगाया कि देश के लोकतांत्रिक ढांचे और जनता की आवाज पर केंद्र सरकार चलाने वालों की ओर से हमला किया जा रहा है। गुडलूर में एक स्कूल के कार्यक्रम में भाग लेने पहुंचे राहुल गांधी ने छात्रों के साथ बातचीत में कहा कि निर्वाचन आयोग जैसी संस्थाएं हमलों की चपेट में हैं।

उन्होंने कहा, वे उन लोगों को धमका रहे हैं जो उनकी विचारधारा से सहमत नहीं हैं। उन्होंने कहा, ऐसे परिदृश्य में, हमें आपके जैसे आत्मविश्वासी और सवाल पूछने से न डरने वाले युवाओं की जरूरत है। राहुल ने कहा, भारत एक लोकतांत्रिक देश है और हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर हमला हो रहा है। लोकतंत्र का मतलब ही है कि सभी लोगों को अपनी बात कहने का अधिकार हो।

जना नायकन फिल्म पर रोक मोदी का तमिल संस्कृति पर हमला

राहुल गांधी ने आरोप लगाया है कि तमिल फिल्म 'जना नायकन' पर प्रतिबंध लगाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तमिल संस्कृति पर हमला किया है। राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा, मोदी जी, आप तमिल लोगों की आवाज दबाने में कभी सफल नहीं होंगे। गौरतलब है कि दक्षिण भारत के सुपरस्टार तलपती के करियर की आखिरी फिल्म 'जना नायकन' 9 जनवरी को रिलीज होनी थी लेकिन अब मामला कोर्ट पहुंच गया है।

पश्चिमी दिल्ली में जिम के बाहर बिश्नोई गैंग ने चलाई गोलियां

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी के पश्चिम विहार में एक जिम के बाहर गोलीबारी की घटना के बाद लॉरेंस बिश्नोई गैंग की ओर से हमले की जिम्मेदारी लेने का दावा किया गया है।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक सोमवार रात को बाहरी दिल्ली के एक जिम के बाहर कुछ अज्ञात मोटरसाइकिल सवार बदमाशों ने गोलीबारी की थी। इसके बाद सोशल मीडिया पर एक संदेश में लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने इस हमले की जिम्मेदारी ली। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि पोस्ट की सच्चाई की जांच की जा रही है, जबकि गोलीबारी के संबंध में मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस ने बताया कि दोनों हमलावर आउटर रिंग रोड पर आर के फिटनेस के पास से गुजरे, जिसमें से एक ने बाहर दो गोलियां चलाईं। किसी को चोट नहीं लगी। घटना के बाद रणदीप मलिक नाम के एक फेसबुक अकाउंट पर एक मैसेज सामने आया, जिसमें हमले की जिम्मेदारी लेने का दावा किया गया। कहा गया कि गोलीबारी रणदीप और अनिल पंडित ने करवाई थी, जो अमेरिका में रहता है।

हमें चुनावी उद्देश्यों से नागरिकता की जांच करने का अधिकार... सुप्रीम कोर्ट ने निर्वाचन आयोग की दलील

नई दिल्ली। निर्वाचन आयोग ने मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट को बताया कि वह मतदाता सूची और चुनाव संचालन से संबंधित मामलों में मूल प्राधिकारी के रूप में कार्य करता है और यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य देश की नागरिकता हासिल करता है तो इस संबंध में आयोग की राय राष्ट्रपति पर बाध्यकारी होती है। आयोग ने कहा कि एसआईआर के दौरान यदि कोई प्रतिकूल निष्कर्ष निकलता है तो उसका परिणाम संबंधित व्यक्ति का नाम मतदाता सूची से हटाया जाना होगा और वह निर्वासन का कारण नहीं बनता। ऐसे मामले को नागरिकता अधिनियम और संबंधित कानूनों के तहत जांच के लिए केंद्र को भेजा जा सकता है।

- **संवैधानिक अधिकारों से परे काम करने के आरोपों को नकारा**

आयोग ने कहा कि खनन पट्टों या अन्य वैधानिक लाभों से जुड़े कई नियामक ढांचों में नागरिकता एक अनिवार्य शर्त होती है और सक्षम प्राधिकारी इसकी जांच कर सकता है। इस दलील के जरिए आयोग ने उस तर्क का खंडन किया कि वह अपने संवैधानिक अधिकार क्षेत्र से आगे बढ़कर काम कर रहा है। सीजेआई सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची की पीठ के समक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश द्विवेदी ने निर्वाचन आयोग की ओर से ये दलीलें पेश कीं। पीठ ने उन याचिकाओं पर अंतिम सुनवाई फिर से शुरू की, जिनमें बिहार सहित कई राज्यों में एसआईआर प्रक्रिया करने के निर्वाचन आयोग के फैसले को चुनौती दी गई थी और निर्वाचन आयोग की शक्तियों के दायरे, नागरिकता और मतदान के अधिकार पर महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न उठाए गए थे। द्विवेदी ने एसआईआर प्रक्रिया का बचाव करते हुए कहा कि यह पूरी तरह से चुनाव आयोग के संवैधानिक और वैधानिक अधिकार क्षेत्र के भीतर है।

वर्ल्ड ब्रीफ

पाकिस्तान में चार लोगों की गोली मारकर हत्या

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में एक स्थानीय शांति समिति के चार सदस्यों की अज्ञात हमलावरों ने मंगलवार को गोली मारकर हत्या कर दी। यह घटना प्रांत के उत्तरी वजीरिस्तान से सटे बन्नू जिले में हुई। अज्ञात बंदूकधारियों ने जिले के मजांग चौक के पास घात लगाकर हमला किया। घटना के बाद पुलिस और सुरक्षा बल मौके पर पहुंचे और हमलावरों की तलाश में तलाशी अभियान शुरू किया। खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान प्रांत में हाल के दिनों में आतंकवादी हमलों में तेजी आई है। सोमवार को पुलिस वाहन को निशाना बनाकर किए गए विस्फोट में एक वरिष्ठ अधिकारी समेत छह पुलिसकर्मी मारे गए थे।

न्यूयॉर्क में नर्सों की हड़ताल

न्यूयॉर्क। न्यूयॉर्क शहर के कई बड़े अस्पतालों में नए अनुबंध पर बातचीत असफल हो जाने से लगभग 15,000 नर्स हड़ताल पर चली गई हैं। कोलंबिया ब्रॉडकास्टिंग सिस्टम न्यूज (सीबीएस) ने यह जानकारी दी। हड़ताल सोमवार को सुबह पांच निजी अस्पतालों में शुरू हुई, जिसमें माउंट सिनाई, माउंट सिनाई मॉर्निंगसाइड, माउंट सिनाई वेस्ट और मैनहट्टन में न्यूयॉर्क-प्रेस्बिटेरियन सुविधाएं शामिल हैं। मरीजों के परिवारों ने कहा कि नियमित नर्सिंग कर्मचारियों की गैरमौजूदगी से देखभाल की निरंतरता और गुणवत्ता को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं। ग्रेटर न्यूयॉर्क हॉस्पिटल एसोसिएशन ने कहा कि अस्पतालों ने हड़ताल के दौरान कामकाज चलाने के लिए अस्थायी तौर पर नर्सों को सेवा के लिए लिया है। कर्मचारियों के सेवा-समय में बदलाव किया गया है। मरीजों की छुट्टी की प्रक्रिया तेज की है।

कजाखिस्तान में सड़क हादसे में भारतीय छात्रा की मौत

अस्ताना। कजाखिस्तान में हुए एक सड़क हादसे में एक भारतीय छात्रा की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। यह दुर्घटना उस समय हुई जब मेडिकल छात्रों का एक समूह सड़क मार्ग से यात्रा कर रहा था। भारतीय दूतावास ने मंगलवार को यह जानकारी दी। यह हादसा ओस्केमेन में उस समय हुआ, जब सेमे मेडिकल विश्वविद्यालय के 11 भारतीय छात्र घूम फिर कर वापस लौट रहे थे। भारतीय दूतावास ने बताया कि इस हादसे में भारतीय छात्रा 25 वर्षीय मिली मोहन की मौत हो गई, जबकि अशिका शीजामिनी संतोष और जसीना बी घायल हो गईं। दूतावास ने बताया कि घायल छात्राओं का उपचार किया जा रहा है और उनकी हालत स्थिर है। परिजनों को सूचना दे दी गई है।

अमेरिका ने एक साल में एक लाख से अधिक वीजा किए रद्द

वॉशिंगटन। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लगभग एक साल पहले पदभार संभालने के बाद से अब तक एक लाख से अधिक वीजा रद्द किए जा चुके हैं। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि रद्द किए गए वीज़ा में लगभग 8,000 छात्रों के वीज़ा और 2,500 स्पेशल वीज़ा उन लोगों के शामिल हैं जिनका आपराधिक गतिविधि में लिप्त होने पर अमेरिकी कानून प्रवर्तन एजेंसियों से सामना हुआ था। ज्यादातर वीजा उनके रद्द हुए हैं, जिन्होंने गैरकानूनी तरीके से अवधि से ज्यादा समय देश में बिताया था। बता दें कि पिछले साल जून में अमेरिका ने अपने राजनयिक मिशनों को छात्र वीज़ा के लिए आवेदन करने वाले सभी विदेशियों के सोशल मीडिया और ऑनलाइन मौजूदगी की जांच करने का निर्देश दिया था। अमेरिकी विदेश विभाग ने कहा था कि वह 5 .5 करोड़ से अधिक अमेरिकी वीज़ा धारकों के रिकॉर्ड की समीक्षा कर रहा है।

सियाचिन की दहलीज पर अब ड्रैगन की 'नापाक' चाल

शक्सगाम घाटी पर चीन के दावे के बीच 1963 के उस अवैध समझौते का जिन्न एक बार फिर बाहर आ गया है, जिसके तहत पाकिस्तान ने भारतीय क्षेत्र की 5,180 वर्ग किलोमीटर जमीन (शक्सगाम घाटी) चीन को उपहार में दे दी थी। ताजा सैटेलाइट तस्वीरों में इस विवादित क्षेत्र में चीन की बढ़ती सक्रियता और पक्की सड़कों के जाल ने भारत को कड़ा रुख अपनाने पर मजबूर कर दिया है। विदेश मंत्रालय पहले ही साफ कर चुका है कि अपनी संप्रभुता से समझौता भारत को कतई स्वीकार नहीं है। अब सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी ने भी स्पष्ट कर दिया है कि शक्सगाम घाटी में किसी भी तरह की गतिविधि को हम स्वीकार नहीं करते हैं और वहां चीन या पकिस्तान की किसी भी गतिविधि को गैरकानूनी मानेंगे।

शक्सगाम घाटी पर चीन के दावे से तनाव।

क्या है विवाद

- शक्सगाम घाटी का विवाद भारत, चीन और पाकिस्तान के बीच एक जटिल क्षेत्रीय मुद्दा है। वर्तमान में यह विवाद इसलिए गहरा गया है क्योंकि चीन ने इस क्षेत्र में अपनी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को उचित ठहराते हुए भारत के विरोध को खारिज कर दिया है।

क्षेत्रीय स्थिति और इतिहास

- शक्सगाम घाटी (जिसे ट्रांस-काराकोरम ट्रैक्ट भी कहा जाता है) मूल रूप से जम्मू-कश्मीर रियासत का हिस्सा थी और 1947 में विलय के बाद कानूनी रूप से भारत का अभिन्न अंग बनी थी। लेकिन 1947-48 के युद्ध के दौरान पाकिस्तान ने इस क्षेत्र (पाक अधिकृत कश्मीर) पर अवैध कब्जा कर लिया था।

1963 का अवैध समझौता

- 2 मार्च 1963 को पाकिस्तान ने एक सीमा समझौते के तहत शक्सगाम घाटी का लगभग 5,180 वर्ग किलोमीटर हिस्सा अवैध रूप से चीन को सौंप दिया था। हालांकि भारत ने इस समझौते को कभी मान्यता नहीं दी और हमेशा इसे अवैध तथा अमान्य करार दिया है।

ताजा विवाद

- सैटेलाइट तस्वीरों से पता चला है कि चीन इस इलाके में 75 किलोमीटर लंबी और 10 मीटर चौड़ी 'ऑल-वेदर' सड़क और अन्य सैन्य ढांचा तैयार कर रहा है। जानकारी के अनुसार चीन की निर्माणाधीन सड़क दुनिया के सबसे ऊंचे युद्ध क्षेत्र सियाचिन ग्लेशियर के करीब है। भारत ने बीती 9 जनवरी को इस पर कड़ी आपत्ति दर्ज कराई थी, जिसे चीन ने 12 जनवरी को यह कहते हुए ठुकरा दिया था कि वह अपने क्षेत्र में निर्माण कर रहा है।

सामरिक महत्व

- यह घाटी सामरिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सियाचिन ग्लेशियर के उत्तर में स्थित है। यहां चीन द्वारा सड़क निर्माण से भारतीय सेना के लिए रणनीतिक चुनौती पैदा हो सकती है, क्योंकि यह चीन के शिनजियांग प्रांत को सीधे पाक अधिकृत कश्मीर से जोड़ती है।

भारत का रुख

- भारत सरकार और विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि संपूर्ण जम्मू-कश्मीर और लद्दाख भारत का अटूट हिस्सा हैं और भारत अपने हितों की रक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने का अधिकार सुरक्षित रखता है।

क्षेत्र: 5,180 वर्ग किलोमीटर (ट्रांस-काराकोरम ट्रैक्ट)।

विवाद : पाकिस्तान ने 1963 में इसे चीन को दिया, जिसे भारत अवैध मानता है।

ताजा घटना : दो दिन पहले चीन ने भारत के विरोध को खारिज करते हुए निर्माण जारी रखने की बात कही है।

ब्रिटेन में नग्न डीपफेक बनाने के खिलाफ लागू होगा कानून

लंदन। ब्रिटेन सरकार किसी उपभोक्ता की सहमति के बिना ऑनलाइन अश्लील इमेज बनाने वालों पर आपराधिक मुकदमा चलाने की तैयारी कर रही है। ब्रिटिश मीडिया नियामक ऑफ़कॉम ने एक्स एआई और एलन मस्क के चैटबॉट ग्रॉक की जांच शुरू की है। इनका इस्तेमाल एआई का उपयोग करके महिलाओं की सहमति के बिना उनकी अश्लील तस्वीरें बनाने के लिए किया गया था।

ब्रिटेन की विज्ञान, नवाचार और तकनीकी राज्य मंत्री लिज़ केंडल ने संसद में कहा कि किसी की सहमति के बिना उसकी अश्लील तस्वीरें बनाना, साझा करना या साझा करने की धमकी देना व्यक्तियों और प्लेटफॉर्म दोनों के लिए एक आपराधिक कृत्य है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरानी अधिकारियों के साथ बैठकें की रद्द

प्रदर्शनकारियों से कहा-मदद भेजी जा रही, अब तक दो हजार लोगों की हो चुकी मौत

वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार को कहा कि उन्होंने विरोध प्रदर्शनों पर कार्रवाई के बीच ईरानी अधिकारियों के साथ होने वाली वार्ता रद्द कर दी है। साथ ही उन्होंने ईरान के नागरिकों से कहा, "मदद भेजी जा रही है।"

राष्ट्रपति ट्रंप ने मंगलवार को हालांकि यह विवरण नहीं दिया कि मदद का स्वरूप क्या है। ट्रंप ने यह स्पष्ट नहीं किया कि यह मदद किस रूप में होगी, लेकिन यह बयान ऐसे समय आया है जब रिपब्लिकन राष्ट्रपति ने इस सप्ताह की शुरुआत में कहा था कि वाशिंगटन की ओर से इस्लामी गणराज्य पर हमले की धमकी के बाद ईरान बातचीत करना चाहता है।

मानवाधिकार निगरानी संस्थाओं के अनुसार, ईरान में विरोध प्रदर्शनों में अब तक 2,000 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। ट्रंप हालांकि अपने हालिया सोशल मीडिया संदेश के माध्यम से ईरानी सरकार के साथ बातचीत करने की अपनी तैयारियों को लेकर अचानक रुख बदलते हुए नजर आए। ट्रंप ने 'ट्रुथ सोशल' पर सुबह किए गए एक पोस्ट में लिखा, "ईरानी देशभक्तों, प्रदर्शन जारी रखो — अपनी संस्थाओं पर कब्जा करो!!!" उन्होंने कहा, "हत्यारों और अत्याचारियों के नाम दर्ज कर लो। उन्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। जब तक प्रदर्शनकारियों की निरर्थक हत्याएं बंद नहीं होतीं, मैंने ईरानी अधिकारियों के साथ सभी बैठकें रद्द कर दी हैं। मदद भेजी जा रही है।" राष्ट्रपति ने बार-बार तेहरान को सैन्य कार्रवाई की धमकी दी है यदि उनके प्रशासन को पता चलता है कि इस्लामी गणराज्य सरकार विरोधी प्रदर्शनकारियों के खिलाफ घातक बल का प्रयोग कर रहा है।

अमेरिका ने अपने नागरिकों से तत्काल ईरान छोड़ने को कहा

वॉशिंगटन। ईरान में अमेरिका के ऑनलाइन दूतावास ने अपने नागरिकों से ईरान से तुरंत बाहर निकलने का आग्रह किया है। दूतावास ने अमेरिकी नागरिकों को आर्मेनिया और तुर्की के रास्ते सड़क मार्ग से ईरान छोड़ने को कहा है। बयान में यह भी कहा गया कि अमेरिकी-ईरानी दोहरी राष्ट्रीयता वाले नागरिकों को ईरानी पासपोर्ट का उपयोग करके ईरान छोड़ना होगा, क्योंकि ईरानी सरकार दोहरी नागरिकता को मान्यता नहीं देती। चेतावनी दी गई कि, अमेरिकी नागरिक ईरान में पूछताछ, गिरफ्तार और हिरासत में लिए जाने के गंभीर जोखिम में हैं। इस बीच व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलाइन लीविट ने कहा कि कूटनीति अमेरिका के ईरान नीति में प्राथमिक दृष्टिकोण बनी हुई है, हालांकि ट्रम्प प्रशासन ने जरूरत पड़ने पर सैन्य विकल्पों को खारिज नहीं किया है। लीविट ने कहा, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का अगला कदम क्या होगा, केवल वही जानते हैं। इसलिए दुनिया को इंतजार और अनुमान लगाना होगा और हम उन्हें निर्णय लेने देंगे।

... तो भारत को चुकाना पड़ सकता है 75 प्रतिशत टैरिफ

ट्रंप की ईरान के साथ व्यापार करने वाले देश पर 25 प्रतिशत टैरिफ की घोषणा का असर भारत पर भी पड़ सकता है। भारत हाल के वर्षों में ईरान के पांच सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक रहा है। अमेरिका ने पहले ही भारत पर 50 प्रतिशत शुल्क लगा रखा है। तेहरान स्थित भारतीय दूतावास के अनुसार, ईरान को भारत के प्रमुख निर्यातों में चावल, चाय, चीनी, दवाइयां, कृत्रिम फाइबर, विद्युत मशीनरी और कृत्रिम आभूषण शामिल हैं, जबकि ईरान से भारत के प्रमुख आयातों में सूखे मेवे, अकार्बनिक/कार्बनिक रसायन और कांच के बर्तन शामिल हैं। 2023 में भारत से ईरान को निर्यात 1.19 तो 2024-25 में 1.24 अरब डॉलर था। इसके मुकाबले ईरान से 0.44 डॉलर का आयात हुआ था। ऐसे में भारत अगर ईरान के साथ व्यापार जारी रखता है, तो उसे अमेरिका के साथ व्यापार करने में 75 फीसदी टैरिफ चुकाना पड़ सकता है।

सुप्रीम कोर्ट ने टैरिफ रद्द किया तो गड़बड़ होगी

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अगर सुप्रीम कोर्ट यह फैसला सुनाता है कि उनके पास व्यापक शुल्क लगाने की एकतरफा शक्ति नहीं है, तो बहुत बड़ी गड़बड़ हो जाएगी, और हमारे देश के लिए उन पैसों को चुकाना लगभग असंभव हो जाएगा, जो अमेरिका ने व्यापक टैरिफ से एकत्र किए हैं। उन्होंने सोमवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि अगर अदालत उनके द्वारा लगाए गए टैरिफ को रद्द कर देती है, तो हम बुरी तरह फंस जाएंगे। ट्रंप ने अदालत के आसन्न फैसले के बारे में सोशल मीडिया पर लगातार पोस्ट किए हैं। उन्होंने अपने पोस्ट में यह भी जिक्र किया कि सरकार के लिए पैसा वापस करना कितना मुश्किल हो सकता है। उन्होंने शुल्क का पैसा वापस करने के बारे में कहा, यह संभव नहीं हो सकता।ट्रंप ने कहा कि लेकिन, अगर ऐसा हुआ, तो यह इतनी बड़ी रकम होगी कि यह पता लगाने में कई साल लग जाएंगे कि हम किस संख्या की बात कर रहे हैं और यहां तक कि किसे, कब और कहां भुगतान करना है।

ब्रिटेन से वापस बुला लेंगे राजनयिक

तेहरान। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा है कि अगर ब्रिटेन ईरान के कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में विफल रहता है तो ईरान को लंदन में अपने दूतावास के कर्मचारियों को निकालने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। राघची ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय कानूनी दायित्वों के तहत, ब्रिटेन ईरान के लंदन दूतावास की सुरक्षा करने के लिए बाध्य है।

यूक्रेन की आपातकालीन सेवा द्वारा उपलब्ध कराई गई इस तस्वीर में मंगलवार को यूक्रेन के खार्किव में रूसी हमले के बाद लगी आग को बुझाते सेवा कर्मी।

रूस का यूक्रेन के विद्युत ग्रिड पर बड़ा हमला, चार की मौत

कीव। रूस ने यूक्रेन पर बड़ा ड्रोन और मिसाइल हमला करके उसके विद्युत ग्रिड को एक बार फिर निशाना बनाया। युद्ध के चार साल पूरे होने वाले हैं और ऐसा लगता है कि अमेरिका के नेतृत्व वाले शांति प्रयासों को रूस नजरअंदाज कर रहा है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने सोशल मीडिया पर बताया कि रूस ने रात भर में आठ क्षेत्रों पर लगभग 300 ड्रोन, 18 बैलिस्टिक मिसाइलों और सात क्रूज मिसाइलों से हमला किया। पूर्वोत्तर खार्किव क्षेत्र में हमले में एक डाक डिपो में चार लोगों की मौत हो गई और कीव क्षेत्र में कई लाख घरों में बिजली गुल हो गई। राजधानी में दिन का तापमान शून्य से 12 डिग्री सेल्सियस नीचे था। सड़कें बर्फ से ढकी थीं और शहर जनरेटरों के शोर से गूंज रहा था। चार दिन पहले रूस ने रात भर चले एक बड़े हमले में सैकड़ों ड्रोन और दर्जनों मिसाइलों से हमला किया था। रूस ने युद्ध में दूसरी बार एक शक्तिशाली नई हाइपरसोनिक मिसाइल का इस्तेमाल किया, जिसने पश्चिमी यूक्रेन को निशाना बनाया। स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि यूक्रेन के खार्किव क्षेत्र में रूसी हमले में 10 लोग घायल हुए हैं। क्षेत्रीय सैन्य प्रशासन के प्रमुख ओलेह किपर ने बताया कि ओडेसा शहर में हुए रूसी हमले में छह लोग घायल हो गए। हमले में ऊर्जा अवसंरचना, एक अस्पताल, एक शैक्षणिक संस्थान और कई आवासीय इमारतें क्षतिग्रस्त हो गईं। इस बीच, रूस के रक्षा मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि रूसी वायुसेना ने रातभर में 11 यूक्रेनी ड्रोन मार गिराए।

अलेप्पो में सरकारी बलों और कुर्द लड़ाकों के बीच संघर्ष के बाद विस्थापित निवासियों को ले जा रही बसें अशरफीह इलाके में एक खंडहर इमारत के पास से गुजरती हुईं।

सीरिया, कुर्दिश मिलिशिया का अलेप्पो में युद्ध विराम

अल्लेपो। कुर्द सशस्त्र सीरियाई लोकतांत्रिक बल (एसडीएफ) के लड़ाके पिछले हफ़्ते शहर के उत्तर-पश्चिम में अशरफीह और शेख मकसूद इलाकों में सरकार समर्थक सेनाओं के साथ कई दिनों तक चली लड़ाई के बाद हुए युद्धविराम के बाद अलेप्पो खाली करने पर राजी हो गए हैं। इन झड़पों में कम से कम 24 लोग मारे गए और 129 घायल हुए हैं। 140,000 से अधिक लोग बेघर हो गए हैं। जॉर्डन ने लोगों के लिए मदद से भरे 51 ट्रकों का काफिला भेजकर इस खराब मानवीय स्थिति पर प्रतिक्रिया दी है।

इजराइल के फिल्म निर्माता ने निर्भया कांड पर बनाई फिल्म

यरूशलम। इजराइली फिल्म निर्माता डैन वोलमैन ने कहा है कि उनकी नयी फिल्म 'मर्डर्स टू क्लोज, लव टू फार' का विचार उन्हें 2012 में भारत यात्रा के दौरान आया था, जब दिल्ली में एक फिजियोथेरेपी इंटर्न (निर्भया) के साथ हुए सामूहिक बलात्कार व उसकी हत्या के विरोध में व्यापक प्रदर्शन हो रहे थे। ''फ्लोच'', ''माई माइकल'', ''ऐन इजराइली लव स्टोरी'' और ''वैली ऑफ स्ट्रेंथ'' जैसी फिल्मों के लिए मशहूर वोलमैन ने भारतीय फिल्म निर्माता मंजू बोरा के साथ मिलकर इस 'मर्डर मिस्ट्री' का सह-निर्देशन किया है। यह पहली फिल्म है जिसका सह-निर्माण भारत और इजराइली फिल्मकारों ने किया है। इसे 24वें पुणे अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (पीआईएफएफ) में प्रदर्शित किया जाएगा। वोलमैन ने बताया कि फिल्म की शूटिंग भारत में हुई है और इसमें ''यौन उत्पीड़न, हिंसा, भ्रष्टाचार, समूह के व्यवहार, गिरोह और भीड़ की मानसिकता'' जैसे विषयों को उठाया गया है। उन्होंने कहा, ये मुद्दे इजराइल में भी उतने ही आम हैं जितने दुनिया के अन्य हिस्सों में।

पीआईएफएफ में, ''मर्डर्स टू क्लोज, लव टू फार'' को 17 और 19 जनवरी को ग्लोबल सिनेमा श्रेणी के हिस्से के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा।

फ्रांस में किसानों ने 350 ट्रैक्टरों के साथ संसद तक मार्च किया

पेरिस। फ्रांस में किसानों ने अपनी कम आय और दक्षिण अमेरिका के साथ यूरोपीय संघ (ईयू) के व्यापार समझौते के विरोध में मंगलवार को 350 ट्रैक्टर के साथ संसद तक मार्च किया। पुलिस सुरक्षा के बीच, ट्रैक्टरों ने व्यस्त समय के दौरान चैंप्स-एलिसी और पेरिस की अन्य सड़कों पर यातायातअवरूद्ध कर दिया फिर वे सीन नदी को पार करके नेशनल असेंबली तक पहुंचे। किसान संघों ने कहा कि वे फ्रांस की खाद्य सुरक्षा की रक्षा के लिए ठोस और तत्काल कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। फ्रांस सरकार की प्रवक्ता मौड ब्रेगॉन ने टीएफ1 टेलीविजन पर कहा कि सरकार किसानों की मदद के लिए जल्द ही नयी घोषणाएं करेगी। राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों और उनकी सरकार यूरोपीय संघ-मर्कोसुर व्यापार समझौते के विरोध में हैं, लेकिन उम्मीद है कि शनिवार को पैराग्वे में इस पर हस्ताक्षर हो जाएंगे, क्योंकि इसे ज्यादातर अन्य ईयू देशों का समर्थन प्राप्त है। यूरोपीय देशों के किसान मर्कोसुर देशों - ब्राजील, अर्जेंटीना, बोलीविया, पैराग्वे और उरुग्वे के साथ व्यापार समझौते का लंबे समय से विरोध कर रहे हैं।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 14 जनवरी, बुधवार 2026 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- माघ, पक्ष-कृष्ण पक्ष, एकादशी 17 .52 तक तत्पश्चात द्वादशी।

आज का पंचांग

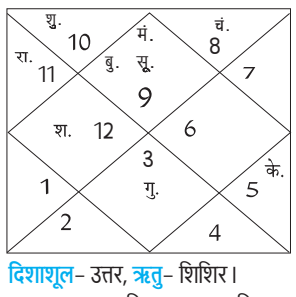

दिशाशूल- उत्तर, **ऋतु**- शिशिर।
चन्द्रबल- वृषभ, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुंभ।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र- अनुराधा 15 जनवरी 03 .03 तक तत्पश्चात ज्येष्ठा।

मेष — आज व्यावसायिक दृष्टिकोण से दिन बहुत सामान्य रहने वाला है। आपका मन कुछ अशांत हो सकता है। आप जिनसे प्रेम और सम्मान की अपेक्षा रखते हैं, वो आपको भाव नहीं देंगे। आप अपने काम पर ही ध्यान दें। दूसरों के मामलों में पड़ने से बचें।

वृष — आज सहयोगियों के ऊपर अधिक निर्भर न हों। विरोधी आपके विरुद्ध षड्यंत्र रच सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को वेतन की चिंता हो सकती है। रेस्टोरेन्ट्स से जुड़े व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त होगा। आपकी वाणी और व्यवहार से मित्रजन अत्यंत प्रसन्न रहेंगे।

मिथुन — आज आर्थिक समस्याओं को लेकर थोड़े परेशान रहेंगे। बच्चों के भविष्य की चिंता हो सकती है। विद्यार्थी पढ़ाई को लेकर अधिक गंभीर नहीं रहेंगे। धार्मिक क्रियाकलापों से जुड़ने का प्रयास करेंगे। इससे आपकी कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

कर्क — आज व्यर्थ की बहसबाजी से स्वयं को दूर रखें। व्यवसाय में नया प्रयोग करने से बचें। आपको अपनी जिम्मेदारियों पर विशेष ध्यान देना होगा। इस समय आपको काम के साथ आराम की भी आवश्यकता है। शरीर में कुछ थकावट महसूस होगी।

सिंह — आज संपत्ति विवाद हल हो सकते हैं। राजनीति से जुड़े लोगों को विरोधियों से सावधान रहना चाहिए। अपनी कार्यशैली में सुधार लाने का प्रयास करें। किसी महत्वपूर्ण निर्णय को लेकर मन में कुछ कन्फ्यूजन रहने की संभावना है।

कन्या — आज अपनी तीव्रबुद्धि का कुशल प्रयोग करेंगे। नौकरीपेशा जातकों का कार्यक्षेत्र में सम्मान बढ़ेगा। किसी दूर के रिश्तेदार से मिलना हो सकता है। दांपत्य जीवन में चल रही अनबन खत्म होने की संभावना है। आपके मन में उच्च पद और प्रतिष्ठा की इच्छा प्रबल होगी।

तुला — आज के दिन आपको कुछ त्याग करना पड़ेगा। अपने विषय में गलत धारणा बनाने से बचें। व्यर्थ के खर्चों के कारण आपका बजट बिगड़ सकता है। ऐसे सभी लोगों से दूरी बनाकर रखें, जो आपका मनोबल गिराते हों।

वृश्चिक — आज प्रेम विवाह को लेकर घर में चर्चा करना चाहते हैं, तो दिन शुभ है। विदेश यात्रा में आ रही बाधा दूर होगी। अव्यावहारिक विचारों के कारण उपहास हो सकता है। उच्च अधिकारी आपको कोई जिम्मेदारी भरा काम सौंप सकते हैं।

धनु — आज कार्यक्षेत्र में आपकी उपेक्षा हो सकती है। पारिवारिक वातावरण तनावपूर्ण हो सकता है। इसीलिए सोच-विचारकर ही आपको लोगों के सामने प्रतिक्रिया देनी चाहिए। मित्रों से अपने मन की बातें शेयर कर सकते हैं।

मकर — आज आपके कारोबार में अच्छी प्रगति होगी। आधारभूत समस्याओं का समाधान ढूंढने का प्रयास करेंगे। इसका सकारात्मक परिणाम आपको अवश्य मिलेगा। आप जिन कार्यों को प्राथमिकता क्रम में रखेंगे, उन्हें अवश्य ही पूर्ण कर लेंगे।

कुंभ — आज व्यापार में नई साझेदारी को लेकर कुछ निर्णय कर सकते हैं। सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सकता है। किसी महत्वपूर्ण कार्य के पूर्ण होने से आनंदित महसूस करेंगे। पुरानी गलतियों से सीखने का अवसर न चूकें।

मीन — आज भविष्य को लेकर योजना बनाने के लिए दिन अनुकूल है। सरकारी कार्यों में रुकावटें आ सकती हैं। महिलाओं को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। कोई समस्या हो, तो उसे अपने बड़ों से साझा करें। संतान के विवाह की चिंता रहेगी।

सुडोकू -31

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

5		4		7		1		9
	2					7		4
		9		8	3	6		
	8		9			5		6
6		3			4		7	
		7	5	6		9		
9		8					2	
3		1		4		8		7

सुडोकू - 30 का हल

5	1	3	9	4	2	6	7	8
9	8	7	5	1	6	2	4	3
6	4	2	3	8	7	9	5	1
7	3	6	4	5	9	1	8	2
4	2	8	6	3	1	7	9	5
1	9	5	7	2	8	3	6	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
8	6	4	2	9	3	5	1	7
2	7	1	8	6	5	4	3	9

अपने सपनों को साकार करने और उन्हें पूरा करने का मौका पाकर मैं खुद को सबसे भाग्यशाली व्यक्ति मानता हूं। लेकिन अब अलविदा कहने का समय आ गया है। मैं टेनिस से संन्यास ले रहा हूं।
–मिलोस राओनिच

स्टेडियम

कानपुर, बुधवार, 14 जनवरी 2026

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

सीए कटप्पा फिर मुक्केबाजी टीम के मुख्य कोच बने

नई दिल्ली। द्रोणाचार्य पुरस्कार प्राप्त सी ए कटप्पा की तीसरी बार भारतीय पुरूष मुक्केबाजी टीम के कोच के तौर पर वापसी हो रही है। भारतीय मुक्केबाजी महासंघ ने मंगलवार को इसकी पुष्टि की। वह भारतीय खेल प्राधिकरण रोहतक के कोच धरमेंद्र यादव की जगह लेंगे जिनकी पिछले साल नियुक्ति हुई थी । यादव पुरूष कोचिंग ढांचे का हिस्सा बने रहेंगे । बीएफआई के कार्यकारी निदेशक कर्नल अरूण मलिक ने पीटीआई से कहा सीए कटप्पा को कोच बनाया गया है और धर्मेंद्र यादव कोचिंग स्टाफ का हिस्सा रहेंगे। पिछले कुछ समय से भारतीय पुरूष मुक्केबाजों के खराब प्रदर्शन के कारण यह फैसला लिया गया है।

विंटर स्विमिंग चैंपियनशिप 17 से

नई दिल्ली। दो दिवसीय स्टेयर्स विंटर स्विमिंग चैंपियनशिप का आयोजन 17 से 18 जनवरी तक स्पोर्ट्स स्कूल सिविल लाइन लुडलो कैटल नई दिल्ली पर किया जाएगा। स्विमिंग फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के उपाध्यक्ष व मेंटर राजकुमार के अनुसार चैंपियनशिप में ग्रुप एक से लेकर ग्रुप पांच तक के लड़के लड़कियां स्विमर भाग लेंगे। चैंपियनशिप में फ्री स्टाइल, बैक स्ट्रोक, ब्रेस्ट स्ट्रोक, बटरफ्लाई , आई एम मेडले तथा फ्री स्टाइल रिले स्पर्धाओं का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि नेशनल स्पोर्ट्स प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन का मुख्य उद्देश्य ग्रास रूट के स्विमर्स को बेहतरीन सुविधा और आगे बढ़ाना है। चैंपियनशिप स्विमिंग फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के नियमों के तहत आयोजित की जाएगी।

चोटिल डु प्लेसिस एसए20 से बाहर

जोहानसबर्ग। जोबर्ग सुपर किंग्स को मंगलवार को एक बड़ा झटका लगा, जब कप्तान फाफ डु प्लेसिस एसए20 सीजन के बाकी मैचों से बाहर हो गए। फ्रेंचाइजी के अनुसार, डु प्लेसिस के दाहिने अंगूठे का लिगामेंट फट गया है और अब चोट को ठीक करने के लिए उन्हें सर्जरी की जरूरत होगी। 41 वर्षीय खिलाड़ी को यह चोट 10 जनवरी को एमआई केप टाउन के खिलाफ जेएसके के सबसे हालिया मैच के दौरान लगी थी। एमआईसीटी के 234/3 का विशाल स्कोर बनाने के बाद, कप्तान चेज के दौरान बल्लेबाज़ी करने के लिए मैदान पर नहीं उतरे और जेएसके आखिरकार मैच हार गई।

वीनस विलियम्स होबार्ट में पहले दौर में बाहर

होबार्ट (ऑस्ट्रेलिया)। वर्ष के पहले ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट ऑस्ट्रेलियाई ओपन को शुरू होने में अब जबकि एक सप्ताह से भी कम समय बचा है तब 45 वर्षीय वीनस विलियम्स फॉर्म हासिल करने के लिए जूझ रही है। वीनस मंगलवार को यहा होबार्ट इंटरनेशनल टेनिस टूर्नामेंट के पहले दौर में तात्याना मारिया से 6-4, 6-3 से हार गईं। वीनस को साल के पहले ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के लिए वाइल्डकार्ड से प्रवेश दिया गया है। उन्हें होबार्ट में खेलने के लिए भी वाइल्डकार्ड मिला था, जहां वह लगभग डेढ़ घंटे तक चले मैच में छठी वरीयता प्राप्त मारिया से हार गईं।

न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे ही मैच में सीरीज को जीतना चाहेगी भारतीय टीम

विराट कोहली का शानदार फॉर्म चिंता का विषय है मेहमानों के लिए

राजकोट, एजेंसी

विराट कोहली की शानदार फॉर्म ने भारत की कुछ प्रमुख खिलाड़ियों की चोटों को लेकर बढ़ती चिंताओं को कुछ हद तक कम कर दिया है और वह न्यूजीलैंड के खिलाफ बुधवार को यहां होने वाले दूसरे एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में जीत हासिल करके तीन मैच की शृंखला में अजेय बढ़त हासिल करने की कोशिश करेगा। भारत ने वडोदरा में खेले गए पहले मैच में न्यूजीलैंड को चार विकेट से हराया था। वाशिंगटन सुंदर उस मैच में चोटिल हो गए थे और वह वनडे शृंखला से बाहर हो गए हैं।

चयनकर्ताओं ने दिल्ली के आयुष बडोनी को टीम में शामिल किया है, लेकिन भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर की ऑलराउंडर को प्राथमिकता देने की रणनीति को देखते हुए नीतीश कुमार रेड्डी के रूप में एक और ऑलराउंडर को अंतिम एकादश में शामिल किया जा सकता है। ऋषभ पंत पहले वनडे से पूर्व चोटिल होने के कारण शृंखला से बाहर हो गए थे। चयनकर्ताओं ने उनकी जगह ध्रुव जुरेल को टीम में शामिल करने का फैसला किया, जो टीम प्रबंधन के लिए विशेषज्ञ बल्लेबाज के रूप में एक और विकल्प हो सकते हैं। भारतीय टीम के पास कई विकल्प हैं लेकिन अगले महीने से शुरू होने वाले टीम टी20 विश्व कप को ध्यान में रखते हुए वह किसी तरह का जोखिम नहीं लेना चाहेगी। टी20 टीम में वनडे टीम से बिल्कुल अलग बल्लेबाजी क्रम होगा। लेकिन कुछ नाम दोनों टीमों में समान हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण नाम ऑलराउंडर तिलक वर्मा का है जो ग्रोइन की चोट के कारण न्यूजीलैंड के खिलाफ कम से कम पहले तीन टी20 मैचों में नहीं खेल पाएंगे। भारतीय टीम की इन चिंताओं के बीच सभी की निगाह कोहली और रोहित शर्मा पर टिकी रहेगी।

पहले मैच में कोहली वनडे में अपने 54वें शतक से चूक गए, लेकिन उनकी 91 गेंदों पर खेली गई 93 रन की पारी ने भारत की जीत की नींव रखी। भारत और न्यूजीलैंड की टीमों में काफी अंतर नजर आता है। कीवी टीम का गेंदबाजी आक्रमण मजबूत नहीं है और भारतीय बल्लेबाज इसका पूरा फायदा उठाने की कोशिश करेंगे। पहले मैच में कप्तान शुभमन गिल ने सधी हुई अर्धशतकीय पारी खेली जबकि उप कप्तान श्रेयस अय्यर एक रन से अर्धशतक बनाने से चूक गए। रोहित शर्मा फिर से भारत को अच्छी शुरुआत दिलाने की कोशिश करेंगे। कोहली इस समय अलग ही तरह की क्रिकेट खेल रहे हैं और वह आत्मविश्वास से भरे हुए नजर आते हैं। ऐसा लगता है कि वह अपेक्षाओं और आलोचनाओं के बोझ से पूरी तरह मुक्त हैं। कोहली ने शुरुआत से ही न तो आक्रामक बल्लेबाजी करने से परहेज की है और न ही रन बनाने का कोई मौका छोड़ा है। यही कारण है कि उन्होंने वडोदरा में सभी प्रारूपों में सबसे कम पारियों में 28,000 रनों का रिकॉर्ड बनाया।

अभ्यास सत्र के दौरान न्यूज़ीलैंड के निक केली (दाएं) और माइकल रे। एजेंसी

टीम

भारत : शुभमन गिल (कप्तान), यशस्वी जयसवाल, विराट कोहली, रोहित शर्मा, केएल राहुल (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रवींद्र जड़ेजा, नितीश कुमार रेड्डी, आयुष बडोनी, कुलदीप यादव, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा, मोहम्मद सिराज, हर्षित राणा।

न्यूजीलैंड : माइकल ब्रैसवेल (कप्तान), डेवोन कॉनवे (विकेटकीपर), मिशेल हे, निक केली, हेनरी निकोल्स, विल यंग, जोश क्लार्कसन, जैक फाउल्स, डैरिल मिशेल, ग्लेन फिलिप्स, आदित्य अशोक, क्रिस्टियन क्लार्क, काइल जैमीसन, जेडन लेनोक्स, माइकल रे।

अर्धशतकीय पारी के दौरान शॉट लगाते विदर्भ के बल्लेबाज यश राठौड़। एजेंसी

दिल्ली को हराकर विदर्भ सेमीफाइनल में

बेंगलुरु, एजेंसी

विजय हजारे ट्रॉफी

पिछले सत्र के उपविजेता विदर्भ ने अनुशासित और ऑलराउंड खेल का शानदार प्रदर्शन करते हुए दिल्ली को 76 रन से हराकर मंगलवार को यहां विजय हजारे एकदिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। विदर्भ सेमीफाइनल में कर्नाटक का सामना करेगा। पिछले सत्र में इन दोनों टीमों के बीच फाइनल खेला गया था।

सौराष्ट्र शुक्रवार को होने वाले एक अन्य सेमीफाइनल में पंजाब का सामना करेगा। विदर्भ ने पहले बल्लेबाजी करते हुए नौ विकेट पर 300 रन का चुनौती पूर्ण स्कोर बनाया। उसकी तरफ से यश राठौड़ ने 86 और सलामी बल्लेबाज अथर्व तायडे ने 62 रन का योगदान दिया। इसके जवाब में दिल्ली की टीम 45.1 ओवर में 224 रन पर आउट हो गई। उसे कप्तान ऋषभ पंत और उप कप्तान आयुष बडोनी की कमी खली। पंत चोटिल है जबकि बडोनी को न्यूजीलैंड के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज के लिए राष्ट्रीय टीम में शामिल किया गया है।

एमपी को मात देकर पंजाब अंतिम चार में

बेंगलुरु। अपने बल्लेबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर पंजाब ने मध्यप्रदेश को 183 रन से हराकर मंगलवार को विजय हजारे ट्रॉफी के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। पहले बल्लेबाजी के लिये भेजे जाने पर पंजाब ने कप्तान प्रभसिमरन सिंह के 86 गेंद में 88 रन, अनमोलप्रीत सिंह के 62 गेंद में 70, नेहाल वढेरा के 38 गेंद में 56 और हरनूर सिंह के 71 गेंद में 51 रन की मदद से छह विकेट पर 345 रन बनाए। रमनदीप सिंह ने 15 गेंद में 24 रन बनाए। मध्यप्रदेश के लिये त्रिपुरेश सिंह और कप्तान वेंकटेश अय्यर ने दो दो विकेट लिए। जवाब में मध्यप्रदेश की टीम 31.2 ओवर में 162 रन पर आउट हो गई। पहले गेंदबाजी का अय्यर का फैसला सफल नहीं रहा और पंजाब को शानदार शुरूआत देते हुए प्रभसिमरन और हरनूर ने पहले विकेट के लिये 21 ओवर में 166 रन जोड़े।

बीसीबी ने स्वीकार किया आईसीसी नहीं मान रही मांग

ढाका, एजेंसी

- टी20 विश्व कप में भारत ना आने के रुख पर बांग्लादेश अडिग

आईसीसी ने मंगलवार को बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड से टी20 विश्व कप के उसके मैच भारत से बाहर कराने की मांग पर पुनर्विचार का अनुरोध किया लेकिन बीसीसीबी ने सुरक्षा चिंताओं को दोहराते हुए ऐसा करने से इनकार किया है।

एक बयान में बीसीबी ने कहा कि बोर्ड का फैसला वही है हालांकि आईसीसी ने उसका अनुरोध मानने से इनकार कर दिया है। इसने कहा कि दोनों पक्ष संभावित हल तलाशना जारी रखेंगे। बीसीबी ने आईसीसी से अनुरोध किया था कि सुरक्षा कारणों से विश्व कप के उसके मैच भारत के बाहर कराये जायें लेकिन चूंकि सात फरवरी से शुरू हो रहे टी20 विश्व कप का कार्यक्रम तय हो चुका है , लिहाजा आईसीसी ने इस पर स्वीकृति नहीं दी है। बीसीबी ने कहा आईसीसी ने कहा है कि टूर्नामेंट का कार्यक्रम घोषित हो चुका है और बीसीबी से फैसले पर पुनर्विचार के लिये कहा है लेकिन बोर्ड का फैसला नहीं बदलेगा। दोनों पक्ष इसका हल तलाशना जारी रखने पर सहमत हो गए हैं। बयान में कहा गया बीसीबी अपने खिलाड़ियों, अधिकारियों और स्टाफ के हितों की रक्षा के लिये प्रतिबद्ध है और आईसीसी से इस मसले पर बातचीत भी जारी रखेगी। बीसीबी का कहना है कि उसके खिलाड़ियों का भारत जाना सुरक्षित नहीं है लेकिन आईसीसी की जोखिम आकलन रिपोर्ट में टीम को किसी तरह के खतरे की ओर इंगित नहीं किया गया है। आईसीसी के साथ बृहस्पतिवार को प्रेस कांफ्रेंस में बीसीबी की ओर से अध्यक्ष अमीनुल इस्लाम, सीईओ निजामुद्दीन चौधरी ने भाग लिया ।

गुजरात ने मुंबई को दी 193 रन की चुनौती

नवी मुंबई, एजेंसी

- फुलमाली ने मात्र 15 गेंदों पर नाबाद 36 रन बनाए

जॉर्जिया वेयरहम की नाबाद 43 रन की बेहतरीन पारी, भारती फुलमाली (नाबाद 36) और कनिका आहूजा (35) की बदौलत गुजरात जाएंट्स ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ महिला प्रीमियर लीग के मुकाबले में मंगलवार को 20 ओवर में पांच विकेट पर 192 रन का मजबूत स्कोर बना लिया।

वेयरहम ने 33 गेंदों पर नाबाद 43 रन में चार चौके और एक छक्का लगाया जबकि फुलमाली ने मात्र 15 गेंदों पर नाबाद 36 रन में तीन चौके और तीन छक्के लगाए। दोनों ने छठे विकेट की अविजित साझेदारी में मात्र 24 गेंदों में 56 रन ठोके।

आखिरी ओवर में 23 रन पड़े। फुलमाली ने अंतिम गेंद पर छक्का मारा। गुजरात जाएंट्स ने एक और बड़ा स्कोर बनाया। पहले दो मैचों में 200 से ज्यादा रन बनाने के बाद, जाएंट्स आज वैसी लय नहीं पकड़ पाई। उन्होंने जल्दी ही एक विकेट खो दिया जब सोफी डिवाइन ने इस्माइल की गेंद पर किनारा लगाया, जिससे शुरुआत थोड़ी धीमी हो गई।

बेथ मूनी (33)और कनिका आहूजा (35) ने 23 गेंदों में 42 रन की एक अच्छी पार्टनरशिप करके पारी को संभाला, लेकिन दोनों अपनी अच्छी शुरुआत को बड़े स्कोर में नहीं बदल पाईं। मुंबई इंडियंस ने बीच के ओवरों में समय पर विकेट लेकर मैच में वापसी की और मोमेंटम अपनी तरफ कर लिया, लेकिन फुलमाली और वेयरहम की पार्टनरशिप ने मोमेंटम फिर से गुजरात के पक्ष में कर दिया। आयुषी सोनी को रिटायर आउट करने का फैसला मास्टर स्ट्रोक साबित हुआ क्योंकि फुलमाली ने 15 गेंदों में 36 रन बनाए। कप्तान एश्ले गार्डनर ने 20 और सोनी ने 11 रनों का योगदान दिया।

शॉट खेलतीं गुजरात जायंट्स की कनिका आहूजा। एजेंसी

प्रिया-श्रुति कड़े मुकाबले में हारीं

इंडिया ओपन

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रिया कोंजेंगबाम (बाएं) और श्रुति मिश्रा। एजेंसी

त्रीसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की भारत की शीर्ष महिला युगल जोड़ी ने मंगलवार को यहां सीधे गेम में जीत के साथ इंडिया ओपन 2026 सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट के दूसरे दौर में प्रवेश किया, लेकिन प्रिया कोनजेंगबाम और श्रुति मिश्रा की जोड़ी को मैच प्वाइंट हासिल करने के बावजूद कड़े मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा।

नवंबर में सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय सुपर 300 टूर्नामेंट में खिताब का सफलतापूर्वक बचाव करने वाली त्रीसा और गायत्री की जोड़ी ने ओनिंचा जोंगसथापोनपार्न और सुकिता सुवाचाई की थाईलैंड की जोड़ी को 42 मिनट में 21-15, 21-11 से हराकर बाहर का रास्ता दिखाया। प्रिया और श्रुति को हालांकि लोक लोक लुइ और ह्यु येन सेंग की हांगकांग की जोड़ी के खिलाफ एक घंटे आठ मिनट चले मुकाबले में 11-21, 22-20, 22-24 से शिकस्त झेलनी पड़ी। प्रिया और श्रुति ने चार मैच प्वाइंट बचाने के बाद एक मैच प्वाइंट भी हासिल किया लेकिन अंततः भारतीय जोड़ी को हार का सामना करना पड़ा।

- त्रीसा और गायत्री ने दूसरे दौर में प्रवेश किया

त्रीसा और गायत्री ने पूरे मैच के दौरान दमदार खेल दिखाया। भारतीय जोड़ी ने नेट पर शानदार खेल दिखाने के अलावा स्मैश से भी काफी अंक जुटाए। थाईलैंड की जोड़ी ने दूसरे गेम में बेहतर शुरुआत की थी लेकिन त्रीसा और गायत्री वापसी करते हुए जीत दर्ज करने में सफल रहीं। गायत्री ने कहा कि पिछले साल के अंत में सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट का खिताब जीतकर उनका आत्मविश्वास बढ़ा है और 2026 में उनकी नजरें कुछ अच्छे नतीजे हासिल करने पर टिकी हैं। गायत्री ने कहा, ''पिछले साल चोटों ने थोड़ा परेशान किया लेकिन साल के अंत में हम सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट का खिताब जीतकर आत्मविश्वास हासिल करने में सफल रहे।

आयुष को हराकर लक्ष्य इंडिया ओपन के दूसरे दौर में

नई दिल्ली। स्टार खिलाड़ी लक्ष्य सेन ने मंगलवार को यहां हमवतन आयुष शेट्टी को सीधे गेम में हराकर योनेक्स सनराइज इंडिया ओपन 2026 सुपर 750 टूर्नामेंट के दूसरे दौर में जगह बनाई।

वर्ष 2022 के चैंपियन लक्ष्य ने आईजी स्टेडियम में खेले जा रहे इस 9,50,000 डॉलर इनामी टूर्नामेंट के पहले दौर में आयुष को सिर्फ 36 मिनट में 21-12, 21-15 से हराया। आयुष पहली बार इंडिया ओपन में खेल रहे थे। चौबीस साल के लक्ष्य अगले दौर में जापान के केंता निशिमोतो से भिड़ेंगे जिन्होंने 21-6, 7-5 के स्कोर पर अपने सातवें वरीय हमवतन प्रतिद्वंद्वी कोडाई नारोका के मुकाबले से हटने पर दूसरे दौर में प्रवेश किया। लक्ष्य ने बेहतर खेल दिखाया और परिस्थितियों से बेहतर ढंग से सामंजस्य बैठाने में सफल रहे। आयुष ने कुछ मौकों पर अच्छी टक्कर दी।

घोषणा भारत के खिलाफ घरेलू शृंखला के बाद फैसले पर करेंगी अमल

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेंगी एलिसा हीली

सिडनी, एजेंसी

ऑस्ट्रेलिया की सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेटरों में से एक एलिसा हीली मार्च में भारत के खिलाफ घरेलू शृंखला के बाद अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लेंगी।

यह 35 वर्षीय खिलाड़ी भारत के खिलाफ पर्थ में होने वाली तीन वनडे और एकमात्र महिला टेस्ट मैच की शृंखला में आखिरी बार ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी करेंगी। हीली भारत के खिलाफ टी20 शृंखला में नहीं खेलेंगी क्योंकि वह इस साल ब्रिटेन में होने वाले टी20 विश्व कप में हिस्सा नहीं लेगी।

महिला क्रिकेट की सबसे विस्फोटक बल्लेबाजों में से एक हीली ने बयान में कहा भारत के खिलाफ आगामी सीरीज ऑस्ट्रेलिया के लिए मेरी आखिरी सीरीज होगी। ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलने का मेरा जुनून अभी भी बरकरार है, लेकिन मेरे अंदर वह प्रतिस्पर्धात्मक भावना कुछ हद तक कम हो गई है जिसने मुझे शुरुआत से ही प्रेरित किया है, इसलिए यह संन्यास लेने का सही समय लगता है।

उन्होंने कहा यह जानते हुए कि मैं इस साल टी20 विश्व कप में नहीं खेल पाऊंगी और टीम के पास तैयारी के लिए सीमित समय है, मैं भारत के खिलाफ टी20 मैचों का हिस्सा नहीं रहूंगी। लेकिन मुझे घरेलू मैदान पर अपना करियर समाप्त करने और भारत के खिलाफ वनडे और टेस्ट टीम की कप्तानी का अवसर मिलने से बहुत खुशी है। यह हमारे लिए इस कैलेंडर वर्ष की सबसे बड़ी श्रृंखलाओं में से एक है। पिछले एक दशक में ऑस्ट्रेलिया के दबदबे में हीली ने अहम भूमिका निभाई है।

क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के सीईओ टॉड ग्रीनबर्ग ने हीली को खेल के सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में से एक बताया। उन्होंने कहा एलिसा इस खेल की सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में से एक हैं और उन्होंने अपने 15 साल के करियर में मैदान पर और मैदान के बाहर दोनों जगह महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम भारत के खिलाफ श्रृंखला में उनकी उपलब्धियों का जश्न मनाने के लिए उत्सुक हैं।

उनकी मौजूदगी में ऑस्ट्रेलिया ने जीते 8 विश्व कप

एलिसा हीली की मौजूदगी में ऑस्ट्रेलिया ने आठ विश्व खिताब जीते हैं, जिनमें से छह टी20 प्रारूप में और दो एक दिवसीय क्रिकेट में हैं। इस विकेटकीपर बल्लेबाज ने ऑस्ट्रेलिया के लिए 10 टेस्ट, 123 वनडे और 162 टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेले हैं। उन्होंने अब तक 30.56 के औसत से 489 टेस्ट रन, 35.98 के औसत से 3563 वनडे रन (सात शतक सहित) और 25.45 के औसत से 3054 टी20 अंतरराष्ट्रीय रन (एक शतक सहित) बनाए हैं। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क से शादी करने वाली इस क्रिकेटर ने कहा मुझे कुछ चोटों से भी जूझना पड़ा। मुझे कई बार डाइव लगानी पड़ी लेकिन अब मुझे लगता है कि हम मुश्किल होता जा रहा है।